

DPN 6636

Title : ~~गजनिचिकित्सा~~ पालाख्य / PĀLĀKHYA (गजनिचिकित्सा/Gajacikitsā)

Run. No. 7361

Cat. No.

Micro. No.

Subject Gajāyurveda

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 32 × 16.8

Folios 109 Lines (in a page) 13 irregular

Compl. / Incompl. ✓

Chapt. / act /

Author / translator Pālākhyā

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS 828

Ruler / place भूपतीन्द्र मल्ल

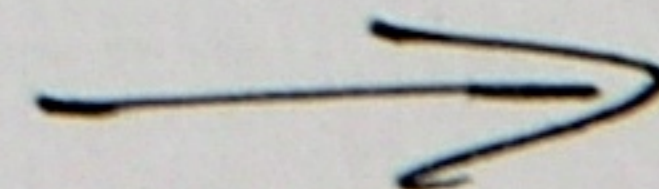
Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. : Together with Viśaya sūcī

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water / one side yellow

Beginning, colophon, post-colophon : इति श्रीपालाख्ये महामुनिप्रणीते गजायुर्वेदे
महाप्रवचने कुदरेशस्थाने द्वितीये गोत्रशेखरे नाम द्विसप्ततितमोऽध्यायः॥५२॥



सम्बत् ८२८ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा रेवती नक्षत्रे सैन्दवयोग एव कुतु
एव गजान्विकित्सा साफल्ये श्रीश्रीजय भूपतीन्द्रे ~~मल्ल~~ देवसन
महायत्नपूर्वकेन अलाया दरवारस्य छातकायाव चोस्कसे
विज्याङ्कव संपूर्णं याङ्गदिन ॥ शुभं भूयात् ॥ ॥

साखल
धलसकाय

श्रीमदुरवे

हाकयाउपवान
नकता
साधल
हामलवकी
उलिपू
थालनीयूव
मूलालपू
७०
धननक

पाय
तच्छाचून
कि ल रतिमना

हाकूवा
खिगुलि
इइ
धल
कथनिन
लिकाथनिन
वासिखलि
मूलालरुन
मूपामान

धनलप

किलिज्ञानकतालानकताव
यकवा
वाहाल
हास
तितियाकू
सानस
वाधवाहाल
कूखा
ततल
हा
खवलखून

खिवा
रुसि
नलवा
वृसा
मम
वानस
ठा
वला
थसखा
गुखा
कूखा
धनलानकव इइ

मसाला
दि
जीन
धन
पान
वि
पातक
यकनकूय

सानिकडाइइ
दाक
मान
धनलानकव इइ

15
मृत्तिकाकलत्रागयाविकित्सा पृष्ठ ८२
ग्रहनीलोगयाविकित्सा पृष्ठ ८१
श्रमत्रागयाविकित्सा पृष्ठ ८२
कमीकाष्ठयाविकित्सा पृष्ठ ८३
10
किणिकानकमजिसाकानकविकित्सा पृष्ठ १००
मदवायवयालकलकानाप्रकारन पृष्ठ १०१
वलवक्तुश्रुदिनजिताप्रकारन पृष्ठ १०१
वातश्रुदिनमदलकल पृष्ठ १०२
पताप्रकारनमदयाविकित्सा पृष्ठ १०३
5
कलत्रवालकिमिया पृष्ठ १०४
कलत्रागयाविकित्सा पृष्ठ १०५
श्रुतायकत्रागयाविकित्सा पृष्ठ १०५

नसाकपयातकानमनवयाविकित्सा पृष्ठ १०६
दालीकसाथयाविकित्सा पृष्ठ १०७
श्रुतिपातयाविकित्सा पृष्ठ १११
पित्तगुल्मयाविकित्सा पृष्ठ ११२
द्विदोगयाविकित्सा पृष्ठ ११४
गनीनसर्वगित्याकत्रागडत्यलिलकल पृष्ठ ११४
वातलकल पृष्ठ ११५
पित्तलकल पृष्ठ ११६
श्लेष्मलकल पृष्ठ ११७
सनिपातलकल पृष्ठ ११८
धनयाविकित्सा पृष्ठ १२०
श्रुगुडकषट्त्राग पृष्ठ १२१

सुधनागविकित्सा पृष्ठ १२२
 निधानाग पृष्ठ १२३
 विदुतनाग पृष्ठ १२३
 माढयाविकित्सा पृष्ठ १२४
 कयकूढ रुमयाविकित्सा पृष्ठ १२४
 नालस्यविकित्सा पृष्ठ १२५
 मथिनयाविकित्सा पृष्ठ १२५
 अदिकथाजायकायाविकित्सा पृष्ठ १२६
 कान्कसाथविकित्सा पृष्ठ १२६
 दौलविकित्सा पृष्ठ १२७
 विअनविकित्सा पृष्ठ १२७

वातनागयालपन
 हिंसा प्र१
 रूस्तिमिन
 लभरुजिन
 यवाकन
 दवदानू
 थलवाकन
 मालनीलजाकि
 सध
 तिमि
 प्रका
 रामल प्र१

हं२ सादूस पाकयाय
 हामलचर्क कू७
 घृत कू७
 उरुयादाक हं१
 वातनागयानक उ पवाल
 गुगुनकू१
 लोह हं२
 रूमून ता१०
 मूधर्मध ता१०
 गु० ता२०
 पिपिन ता१०

उदावर्तनागयाविकित्सा पृष्ठ ३३
वल्मीकनागयाविकित्सा पृष्ठ ३३
कामीनागयाविकित्सा पृष्ठ ३४
उन्नतगलागयाविकित्सा पृष्ठ ३४
लालितानागयाविकित्सा पृष्ठ ३५
पू दुतियानखनागयाविकित्सा पृष्ठ ३५
चर्मकीलनागयाविकित्सा पृष्ठ ३६
जवगन्धनागयाविकित्सा पृष्ठ ३६
वृद्धिनागयाविकित्सा पृष्ठ ३६
शूवसन्ननागयाविकित्सा ३७
ज० ननागयाविकित्सा पृष्ठ ३८
बालनागयाविकित्सा पृष्ठ ३९

वाक्कसुशकनानागयाविकित्सा पृष्ठ ११
मूयसंगमूयनागयाविकित्सा पृष्ठ १५
माकिमियासूतिकागयाविकित्सा पृष्ठ १३
दन्तनागयाविकित्सा पृष्ठ ८८
नूयनमच्छिदावविरुद्धिनेमदयाविकित्सा पृष्ठ ८१
गुलनागयाविकित्सा पृष्ठ ८२
कुलसात्रनागयाविकित्सा पृष्ठ ८३
कमसात्रनागयाविकित्सा पृष्ठ ८३
जवगन्धनागयाविकित्सा पृष्ठ ८४
गीतकन्दनागयाविकित्सा पृष्ठ ८४
मधूमदिकादसुनाग पृष्ठ ८५
कुविनागयाकादनागयाविकित्सा पृष्ठ ८६

किं सियाद्धवनवनयतासुधादिदयक पत्र ३१
किं सियादिश्रुदिकववयाउपचान पत्र ३२
घालसमियाउपचान पत्र ३३
कीलसुवयाव.शु.रु.क.म.न.व.भ.या.य.विधि पत्र ३४
किं सियातायद्धवियविधि पत्र ३५
ग.जा.घा.त.श.व.या.ग.ल.य.उ.द्ध.न.ल. पत्र १२
न.ता.य.का.न.या.वि.द.धि.उ.प.चा.न. पत्र १४
ग.नी.न.श्र.ग.नु.क.व.ल.न.ता. पत्र १५
ना.जी.व.ल. पत्र १६
न.का.का.य.सु.य.न.ग.या.वि.ल.भ.न. पत्र १७
श्रु.व.द.न.ग. पत्र १८

द.न.वा.ग.वि.कि.त्सा. पत्र १९
श्रु.विक.द.न.या.वि.कि.त्सा. पत्र २०
हि.श्रु.दिक.व.व.या.हि.क.र्य.वा.स.ल.वि.धि.प.२१
किं सियासमसुन पत्र २३
न.या.व.ग.नु.न.का.या.या.वि.ध.नि.व.रु.
श.व.या.उ.प.चा.न. पत्र २४
स.म.स.न.ग.श.व.या.सि.यि.व.म.यि.व.स.य.प.२५
स.ग.म.स.य.न.ता.स.म.स.ल.का.या.य.वि.धि.प.१००
लू.टा.वि.कि.त्सा. पत्र १०१
की.ट.वि.कि.त्सा. पत्र १०२
स.य.वि.कि.त्सा. पत्र १०२
ग.नी.न.स.द.का.श्र.ग.या.ना.म. पत्र १०५

द्यालत्यायनमुदयकविधि पृष्ठ १०८
 त्याकाथसुमिनपूतकविधि पृष्ठ १०८
 मूथद्वितीयखलुपृष्ठ १
 वातश्रुदिनवसनश्रवयाविकित्सा पृष्ठ ३
 मूतीसावनागयाविकित्सा पृष्ठ ७
 मशताकानमूर्च्छश्रवयाविकित्सा पृष्ठ ७
 द्यासद्याजा नयानथाषश्रयावगोदिनया
 उपचान पृष्ठ १
 मूमीतिश्रयावकिसियावन्धयायविधि पृष्ठ ८
 किसिगथाथसुखानममनवपनिसय पृष्ठ ८
 मरीठवन्धुनयायाविकित्सा पृष्ठ २
 विक्रसयउपाय पृष्ठ १०

दूखीविषलकलसय पृष्ठ ११
 विषनसियिवसय पृष्ठ ११
 विषयावंगलकलसय पृष्ठ १२
 २ विषयाविकित्सा पृष्ठ १४
 १ विषयास्वत्थायनविधि १२
 दिग्बविद्धविकित्सा पृष्ठ १७
 क्ववनजंगमविषयाषलकल पृष्ठ २३
 विसयविष्णुलकलविकित्सा पृष्ठ २७
 अपवादवद्ध पृष्ठ २७
 नकलाकाकिसिया कपालाकावनयाकिसिया
 वसक्तमडसंयीममडसंमनवचलश्रवया
 लकलश्रवसय पृष्ठ २१

पद्यार्क ४॥

मंगलाचरणप्र १

वृणविधान पद्य १

वृणयालकल पद्य २

आताविधिवृणयानाम पद्य ३

असाध्यवृण पद्य ४

वृणश्रयिवधय पद्य ५

वासल्यागलया ताप्रकाश पद्य ६

वासल्यागलगलयापतिनिसप्रथमश्रुधायता पद्य ११

सद्यकतवृण पद्य ११

लश्रुवृणश्रवया

अनुकायाववृणश्रवया

लकलविकिन्ताश्रुधायता पद्य १५

त्वकदूलद्यानगद मादर्या

धनसद्यनश्रवयावृणश्रुधायता पद्य १६

षट्त्रयगयाउपचान् असाध्यलकल पद्य १७

रुद्रादिनयतानातिया पद्य १८

द्यालश्रयिवलकल पद्य १८

मृगलिमउर्साद्यालउपद्रवश्रयिवलक

लग्ननिदव पद्य २०

पंचरुतगनीनलकल पद्य २१

पंचरुतउत्पादिकुषट्नसंपद्य २२

षट्नसयालागउत्पादिके पद्य २४

आयुर्वलसत्वसाध्य पद्य २५

पू

सत्त्वनिर्लुप्य पृष्ठ २१
गन्धवादि सत्त्व पृष्ठ २८
युक्तीति पृष्ठ २८
संधिमर्मा पृष्ठ २२
वयस्कृमस्वतान पृष्ठ ३१
दण्डस्वताप्रकाश पृष्ठ ३२
यताश्रुति पृष्ठ ३२
श्रुतिवान्नागयाग्नानि पृष्ठ ३४
जिनताडयवान पृष्ठ ३४
गन्त्रीनयावर्णयताजातिथा पृष्ठ ३५
निमेषादिनकाल पृष्ठ ३५
महत्तुआदिनतत्त्व पृष्ठ ३१

गर्वसुडत्यलितकल पृष्ठ ३८
गर्ह्यारुलतिनश्रुयूर्वल पृष्ठ ३२
माकिसियाअउशवयालकल पृष्ठ ४१
गर्हसदवयालकल पृष्ठ ४२
गर्हस नयागिन गन्त्रीनलकल पृष्ठ ४४
वनसंवाठपनिसननयायालकल पृष्ठ ४४
पोषसमाद्यसनयायालकलरुल पृष्ठ ४५
शिवश्रुनयायागन्त्रीनलकलजातिरुद पृष्ठ ४५
दण्डसुडत्यलितकलगन्त्रीनउत्यलिविक्र
लकल पृष्ठ ५५
गर्वसुश्रुडत्यलितकल पृष्ठ ५१
व्यानेलिगन्त्रीनवाधपूलकल पृष्ठ ५१

दूढावस्याकया
कल्क
लज्जित
कातगिन
लिकातगिन
वाल
धर्तकाथ
पंचमूल
हामलथकन
लपनयायता
नकचन्दन
काष्ठपद्म
पातक

सधू
कुलाकलक
सजिखाल
यवखाल
धलनवालावलपन
नडयानकवासल
विलिसपू
दिरुला
मनव
पिपल
७०
ककिसवालवलचिन

किनियाकद्विया
मूलालहल
सधूवि
हामल
प्रिठता
धतसमरागपाय
कद्वियाचकन
ग्रीखलु
मृगन
मन्याध
सावपासाक
पिर्यगु

वलखूनधल
कालानुसारी
नागयूष्य
हवल
तावीसहल
नकनान
लाधहल
याचनख
रुद्धदानू
याला
हवति
मिलिसि

पून लूवा
कूट
पुपुलीक
नसी इन
नू छिमिल
कसि मू ४
सथ मू १
हामय के कू २

किनियाद्यालयाधक
मू न क पात हल मू १
धवनवा मू १

निक्कल मू १
म ग की या हा मू १
हामय के कू १

नरालनदवद्यालयावासन
तिलिय
ल्लथ
दवदान सिकिव
सिमसिया किव
सोमवल्क
खयन
काखलाखसदायकावपाय
नरालनदवद्यालया

तायूववलयालफ मू १
उहलयालफ
वाल
कूटनट् उकाणि
कनवीनयाहल
वलागतखाला
इवसिखाला
पलासिखाला
आपखाला
वलसिखाला
हामल मू १
हाकूवा
सोधनसल मू १००

धनलि कसकू
हायाव सिव
भासतयावधो
नपाय
अलागखाला
वलसिखाला
परासिखाला
इवसिखाला
आपखाला
खोहनाखसनियाव
सिव भासतयावपाय

एका ॐ१
वाक् ॐ२
धल ॐ१
हमलथर्क ॐ१
सादूदू ॐ२
धनपाकयाय
अनूपानमर्थनवदूतव

कार्कवानताविधि
कलाज
नीप
अशिनहा
पादली
गिनोव

थाल
वकसखला
हमल
धननियावपालदयक
कपीयकनवूयक
दूदू
थकननतादायक

कयकूठयावासल
अकालेखान्याहता ४
अनालय
वालचित
पलमास
दिकरुल

कतिवनता ४
थकन
रुयादाक
किसियाद्यालयाथर्क
विलिसिपू
चितक
किल्व
मिताकिस
काचहनजि
वि
७०
एमसूय
समरोग

कपातकवासल
एका
नीप
धल
कस्ति
माठयापाय
अलालय
नालय
अय
एका
पावूयकन
वतकहा

मलाठ
धवदाव
तकनाज
तवमहा
दाति
ममसुसुनिय

धलखून
कूचल्याभा
ॐस्मिन्
पाखानरुद
भूशिन
गुचल्या

मूग्धगध
हाकुभा
कीनकाकावि
धतवच
खयल
लाहा
ॐजव
गेजि
मन्याथ
काचरुनति
मितकिस
लागभा
धलरु
नाखरु

वाक्काक्कनया
वलसि
पखिहा
नलहा
मठकसून
मन्याथ
कगलहा
वर्तगतखला
धतनिय
थालसदू
थालससल
थालसोदाक

नगलसवाथाया
काचरुनति
मन्याथ
ॐस्मिन्
कगलहा
धवदाव
यवाकन
मद्य
धतनकता
किमियावाक्काक्कीपीज
नडयावासल
पिपिन
पिपलामूल

सिपि
धतकहा
सु
विलिसपू
भूतिनहा
दगमूल
गुगुन
निंव
भूतस
लाहाव
पिखला
धतचुपुयाठ
नियावर्तखस
तयावनक

श्रीगणेशायनमः॥

श्रीगणेशायनमः॥

किसिवाडत्यहिभूदिनप्रभ

द्यालयाउद्वेग

द्यालयासातायकावथानि

द्यालयाउत्पलिलकलप्रभ१

द्यालयाभूत्यादिरुद

द्यालयाथानियाद्युष्टलकलसुता

द्यालयाकुदनादिथतायकाव

द्यालयाथतायकावकिन्न

द्यालयानिविद्धादिथतायकाव

द्यालयाभूद्यद्युष्टलकल

द्यालयाभूद्यद्युष्टलकलप्रभ२

द्यालयाकिपिहावथिवनतायकावभुददूक

भुददूकलियालयानियथतायकाव

नियथतायकावद्यालसुनकादि किभूदिनपिहाववनातायकाव

द्यालयासुनरीठमरिंविद्याव

द्यालयामरिंसुनयाविद्याव

द्यालयासाध्यभूसाध्यदू४साध्यसातायकावलकलप्रभ३

द्यालयाउपद्वलकलकातायकाव

द्यालयावभुलकल

द्यालयागन्धलकल

द्यालयाग्रावलकल

किसियासामयाकनानजायलपूद्याल

किसियावासलयायमसवर्वेययाकनानजायलपूद्याल

मसवक्कामाहाउतयाकनानजायलपूद्याल प्रभ४

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
 धर्मसातायकावद्यालया लभधनादिप्रकाशउपाय
 सातायकावद्याययाभ्रायसीभ्रादिनसातालक्षण
 धालयादातायकावद्यालक्षण
 लभधनयकयासूक्तुदिद्वयलक्ष
 लयाउलिधालसथनद्वयनिरूपण
 पक्षमश्वधालपक्षयायनीयस्वतायकावद्याय
 धालयाभ्रवस्तयायथार्ग्ययागयाय ययज
 नानाप्रकाशधालयाद्युतादिभधनद्वय ययउ
 वायुलभधनयाविकाननधालयास्तन
 धालयावधनउपाय
 वधनद्वययानिर्णय
 धालयासिद्धिलक्षण पयन

धालयाउषधीप्रयाग
 धालहानकयाउपायनतायकाव
 धाललभधनयाय पयउ
 दूधधालयालभधनयाय
 वातधालयालभधन
 पिलदूधधालयालभधन
 लभधनदूधधालयालभधन
 सामान्यधालयालभधनवृत्त
 धालयालखनसातायकाव
 वललखनद्वय
 क्षमिनालउपाय
 धालयावीलकयाविधि
 धालवीलकयाउषधी पय२

१०२

कुक्यालनाक्याताविधि
नीतद्यालशवयाक्काकवानडपाय
विषनजोयलपूद्यालयाकल्क
नीतनशवद्यालयाओषधी
द्याललानक्याधूप
द्यलयावर्ला
द्यालसनापनयायकल्क
द्यालयात्रापनयापाक
किनादिदूखवगयाद्युतपाकतैलपाक
दूखवगयात्रापनवृष्ट पृष्ठ 10
द्यालयात्रापनवसक्रिया
हविद्यादिपाकओषधीद्यालया

द्यालयाउनदयक्याओषधी
धर्मद्यालयाभूषायप्रथम 8॥
भूधद्वितीयभूषाय 8।
भूगवाजननगायकात्रद्यालयानिदानचिकित्साकना
मूनिनसयकतद्यालयाखाकाना
सयद्यालयानतायकात्रस्वरूप
भूगंठवर्णलकल
भनीवस्तुवर्णलकल
संयमसंनम्रादिनकवद्यालयालकलकातायकात्र
संयमसंप्रवृत्तवर्णनजायघूद्यालयालकल
किनियाभूगरुदनद्यालशवयालकल पृष्ठ 11
भम्वनजायलपूद्यालयाभूवपातादिरुंद
द्यालभम्वजायलपूनिघृष्टदिलकल

कि गिया का समना कवयाल कल

का कथकन घुल मली सीथ मूग मल का गल मि पूकल कल

क क मिन पूकया घालयाल कल कला

कंठु लि सश क का क पूकयाल कल

ला सदि क मिन पूक घालया विकानल कल

कंठु लि लावा वा व दिन लि दित का व मिन पूकल कल

कंठु लि लावाल का व मन पूकया विवाल

मर्म क न स मिन पूकया विवा न

नाव का गल पूकया विवा न

का का न्दया दिथूत का वल सलाह न कवया विवा न

कि सिया का समना कवया विवा न **पृ १२**

ला स काय क वल न लाल न कवता पन क न वया व घालया विवा न मी न पूकया घाल स पाय वा सल

पवित्र म क न पूया व घाल दय विवा न

वीया का मन कया व क न वया व न क दा व घाल

कि सिया का स विवा य स दि कया विवा न

धत स श कतया विवा न

स श कत घालया डीषधी

स श कतया घुत न ला दि डीषधी विवा न ११०

स श कत घालया लभ धना दि कल क डीषधी

सिंह द्या धन ल सिन कय पूडा वान का क डीषधी

घाल सयया विधि मू न दय क विवा न **पृ १३**

सूया लु लि घाल स पाय वा सल

धलचकनमलीसीधचाकथूलिंपूकयावासल
नशालिंदिकमनीकेवयावासल
खसिपवतसपूखलिसलाखेदिकद्यालयावासल
नलिंपूकावदवठलियालयावासल
वीयायसनदिकयावासल
सयद्यालयाहानकयावासल
तायूववळुद्यालयाउपाय
चाकलाकावळुहानगकद्यालयाउपाय
सयद्यालसंरंतालीपूकयाविधि
रंतालीपूकाद्यालसपायवासल पक्ष १४
धर्तसयद्यालयालकलविकिसानभूषाय॥
पूतचादिसयकतद्यालयाविणषनठना

सयकतद्यालयाविणषक्रिया
सयकतद्यालयाचन्दनादिकल्क
गमुनद्यालयाय
हयाद्यालसपायवासल
वकापिरुनजायलपूद्यालयाकल्क
न्याकद्यालवाद्यालपूकद्यालधर्तयालय
ममस्सनद्यालयाउपाय पक्ष १५
ममस्सनयासंधिसजायलपूद्यालयावासल
किर्तिंकिर्तिनदार्तसयाद्यालयावासल
संयमसखद्गादिगमुनपालाद्यालयावासल
धर्तद्यालयाकिल्क
धउलियालयाभूतिकर्म

ध्यालयाद्युत्तमपवित्रि
दूतानकयावित्रि
रुक्मिणिदद्यालसदूतानकवित्रि
धर्तसद्यकतद्यालयाविकेसावित्रि **अध्याय ३॥**
पूनर्वादिगससुहिनलीसकससदिकद्यालयाठना
भूगवाजमृनिनकाना
सलसुहिनलिसकससदीकद्यालयानताप्रकान **पद्य १॥**
मसडा माहाउतमसनलहियानदवद्याललकण
हिनलियाकयालकण
भूमकदयात्रकायकापशवलकण
संधिकदायादाषलकण
भूकस्मात्त्रकाप्रवयालकण

त्रकवृद्धिशवयालकण
त्रकदीगशवयालकण
त्रकवृद्धिशयावहिविकायलकण
द्यालयायथमसंभुलिप्रमाणलकण
संधिथामसंभुकमयायविकानमतव **पद्य २॥**
भूमनकतयाठनाकाकिसिनकवासल १११
धर्तहिनलि०० **अध्याय ४॥**
पूनर्वादिदद्यादिपताजाताकिसियाद्यालया
लकणठना॥
मृनिनरुद्धमदमृगमिणपताजातकिसि
याद्यालयांरुदकाना॥
धपताजातकिसियाग्रीष्मकालसलासदा
वतापनकायानवल्लखताठाननयायावि

यायाविकाननवायुप्रकापश्याव
किसियागनीनसद्योतशवयालकल
वप्रकिलसपिरुप्रकापशवयालकल
गनत्कानसतापनकायावपिरुप्रकापश्यावदाषशव **पय ७**
लिगिनकालस **पय ८** प्रकापश्यावदाषशयलकल
(**पय ९**) नजायलयद्यालयालकल
धनं विदाषनशवद्यालश्रकात्रविणषलकल
जिसमुतायकान
कुंउलिसदिकविदाषद्यालयानतालकल * * *
मर्मस्तुनदिकविदाषद्यालयायतायकानलकल
मर्मसंधिसजायलयद्यालयानतालकल
नयायादाषनकालदाषनपक्कमयक्कमधपक्कद्याललकल

बातपिरु **पय १०** श्यावकृतार्तिशवसंनियानलेकल
नक **पय ११** श्याविकाननवलशवयालकल
विदाषन **पय १२** श्यावद्यालशवयालकल
कनयावगनवलुदिनयाविवान **पय १३**
विदाषयाद्युगादिलप
विदाषकनपूवयाव **पय १४** विणष
विदाषद्यालयाडोषध्यादिउपायक्रिया
धनविदाषद्यालयालकल **पय १५** विदित्तानुध्याय ॥
यूनवदिश्रृंगनाजानयालकाखायाकठना
किनियावैद्यगर्थिकामालधकमूर्निकाना
वैद्यलकलनिष्ठुय ॥
पृथिव्यादिपयकृतनिष्ठुय ॥

बृथिद्यादिपंचरुतयागुलानिर्लुप्य **पृथ**
 किं निनषट्वसनयाव दिला दाक वीर्ज वाधयश्व
 वातपिरुल्लभयाप्रकापशक्यादिनविचान
 कठविधिरुतयानियागुलविचान
 स्मववर्जगमयाविचान
 डीषधिलकल
 वनस्यतिलकल
 वानस्यलकल
 गुखियालकल
 किं नियागवीवसवसडत्यहि श्वयालकल
 किं नियागवीवसयागदिपंचवायूनवसडत्यहि
 प्रागदिपंचवायूयाधान

प्रागदिपंचवायूवसनवागडत्यहि श्वया **पृथ**
 प्रागदिपंचवायूप्रकापनवागविचान
 ल्लभयकापनवागशुद
 पिरुप्रकापनवागशुद
 वायूप्रकापनवागशुद
 सनिपातनवागशुद
 वातपिरुल्लभयाभ्रिस्मन
 मधूनादिषडसनिवृपन
 षडसयाभ्रिस्मन
 वसयायताप्रकावभ्रान
 वसयाविपाकनताप्रकाव
 वातपिरुल्लभयास्वराव

११२

वातपिरुल्लभयावसनवसनकादिवृद्धि **पृष्ठ २२**
 वृथिव्यादिपंचमहाह्वगमध्वनादिषडसयाभूषिस्तन
 षडसयाविलेखलनागविलेख
 षडसयाभूहानवसनदाषयाहानिवृद्धिविचान
 नसयावसनवातपिरुल्लभयावकायउपाय **पृष्ठ २३**
 धर्ममध्वनादिषडसयाविचान
 नसयावसननागलभनियाउपाय
 वातपिरुल्लभयास्तन
 भूमयास्तनविलेख
 विदाषयाविकिसालकल
 किलियावैद्यवानवदकदूतलकल **पृष्ठ २४**
 किलियाभूयुदयिघनीअयायताभूगप्रत्यक्षविचान

किसियाभूयुदयिचिद्र
 किसियादग्गविद्र
 किसियावलविचान
 किसियागमनविचान
 किसियादूवदग्गमनसवलविचान
 किसियाउरुममध्वमभूधमविचानवलया
 किसिनकीलनूह्यादिनमर्दनयास्कवलविचान
 किसियानवधकचूर्कधकवलविचान **पृष्ठ २५**
 किसिनशानवयकयागविचान
 किसियास्वशावेनजायलपूर्वल
 भूहाननजायलपूर्वल
 किसियाभूहानयताप्रकाश
 किसियागनीनयूषिद्रस्तप्रकाश

किनियासामान्यवलसुता
किनियावलावलसायावकियायायविचार
किनियाद्वलपतायकाव
किनियावगपनीका
किनियासुतायकावसुत
सुतायकावसुतयाकर्म पृष्ठ २४
किनियाद्वगध्वदिसुत
किनियाद्वगध्वदियाकिन्नापनिसन
माकिनिश्यावदिनजपनिसासंयागनकिमिक्क
किनियात्राकसादिसुतविचार
सूदजानिकिसियाविचार
वाक्कजानिकिसियालकण
कदिकानिकिसियालकण

वेन्धजानिकिसियालकण
वाक्कजानिकिसियाकर्मसुत
कदिकानिकिसियाकर्मसुत
वेन्धजानिकिसियाकर्मसुत
सूदजानिकिसियाकर्मसुत
धयताजानिकिसियाश्राहनादिकर्मसुत ११३
धयताजानिकिसियासात्म्यलकणनतायकाव पृष्ठ २५
प्रकृतिसात्म्यलकण
नागसात्म्यलकण
नससात्म्यलकण
किनियाप्रकृतिलकणविधायकाव
किनियासाधुश्रुसाधुदुक्साधुप्रत्याख्य
धयतायकाववाधियालकण

किंजियासु कृष्णदिनवीनयाविराग पक्ष २८
किंजियागवीनसमूह्यननसकसोपकार
ऊठलिक्तसवाकदयूव
मांसपसीकगल
हिनलिदागल
सायदोथाल
असनियदाल
उयषदालविमिलसाधाल
कागयाआकृतिनीयस्वगल
किंसियासाहलनवीनसलकलसगलव्यख
किंसियामममगलजिमकाअकसा
हासववनसादिअपियख

साहलकस्यासुनपगल
थलिअंगप्रेहअनसयकेशवक्रातवप्रिकशयि
धतअंगलदार्णहीनक्रावूकधकशयिव
किंसियागवीनसमगलनियायताअग्निगंधया
कालविचार
वसनादिषूठलिमठयाविचार
धखूठलिमठयास्वताप्रकाररुद
धखूठलिमठसवलावलविचार पक्ष २९
खूठलिमठसवातापिकलक्ष्मयाप्रकायविचार
खूठलिमठसविदाभयाहानिद्विदिविचार
किंसियावालद्विजीवनादिअवसु
स्वताप्रकारव्यसयावलचललकल
वयक्रमयावर्षलकल

व्यक्रमयावद्विनिष्पद्य ३०

किसियाथोवनवयक्रम

किसियादृष्टवयक्रम ४।

किसिउत्पत्तिशिवयाउलिवनयानिर्णय
जंगलवनयालकल

यू भूतपनामवनयालकल पद्य ३१

वनविनिष्पत्तिगडयनशिवयालकल

साधनवनयालकल

किसियाअतिलकलयतायकान

तीक्ष्णअतिलकल

मन्दअतिलकल

समअतिलकल

विषमअतिलकल

किसियावलतयअलकलयतायकान

किसियाग्रीनसथादश्रुतियायतायकान

समपाचकश्रुति

मन्दपाचकश्रुति

विषमपाचकश्रुति

तीक्ष्णपाचकश्रुति पद्य ३२

११४

धनयतायकानवलतसायावषदासकिसिचय

किसियाद्याधिनतायकान

श्रुतिवाचनगाययूद्याधि

दाधनगाययूद्याधि

धनयकानद्याधिगानिनिमिहिन

किसियादवतायावलिपूजाहोमादिविया

माहाडतयालकल

किसिवेशयालकल

धनरुक्मि वैशालकलादि विकित्सा मूल्या ५॥
 पुनर्वदि मृगना जानकना वृथिव्यादि किसिया उत्पत्ति पद्य ३३
 मूनिन काना कृपा कि सिया उत्पत्ति निमि लिन काल निरूपन
 कथूसि सान काल न दृष्टि लक्षण
 निमखलक्षण
 काष्ठालक्षण
 कलालक्षण
 मूकलक्षण
 मृगना पलक्षण
 मास लक्षण
 पक्ष लक्षण
 मृगन लक्षण
 वर्ष लक्षण

सत्यादियुगलक्षण
 चतुर्दश गन्धया काल
 वक्रायादि नवादि
 मूक कानादि सुष्ठि
 वृथिव्यादि पंचमाहात्म्य सुष्ठि
 पंचनन माजा सुष्ठि
 चतुर्विध रत्न ग्राम सुष्ठि पद्य ३४
 धान्यादि चतुर्दश व्रीहिसुष्ठि

पद्य सुष्ठि
 उमजायल पृक्त सजात पद्य
 दल सजायल पृक्त सजात पद्याणि
 प्राणीदकास मनस्व (प्रष्ठ)
 पद्यदकास कि नि (प्रष्ठ)
 मनस्व या नि (प्रष्ठ)
 किसिया नि (प्रष्ठ)
 नवीनयालक्षण
 पंचविंशति गत्व
 गर्भसदयिवयालक्षण
 गर्भयाषट्कास सत्कन
 गर्भस्य लिलक्षण
 मृगपूषन पूसक विद्यान

गर्ह्यापनिपाक
 गर्हसर्गजायलप्याकालनिर्णय
 गत्रीप्रयागर्गरुदनेदवता
 हृत्तुल पय ३३
 श्रमायातुल
 हृदियाधनिद्रुपण
 मधूनादिबस्यहण
 गत्रीप्रसवागपिल (श्रमया विचार
 सात्विक राजस तामस स्वताजागयालि
 सात्विक स्वराव
 राजसया स्वराव
 तामसया स्वराव
 प्राणादि पंचवायू

प्राणादि पंचवायूयातुलकर्म
 वायूयादवता स्वतुपनिद्रुपण
 गत्रीप्रसमठयास्मन
 गत्रीप्रयागर्गिवादिसफनिर्णयधु
 रुधिनादिसफधुयास्मन
 गर्ह्यायूधिनिमिलिनमधूनादिषट्पनस
 गहृष्मानलकण
 माकिसियागरुलकण पय ३३
 माकिसियाभुलकण
 माकिसिवाकिसिडा, सयागया विकान
 गर्हिनी शवक्रामाकिसियाधु
 वाकिसि, माकिसि, नपूसककि सि शयिवया विचार
 माकिसियागरुस, वानक्रादयिवया विचार

११५

माकिसियागर्ह्युसि शयिवयाविचान
 किसियागर्ह्युसि शयिवयाविचान
 किसियाधूसिवावत श्रृंगहीन श्रृधिकश्रृंग
 विकानयानिर्लुय
 किसिवावयिवयावछ
 धनमाकि सियागर्हलकल श्रृध्याय ॥
 पूनचदिपालकाखामनियाक श्रृंगवाजानठना ॥
 वि० ननयताजातकि सियाडत्यहिग (धधक) ॥
 रुद्रादिधताजातकि सियावि० प्रडत्यह्यादिप्रन ॥
 मूनिन वाजाकाना ॥
 माकियाकामयछ
 माकिसि अउमती शयिवलकल
 अउमतीयावछलकल

पत्र ३१

पत्र ३८

अउमतीयाराव
 अउस्ववृपलकल
 अउकाललकल
 गर्ह्युवगलकल पत्र ३२
 गर्ह्युनिधययायलकल
 गर्ह्युजागलकल
 गर्ह्युलीलकल
 गर्ह्युयामासकालादिनिर्लुय
 गर्ह्युधनलकल
 गर्ह्युधादूकविलकल
 गर्ह्युपनिनामलकल
 गर्ह्युपूछिमासादिलकल पत्र ४०
 गर्ह्युवृद्धिनिर्लुय

15
जिमनलादयानं किमिवाव्यमरूया
गर्भित्यलिलकल

किनियागनीनयाअंगदवगा पृष्ठ ४१

किनियापिहसम्बन्धमाहसम्बन्धशुल

किनियागनीनस्वरूप

जीवस्वरूपलकल

किनिवाक्यिवयावस्था

वाकिनिव्यिवलकल

माकिनिव्यिवलकल

वाकिनिमाकिनियासंज्ञागवलसंज्ञाहान

वायूयावगननानाप्रकाशगर्भलकल

वर्षकालसगर्भलीयावायूप्रकाशनदाप्रशक्यालकल पृष्ठ ४२

ग्रीष्मडावर्षडाश्रुतवसपिरुहानिश्रयाववायूवृद्धिदाप्र

गवत्कालसग्रीष्मकालसपिरुयान्धिकविचान

किनियासत्वाकावलकल

किनियागनीनयालकल

वनसत्वाककिनियाविजललकल

वनसत्वाककिनियासत्त्वलकल

वनसत्वाककिनियावस्था

मृगजातिगजयालकल पृष्ठ ४३ ११३

वलमदकिनियावलदयक

किनियावलावलसायावडीमध्यादिकर्म

किनियाकर्मविचान

हमन्तमाससकिनिलहियविचान

हमन्तमाससमाकियागर्हसदवयाविचान

हमन्तकालसवृज्जाकाकिसियालकल पृष्ठ ४४

मन्दजाति कि सियालकल
 मन्दजाति कि सियासलकल
 लक्ष्मप्रकृति कि सियालकल
 वसन्तकालसूत्रका कि सियालकल
 रुद्रजाति कि सियालकल
 रुद्रजाति कि सियालकलसल यत् ४७
 रुद्रजाति कि सियालहियतालकल
 सैकीर्णजाति कि सियालकल यत् ४७
 सैकीर्णजाति कि सियाविणलकल
 सैकीर्णजाति कि सियासलकल
 सैकीर्णजाति सियाजिमयातारुद
 सैकीर्ण कि सियामनान्नसलरुद

सैकीर्णजातियादि विद्रुपनमृतायकावरुद
 विद्रुपसैकीर्णजातियालकल यत् ४७
 धनकाश्रपमषियामनससैकीर्ण कि सियाजिमयातारुद
 गेनमयामनसमृगदिष्टताजात कि सि
 नाजपूयामनसमृगदिष्टतारुद
 रुसिवात्रीयामनस जिममृतारुद
 धयताजाति कि सियाखदामसठाकानयादनदाषनिर्णु
 षदास कि सिययमसठाकानयकायादाष य
 गुनवधनलकल
 नूत्यायनवधलकल
 नूतिवधवधलकल
 किनिसमस्यापिलादिनहाकवर्णुहियलकल यत् ४७
 वायुडाक्षमडाथल्लिगलपानहाकवर्णु

15
किमिवाचूवर्षुशयिवलकल
किमियालसिहाकूवर्षुशयिवलकल
किमियालसिगायूवर्षुशयिवलकल
हकूथाकूशययाविद्यान
काठवर्षुथाकूशययाविद्यान
10 पद्मपद्मथगायूथाकूशययाविद्यान
थाकूयावर्षुनेमेथाकूयाविद्यान
किनियासियूवर्षुमिखाशयिवलकल
यानमिखाशयिवलकल
वाचूमिखाशयिवलकल
5 काकयाथमिखाशयिवलकल
कयातवर्षुमिखायाविद्यान
विषमाकविद्याकयाविद्यान

कानशयावववकाकिनियालकल
विकटजानियालकल
अदिसादयिवकाकिनियालकल
किनियागनीनरुर्किवलतिववयाविद्यान ४२
हीनाशयालकल
रयंकनशयावजायपूकिनियालकल
दागनसयूकशयाववयिवयालकल
आदूदानशयीवलकल १११
सियूदानशयीवलकल
मानदनशयिवलकल
मोगजानिकिसियालकल
मकूनाकिसियालकल
एकदनाकिसियालकल

समदत्त कि सियाल कल
नय दानदले क पूहायावववल कल
दान थ शकायायाल कल
मान गरी व शडायाल कल
नानाल सदा मरुयाल कल
अवल स मरु मशयिवल कल
त्रुत्याय दीघाय शयिवल कल **पृष्ठ ३०**
लहिसा वसन कि सि रि म रि शयिवल कल
वलवन कि नियाल कल
साविक जात कि सियाल कल
कि निया सर्वदा अनाथ शयिवल कल
अरुलि कि सियाल कल
कामली कि सियाल कल

वदिवन कि सियाल कल
कि सियानि सग मृषव द्यादिल कल स्वता
यदति वसन कि सियारुका दियता
दूवदि कि सियाल कल
धन पता जात कि सियागर्ह डत्याहि वलुन दादि
कि सिया यद। वल मधवल दूवल
साविकी न्यादि न स्वता प्रकार यदति
कि सिया काल वसन मेथना दिव दान व्याधि डत्याहि
कि सिया व्याधि वसन च गना दि विद्यान
कि सिया गरी प्रयासारा विक्रय
गरी वडी क्या ग्रय न स्व रूप **पृष्ठ ३१**
वरावता दि कि सिया कल सजाय लयू कि सि

गजनाभकिसियालक्षण
कि सियानीवजयमश्रुविलक्षण
गलपातकासाककिसियालक्षण
सलक्षणदवधूलकाकिसिया
नाजायारुल

पू धनंयताजातकिसियाउत्पलि नृणां यत् ॥
पूनर्वादनाननठनाकिसियाप्रपादियुमान ॥ यत् ॥ २
किसियाजीवनादियुग्नठना
भूनिशामात्मकसंसावलक्षण
वनाचनेयाकठविषमृष्टि
सुवनर्जंगमादिनिर्गुण
किगियाभेधूनविद्यान
गर्कसात्मालक्षण

गर्कवृद्धिलक्षण
गर्कयुष्टियाकावण
गर्कसमर्वागपविधूवश्रुव
किगियाजन्म
किसिवसनलियुष्टश्रुवकावण
किसियाविलादववलसम्प्रादानवसनदाषडत्यलि
वातपिरादिवृद्धि यत् ॥ ३
नकादिधाउवृद्धि
वातपिरादिवृद्धि
समधाउयागुल
विगमधाउयादाव
माहर्गुणकिसिया
पिरुर्गुणकिसिया

15
10
5
ब्रह्मसंधि निर्लुप्य
वायापविमान
दन्तसंधिब्रह्मदण
चवणस्मनयासंधि
सर्वज्ञन ब्रह्मसंधि निर्लुप्य
नखनिर्लुप्य
किगियागवीनसपंचदणक्किद
भामादिलकण
किगियासर्वज्ञनसागलडानीयष्कास
सागलडाभूयखसंधि
कणलुनाठीदयिव
मम्मरुद पत्रज४

कम
गलदिआसकाकनगतमम्मरुद
दाषस्मनलकण
भामस्मन
रक्षस्मन
पिरुस्मन
वातस्मन
यागादियंयवायूयास्मन
यागादियंयवायूयाकम
मांसयणीलकण
मांसयणीयासंख्या
किगियागवीनसदवतानिर्लुप्य पत्रज५
भामागययामध्यसवाधिलकण
मलमूययाहानिष्टदि

कि गियासाताप्रकृति
 गत्रनीयाप्रसात्रादिकर्म
 गमनविचार
 कि गिदाकावधानिवलकल
 कि गिरुकडकावधानिवलकल
 कि गिरुयाववनिवलकल
 कि गियासाधसानकिवलकल
 वाकालगयिवलकल
 साधननयवसुकायिवलकल
 कथसानकिवयालकल
 नसानयिवयालकल
 धूनयासकासहालिवयालकल
 कपालसानकिवयाविचार

लखगानिवलकल
 साधनलखयिष्ठायिवलकल
 मिशानसायिवतिसियिवलकल
 नाडवयाविचार
 मिखायासंधि
 मदनाठीविचार
 कसथातसानकिवविचार प्रज
 निष्ठासविचार
 कि गिरुनिव
 क्रियातसानकिव
 मधूनादिकामधु
 मलमृगनालतिडाविचार
 वायवहनारी

पिरुवहनारी
 धूमवहनारी
 सर्वज्ञनकि गियाग्रीनसजि
 मकुगलडाकयडा
 माकि गियाविषयनाठी
 दीनवहनारी
 धननारीविचार ११२
 कि मियासर्वज्ञन
 साहलयाविचार प्रज
 संधियानाम
 संधिस्तनसवातपिरुकरु
 नथियानवाधिशयिव
 संधिसयालशयिवविचार

सद्यपालहृन्मर्म
कालान्नसंयपालहृन्मर्म
संयुक्तुकिगियागवीनसलावृणसागलख्यकिडा पव १८
धर्मसिपनीयाप्रमान
माकियामांसपनीयालकल
विविधमसिपनी
किगियागवीनसपवदलकिड
किगियागवीनससकप्रकावकुवि
शामसंख्या
गवीनलकल
गवीनपुष्टि
नूधिनदिपनस्यनडस्यलि
मलमूगनालनीवलकल

गवीनवध पव १२
मदयासगधिलकल
मदहायिवस्तुनकस
मदहास्यवयिवलकल
किगियानामजिमकाता
गजप्रसंसा
धनकिगियागवीनयाडत्यलिलकलमदि
निर्भुयत्रथाय २॥
पालकाख्यमूनिनगमादिकार्यनाजाकाना
गमेादिकर्मयायताकिगियथथास
श्रुतिकर्मयाययाताश्रुतिस्तुपन
गमुकर्मयाययातागमु
गमुकर्मयाययातान्यायायगनमीसक्य

गन्धकर्मयादानदिववक्ष्यवाप्ततच्छुद्धिदि
 गन्धादिकर्मयातिथिनक्षत्रादि
 गन्धाधिवासन
 दाषगन्धार्थक्षाम
 किं सिस्त्रानयास्क **यत् ७०**
 किं सियार्गसगन्धपातनयाय
 दाषविक्र
 किं सियाग्रीवसगन्धपातनयायस्त्रन
 गन्धवैश्यालकल
 हिपिकाययाविवात्र
 रुदनयाग्न्यालयाविवात्र
 घालयाउगदाषविवात्र

घालदयकयातामूलतयमाध
 वरुत्रेमादिघालदयकयाविवात्र
 घालवययताडीमधादि
 मर्मसयलपातनविवात्र
 यिरुनदूखशवनकलकल
 श्लेष्मानदूखशवनकलकल
 वायूवनदूखशवनकलकल
 सनिपानदूखशवनकलकल
 सदाषनूधिनलकल
 रुदनकलकल
 यिकायनवयुलिनकलकल
 यिकायमनवयुलिनकलकल

१२०

15
 10
 5
 श्रुतिप्रकाशद्विधाउपाय
 प्रकाशद्विदशनावनकमतवकसुयाविद्यान
 श्रुत्मातुप्रकाशवशवयाविद्यान
 प्रकाशवयोडोषप्रदिउपाय
 श्रुतिकर्मयाय
 मिनयूकथासद्युतादिलप
 श्रुतिकर्मयायमतवकायाविद्यान पय३१
 श्रुतिकर्मयायमतवकायाश्रुतिकर्मनदाप्रविद्यान
 मम्मसिधिसनाठीसभनयूकयाविद्यान
 किनियानवीनसश्रुतिकर्मनालनस्कन
 किनियानवीनसश्रुत्यलकल
 धर्तनश्रुदिकर्मविधि

श्रुतवलादिकर्मविधि
 साहानं ह्यादिसुखादयालसमतयमतव
 मतवस्कनसभनयूकानदाप्रलकल
 मिनयूकयाश्रुदालयालकल
 श्रुतिकर्मयायल
 दालयावधवर्तलकल
 दूद्वलकल
 श्रुतनश्रुतिनदाश्रुतनावदाप्रलकल
 मिनयूकयालसखयउपाय
 धर्तकिनियाश्रुतियाकर्मश्रुत्याय१०॥
 पुनर्वादिश्रुतनाजानमूनियाकठनाकि सिया
 वयो नगिरवतं ह्यादिनयाकानदाप्र
 दयिवधयाउपाय॥ पय३२

मूनिनकाना
किनियाप्रतिकर्मविधि
मन्त्रस्तयाक्काकिनियादाष
किनिथययाप्रकानजिमस्तता
नकलादाक्काकिनिथययाउपाय
किनियाप्रतिकर्मयाययास्तन
किनिथयवलसकिनिचवलरुथिवउपाय
पदवधनविचार पन ३३
वधनसदाषविचार
यन्तनकिनिथययाविचार
यन्तवधनमरिदस्तननिर्णय
किसिकीलदयक सियाविचार
यन्तदयक सियानिर्णय

किनिकिलयन्तदयकयातातिथिनक्षत्रादिनिर्णय
किलदनतासिमाथायूजा
वृक्षाधिवासनकर्म
यवयूजादिस्रसिवाचनविधि
गालवृक्षयायूजाविधि
खयलसियायूजाविधि
सिमायतावलिदानविधि
सिमातलसथाकाववेदनयालयमन्त्र
मूथसिकलमीनसिमादन
सिमादनयातादिगविचार
सिमागालडलवलसगदयाविचार
नाकददासिमातयथाय
यन्तकीलशतकविचार पन ३४

१२१

यन्त्रयाकीलयालकलयमान
प्रयादगवन्धनयन्त्रनययाविधि
प्रकाशान्नयताप्रकाशवर्ध
यन्त्रसथयाकाकिगियाप्रनिकर्मविधि
धर्मउरुमयन्त्रविधि
मध्यमयन्त्रविधि
कनिष्ठयन्त्रविधि
यन्त्रसूपनविधि
कीलसूपनविधि
यन्त्रकीलयास्नानादिपूजाविधि
वलिदानविधि यन्त्र ३३
अष्टपदयन्त्रपूजा
सनत्कुमानादियन्त्रदवगापूजा

वेद्यनयन्त्रयानमस्कात्रयदक्षिण
वेद्यनयन्त्रकर्मयाथ
धर्मकिमिच्छययातायन्त्रकीलविधि **श्रुत्याय ११॥**
यन्त्रवादिर्गनाजनमूनियकदेनो
संयममसनानाप्रकाशमस्कात्रनशवद्यालयालकलयविक्लिप
मूनितकाना
गल्यसूपनलकल
वाक्कगल्यलकल
दानूलगल्यलकल
गल्यल्यवगललकल यन्त्र ३३
मर्मस्केनरुदनगल्ययादाप्र
प्रकाशान्नयनगल्यवगललकल
स्नानाकननगल्यवगललकल

15
गणल्यवलायाउपाय

गल्यविक्रयाय

गल्यविक्रययायमरुत्ताविक्रययायउपाय

ऊउलिजायलपूगल्यवलायाउपाय

लासदिकगल्यसियउपाय

यू नागीसजायलपूगल्यसियउपाय यणउण

नलीजालसवाकगल्यसिययाउपाय

साहानसवाकगल्यसियताउपाय।

कोससवाकगल्यसिययाउपाय

घालकपशवयाउपाय

छिदस्तनसवाकघालखयमतव

छिदस्तनसवाकघालखय

कस्तनसवाकगल्यसियउपाय

काकगल्ययाउपाय

काकघालपिकाय

गल्यघालसद्युतादिलप

नखगल्ययाज्ञान

किनियाकासखययन्त्रगद्ययाज्ञान

किनियाकासमर्मस्तननिद्रूपन यणउण

मर्मसविद्ययालक्षण

विद्यताठितघालयायन्त्र

यन्त्रयाजानिआकान

यन्त्रनहिपिकाय

घालसद्यलनखय

122

मूर्ध्ववृद्धाकृतिवर्त्तकवयाउपाय
 वनाहकर्षुधयाउलिवर्त्तकवयाउपाय
 सामान्यवर्त्तकवयाउपाय
 नानाप्रकारगर्भकवयाविद्यान
 महामर्मसंगर्भकवयाउपाय पद ३२
 आसनादिस्नानसंगर्भनकवयायाधिशयिव
 गन्धनकयावताकेन्याकद्यालयाउपाय
 छिन्नादिद्यालसंशयवासलचूर्ण
 कडाद्यालयाचिक
 वृणलधनउपचार
 वृणलधनडोषध
 वृणसंगर्भादिकर्म पद १०

वृणयाधतिकर्मविधि
 वृणसमन्वयथाग
 प्रथागयायउलिमन्त्र
 गल्याद्याललानकताकि सिलाखसंशयक
 लाखनथकायावकि सिनकवस्तु
 धर्मकिगियागल्याद्यावल्गदिउपाय नृध्याय १२॥
 पुनवदिमूनिनर्गवाजाकाना
 विदधिलागयालकल
 नताप्रकारविदधिलाग
 विदधिलकल
 समूक्तनरुदनकाताप्रकारविदधि
 विदधियाउत्पल

वातविदधिलक्ष्ण
 धिरुन विदधियायु विचार
 धिरु विदधिलक्ष्ण
 (श्रमयाकनानजायल्यु विदधिलक्ष्ण
 (श्रमविदधिलक्ष्ण **पृ ११**
 सनियान विदधिलक्ष्ण
 विदधियासाध्यासाध्याविणवसिययताकिनियाका
 सक्तनविचार
 क्तनविणवन विदधिननानावागउत्पलियायुविचार
 विदधियाचिकित्सा
 विदधियासामान्यचिकित्सा
 वातविदधियाचिकित्सा

धिरुविदधियाचिकित्सा **पृ १२**
 कीलनययाताउपाय
 (श्रमविदधियाचिकित्सा
 सनियानविदधियात्रसाध्यानिमिहिनचिकि
 त्सासूमात
 अर्गउविदधियाचिकित्सा **१२३**
 अत्यन्तविदधियाचिकित्सा
 अत्यन्तविदधियाकराविचिक्रनहिपिकाय
 विदधिनोगसुकि सिलहिययाउपचार
 धनविदधिनोगयालक्ष्णचिकित्सा **पृ १३**
 पुनचिद्वर्गनाजानमूनियाकटना **पृ १३**
 किसियागनीनसनानाप्रकाशननीवणदय
 धयालक्ष्णचिकित्सागएधक

मूनिनकाना
किणिग्यानाठीवणनताप्रकार
नानीननाठीवणयालकल
आगनुनाठीवणयालकल
वातपिरादिविणषनाठीवण
वातनाठीवणयालकल
पिरुनाठीवणयालकल
लक्ष्मनाठीवणयालकल
संनिपातनाठीवणयालकल
नाठीवणयारुहु
नाठीवणयासाध्मासाध्विविवात्र
प्रकाररुदननाठीवणयासाध्मासाध्विविवात्र पत्र १४

निर्दमिबुलयालकल
नाठीसडत्यलिइववणसमूक्तनयाविकिसा
किणिग्यागनीनसवातपिरुकरुसन्निपातअलि
घातनयप्रकारननाठी
धनाठीपनिसलकल
कुरुसाध्मनाठीलेकलकनरुदन
तलयरुवलकाटमलुलाकात्रअधामूरुउर्ध्वमूरु
नाठीयालकल
धनाठीपनिससाध्मासाध्विविवात्र
नाठीविकिसा
नाठीयागस्त्रादिकालकर्म
नाठीयाद्यालसगयवुलुयालकल
नाठीद्यालयाडोषधुडिका पत्र १५

नाठीवललयन
 नाठीवललमषलडोषधी
 नाठीवललमधनडोषधी
 नाठीदूखवललमधनडोषधी
 नाठीदूखवललयनडोषधी
 प्रकारानुवृत्तिनाठीवललमधनडोषधी
 नाठीवललनापनडोषधी
 नाठीवललयागायनायनडोषधी
 साधुनाठीवललयाविकित्ता
 नाठीवललयाक्रियिकायवपाय
 क्रियिकायाद्यालसख्यकल्क
 नाठीलमधनादिनकायादिकाथ

नाठीवलयाग्नौखिन्यादिनेल
 पत्रिपक्कनाठील्लभधनजीर्वत्यादिवह
 नाठीवलयापनाथनेल
 नाठीवलयाअग्निकर्म
 अग्निकर्मनिमिलिनशीवष्टकादिडोषधीगुटिका यवत
 मिनपूतकागुलियादग्धविकित्सा
 श्वतनाठीवलयाग्नौखिन्यादिनेल
 अथवानाठीवलयाग्नौखिन्यादिनेल
 वलयादाषरूक्कनिमिलिनडोषधविधि
 यवतगनादिगुटिका
 अजतगनादिगुटिका
 अथनाठीवलयादावकर्मडोषध
 रुसमदयकडपाय

रुसपाक
नूनि युजायाकावपाककाकाय
द्यालसरुसमनखयविधि
वाधियोवलडीषधीयावलसायावडोषधीदिय
वासलनश्रुत्यनदग्धरुलसोवगसवनविधियाय
वगलयनविधि पपन
कीनादिवगलयन
श्रुतिमदादिनेल
नयप्रधादिकाथनेल
यकात्रानवननयप्रधादिकाथ
काथपानयास्त्रविधि
नाठीवगमुद्यथलीगलकादिनेल
नूगलसजायलपूनाठीवगभक्तियायनिमिहिननेलपाननेलायन

नाठीवगयावासलयाकावलसकिनिनकवसु
धतनाठीवगयालकलविकिसाश्रुधाय १४॥
पूनवदिश्रुनराजानमूनियककना
किसियागनीननाठीग(१५)उत्पलिरुलधक पपन
मूनिनवातादिनाठीकाना
नाठीउत्पलिरुलकल
किनियागनीनसकललनाठी
वातपिलवहादिनाठीउत्पलिरु
नाठीयायानि
अधियाश्रुदनधउत्पलिरुय
वाधिरादियायानिनिर्लुय पपन
किनियागनीनसमसादिवलुनिर्लुय

किनियानकादिपिकायतामणप्रमाण
 द्विपिकायथायकि सियाविधान
 द्विपिकायमतेवकि सियाविधान
 नकनपयप्रकाशकि सियागत्रीनवधाययाय पद ८०
 किनियानत्रीनसत्रागवि (अ) स द्विपिकायविधि
 वीनदालनावकिनियानत्रीनसद्विपिकायविधि
 नकाविश्रवणदियदहादि
 नकरुक्कनिमिहिनकिनिठायकप्रमाण
 गमुादिकेमाकिप्रतिकर्म
 किनियानत्रीनसस्मननिर्णय
 किनियानत्रीनसस्मनरुदनिर्णय
 नाठीयाविशगलक ८१

नकनियावपिकायताविधि
 किनियानत्रीनसयनवधनविधि
 नाठीपत्रीका
 नाठीवधकिया
 नाठीवधविकित्ता
 नाठीवधसकिनिलहियउपवात्र १२३
 किनियानत्रीनसकवियाप्रमाण
 किनियानत्रीनसद्यालयाकिपियउपाय पद ८२
 वधयासुद्धासुद्धविधान
 निनायासमूहनिर्णय
 निनावधउपाय पद ८३
 किनियानत्रीनसनिनायीनप्रमाण

पू

पादनागसगिनावधयकार
जिनादाष
सिनाप्रक्तिनिर्गुय
किनियागनीनसदहसधि
श्रुत्तियमाल
धनहिपिकाययाविधि
हिपिकाययाद्यालसिलउपाय
धननाठीवलयानिनावृहनादिविधि
पूनवदिश्रमनाजानमूनियाकठना
किनियागनीनसश्रुवदनागग
मूनिनश्रुवदनागयालकलकाना
षनायकोनश्रुवदनागयाउत्पहि

श्रुवदनागयालकल
गानीनश्रुवदनाग
श्रुगनुश्रुवदनाग
धयासाध्यासोध्विविवान
श्रुवदनागयाविकित्सा
दन्त्यादिघटलप
उदद्युतमदन
धनश्रुवदनागयालकलविकित्सा
पूनवदिनाजानकठनादातस
मूनिनकाना
दातसकिदयूदातहायूवलकल
दक्तपतनलकल

15
दन्तनक्रिहायूवलकल

धयाउपाय

दन्तसिलउपाय

दन्तलभधनउपाय

10
ओषध्नादिपाक

काधनदन्तसिलउपाय यण८३

दन्तवतनवापननेल

पठालादिपाक

सूवहादिकल्क

5
मैकृष्टादिबुलु

काकाल्यादिनेल

गणकादिमांसनसपाकन

दन्तपतनवागसुकिमिनकयाउपचान

नेलादिपान

धनदन्तवलकलविकित्साग्रध्याय१॥

पूनवदिर्गनाजानकना दन्तदाष

दन्तदाषशुवकाकिमियाविकानलकल

धयाविकित्सा

यण८१

१२३

काकलखनदोतसिलथलकस्मिनहाय

षठ्ठुवासलयापानयास्क

गतधीनद्युगनदन्तसवन

धनदन्तदाषयालकलविकित्साग्रध्याय१८॥

पूनवदिहर्ननाजानकना नाठीकिन्नरिनया

नाठीकिन्नरिनशुवया

मूनिनकाना
 मसुवेयनमसिसगन्धकर्मयादानकिन्नरिनश्यिव
 रुक्मिनदिवदया
 थयासाध्यासाध्याविद्यान
 गिवासखाक्रान्त
 उपनिवादात्तु
 मश्यालद्वनगिनानिर्णय **पन८८**
 अतिनकट्टिइलनावनागश्यिव
 नककययाचिन्न
 नाठीयात्तनमसिदिववक्त्रियवासल
 मधुकादिचूर्ण
 समूहल्लादिचूर्ण

नकदाप्रलानकनिमिलिनमृगमृगलसकिस्त्रिणयक
 नकविकाल्याद्यालससवनयायतामृष्टकुदिकाथ
 अथवाअग्निमर्मयाय **पन८९**
 धलनसंयुक्तदीनपान
 मर्मगतनिवाविकित्सा
 सूत्रात्तानक
 मसुदीनवेयनउपाययादानदाप्रश्यिव
 धनगिनाकुदनविकित्सात्तदलमृष्टाय१२॥
 पुनर्वादिमृगनाजनपालकाख्यायाकठना
 किगियामर्मस्तानमसिसनाठीपनीकायायमजिवधक
 नाठीपनीअयायनिमिलिनमर्मस्तनकाना
 मर्मसंख्यात्तत्तुवक्रस
 मृगरुदनमर्मयामृष्टलादिप्रमान **पन९०**

15
द्यालश्यान कि नि सियु म मया विवा न सूर्य पिदव

कु विरुद नदा वरु शिव ल कल

काला न वया ल व म म नी य क स

वेठ व क न म म पिय खूता पय २१

ध लि म म सिया व कि गिया व वेथ न वि कि सा था य

ध न म म धिया य म य २० ॥

पू न व दि अंग रा जान ठ ना विष रा गया वि कि सा ग थ ध क

मू नि न विष रा गया ल कल काना

शो मा नू नी क विष या ल कल

वि वा या विष ल कल

शो म विष स ना य का व

ग र्त्त व नी मा कि नि न द्या मा न या द्या क क ल था दि स प्य

वृ थि क न व मा म वि वा या मा स न यि व ध या क न वू व क कि नि विष न दि व र श यि व

ध क्का कि नि वा या वि का व ल कल

स विष नि वि वा ल कल

अ व क्का दि विष ल कल

वा क्का दि लू मि ल कल

लू मि या र्ग ध क्कु प नी का पय २२

लू मि का लू मि

थे लि की लू मि

वा ति का लू मि

स की लू मि

लू मि वि ला ग न वि कि सा

विष य का प रु ठ

विष व ग ल कल

१२१

विषयासाध्यासाध्यविचार
विषयाधूपादिविकित्सा
तगनादिनसपान
खिर्चाकाकविषद्यालयाविकित्सा
खिर्चाकाकपिष्ट्यादिपिष्ट
शूद्रकादिपिष्ट
कृष्णादिपिष्ट
हनिगालादिलय
दीनादिपान
खिर्चाकाककिणिनकयाउपचार
शूद्रनीकसवाढकिवायाविचार
धर्मविषयागयालकलविकित्सा

विकित्साधूपाय २१॥ पत्र २३
पूनवदिर्भगनाजनकिसियाविरागनर्भगसमर्मविराग
कना मूनिनगरीनयाविरागनर्भगकाना
साहालयासमर्मविराग
समर्मयानाम
गरीनयाउर्द्धरागसमर्मयास्तनविचार पत्र २४
सद्यपालहनमर्म
धर्मपालहनमर्मयाविराग
किनियासर्वास्तमर्मपत्रीका
समर्मरागसगमुकर्मयायमतव
पकशलसागमुकर्मयायविधि
बलकदनयकात्र पत्र २५

15
वृक्षाकावकुदनयाभूतलप्रमान

बलवध

बलविश्रवन

बलगीवन

गुलसीवन

सूचीप्रमान

संगमसंगसुकनद्यालयासीवन

सीवनयायमनवद्यालयाविचार

बलसमूहश्चिदि

सीवनादियाथूवेद्ययाघनीका

थनममबलयासीवनादिविधिविकित्मानुध्याय२२॥

पूनवदिबूगनाजानठनायदसनानाप्रकारंजायल

यूयाविकित्सा॥

मूनिनकानासंयमसनानाप्रकारंद्यालशक्याउपाय

मर्मस्तानसंगसुकनद्यालयासुद यत् २३

सद्ययालरुनसुकनवला

कालाननयालरुनसुकनवला

गसुकनवद्याउपदव

गल्यमर्म

गल्यवलासमियुमाययाविचार

वेगुलकनममसूयधि

समूहनिगतकिउकसउमर्म

मर्मगुल

मर्मगदमूर्ध

यकानानवलाषद्युकावमर्म यत् २१

१२८

15
 10
 5
 गिनादिमर्मसद्यालश्लनावमथानकिगिसिथ
 धयानिमिदिनेगिनादिसकनयायमनव
 मर्मयासिद्धिभूसिद्धिविवोत्र
 न्वयथनागसगम्नादिकर्ममनव
 गमुकर्मधनकावद्युतादिसवनउपाय
 गमुकर्मनजायलपूद्यालयविद्यादिशुद
 गमुप्रयागसकगलकावेद्ययालकल
 वेद्यनकिगियाववावलपनीकायाय
 धनगम्नादियालयालकलविकित्तामर्मयाभूषायरश
 पूनर्वादिभूगवाजानमूनियाकठना
 किसियानीनसमिनपूकद्यालयालकलविकित्ता
 मानिनकानाभूनिदग्धद्यालनतायेकान यय२८

दाहयाथानिनियकातायकान
 भूनिदग्धयाविकित्ता
 दाहगान्वर्थनसूखादकनहाय
 मधूयभूदिलय
 भूयत्कादिलय
 लाधादिकल्क
 जठामास्यादिनेल
 पद्मादियुलु
 द्युतादिलोपनलयन
 धनभूनिदग्धद्यालयाविकित्तालकलभूषाय
 पूनर्वादिभूगवाजानमूनियाकठना २८
 विमिलसावकयाकनानजायलपूद्याल
 यानामलगाधोयथयालकलविकित्तागथ

मूनिनकाना लूनालकल
मृगशदनलूनायानामनीयद्वि पञ्च २२
लूनायाविणमननागलकल
लूनायावर्तु
लूनायाविकित्सा
हृदिदादिउटिका
प्रयोलुनीकादिलय
लूनायाद्यालमानययायमन्त्र
धमन्त्रयादवनायाध्यानमन्त्र
धनलूनायाविकित्तालकल मूल्याय २५॥
पूनर्वादिमृगवाजानमूनियाकठना
किनियागनीनमविषकीटादिगणधनधक

मूनिनकाना
विषकीटयालकल
किनियागनीनमविषकीटादिजायलचिवलकल
विषकीटयाविकित्सा
विषकीटनजायलपूद्यालसकीलनयावहिविकाय
पिकायाउलहीससूदासूदविवात्र
गीतलजलसक १२२
खदिनादिलय पञ्च १००
पविषक
गतलोतद्युतनमूल्यान
मूकानादिक्वाथ
धनविषकीटद्यालयालकलविकित्सा मूल्याय २७

15
पूनर्वादिभृंगराजानमूनियाकठना
वीनकाकयालकलविकित्सागथधक
मूनिनवीनकाकयालकलकाना
किगियागनीनसवीनकाकयालकल
वीनकाकयालनदियिकाय
वीनकाकयालयाविकित्सा
नक्षिआदिनयानयास्क
धनवीनकाकयालकलविकित्साग्रध्याय२॥
मूनिनकिगियागनीनसभृंगपर्यगयाविवात्रकाना
भृंगयाप्रदगनामभृंगुलादियमान यग१०१
मुखप्रदगसूयनस
दकप्रदगदग

मुखप्रयप्रदगसूयस
नगप्रदगसूयनस यग१०२
सफविगतिगिप्रधप्रदग
कर्णप्रदगसूय
ग्रीवाप्रदगनीयस
हृदयप्रदगकस
उदयप्रदगनव यग१०३
आसनननिसगप्रप्रदगगुयम
गनीनसधसपीयसप्रदग यग१०४
गलकननिसप्रदगकयपि
मधप्रदगसनीकि
पूकप्रदगकस
हस्तादिपचदगभृंगयामंपूर्णप्रदगयामखा४३२

धन किनियायदन्मध्याय २८॥
 धनवदितानाजानकनाकिनियागनीनम
 कंदनादिगन्धकर्मयायगान्धुलकलगधधक
 मूनिनकानागन्धुयानिर्भुय
 निष्किदगन्धुयाविचार
 उरुमगन्धुयाविचार यय १०३
 दगविधगन्धुयाविचार
 गन्धुयाविचारगन्धु ४०॥
 सिद्धदंष्ट्रादिपषणीगन्धुस्वगा
 न्यायागन्धुनीयक्ति॥
 धनगन्धुमख्थमलागनावनानागदयू
 खवथमगन्धुकर्मयाय
 गन्धुयाक्रिया॥

धनगन्धुयादिनिर्भुय
 मूथदकनिर्भुय
 बुद्धिदिदक
 दकयादिद
 मूकमूखादिदकविकल्प
 दकयाउपक्रम यय १०३
 दकयासूयादिकर्म
 दकउत्पत्तिनिर्भुय
 वानिकदक
 नकात्यनदक
 दकयाप्रमान
 मकूनदाष
 एकदकादिनविचार

१००
 १३०

श्रीगणेशाय नमः॥
 मूथद्वयगयास्तु नदितीययायनाक॥
 मूथवमथूनागध्याय
 मूगवाजानपालकाख्यमनियकठना॥
 मूनिनवमथूनागयाउत्पलिकाना
 वमथूनागनतायकान
 वातिकवमथूनालकलविकित्ता
 पेलिकवमथूनालकलविकित्ता
 श्रमिकवमथूनालकलविकित्ता पग
 सन्निपातवमथूनाविवात्र
 आगनुदात्र
 वृथिकादिशकलनवमथूनागशयिव

सयविषकीटादिशकलजायलयवमथ
 वमथूनागसकिनियामृशयिवविवात्र
 वमथूनागयासाध्यासाध्वविवात्र
 वमथूनागयाविकित्ता
 डीमधोदिकुलु
 मूथयलय
 सविषवमथूनागश्रम
 गत्यादियिगु
 पठाल्यादियुष
 गतिवादिकवल
 तनूलादिकवल
 निन्दकादिकवल
 रूक्षदलादिकवल

हनिडादिकवल
 सीधूयान
 जिखितिलिनादिमांसवस **पृ२**
 वमथूनागसकिजिनक उपचात्र
 धर्मवमथूनागयालकल विकित्सा **ब्रूयाया॥**
 प अथश्रुतीसानवागयाविकित्सा
 श्रुतीसानवागननाप्रकात्र
 श्रुतीसानवागयाउत्पलिलकल
 दाषाश्रुवमृलिकाश्रुवश्रुतीसानवाश्रुसाध्यविद्यात्र
 वानिकश्रुतीसानवालकलविद्यात्र
 नकातिसानवालकल
 दाषानिसानलकल

मृलिकारुदकलजायलपूश्रुतीसानलकल
 अश्रुगमनाश्रुवश्रुतीसानलकल
 श्रुमानिसानलकल
 समसुश्रुतीसानवाश्रुवसुखता
 श्रुतीसानवागयापुष्पापुष्पश्रुदिनविद्यात्र
 श्रुतीसानवाविक्रवातादिन
 श्रुतीसानवागीयासुख
 श्रुतीसानवाविकित्सा
 जलपानविधि
 वातादिश्रुतीसानवापृथक्पृथक्विकित्सा **पृ३**
 जलसकादि
 दूर्वादिकवल

१२८

15
धियंकादिकवल
पिष्टाद्यादिकवल
रवादिकवल
निन्दुकाद्युल्लु
10
श्रुतीसात्रागसकि सिनकडपचान
श्राटकाश्रुतिकनसम्वर्त्तन
अधलादिकषाय
धर्मश्रुसाध्यादिश्रुतीसात्रयासामान्यलक्षणविकित्सा
श्रुतसमस्तश्रुतीसात्रयाष्टथकेनदाषसमूहानलक्षणविकित्सा
5
श्रुतिविषादिपिण्ड
पिण्डानि सात्रयालक्षणविकित्सा
वलुकादिनस्पान

मृगदिमांसराजन
नकातिसात्रयाधिक
कृगदूष्मादिपान
गत्यादनादिनकडपचान यगध
श्रुथकलातिसात्रलक्षणविकित्सा
विकटकादिक्वाथ
दधिल्लदिश्रुतीनापचान
रथादिगमदिश्रुतीसात्रयासामान्यनविकित्सा
धर्मश्रुतीसात्रयागयालक्षणविकित्साग्रन्थाय २
पूनवादिश्रुगवाजानयालकाखयकठमा
किसिनदूसनयानमूकगथशलाधक

दूषमदनकनयाननकपिरुवायुप्रकापशय
 मूकदिविकान
 मदनजन्मयालुकल
 ध्याविकित्सा
 लमयादिप्रदह
 प दध्मादिनिबूह
 काष्ठनिवृपिन
 वदनादिपिलु
 आमानकादिकवल पञ्ज
 हिंमुमाहुलंगमदिपिलु
 पियालादिपिलु
 खज्ञादिपिलु

स्वस्त्यलकल
 मदिनातानकविधि
 नृगवनादियनियान
 कीनवृकयाकषायराजन
 गलमांसयावसुवात्र
 स्वस्त्यलकलसनकडपचात्र
 लावतिलिवादिमांसवस
 दातिमरुलनसयाश्च
 गलत्यादनादिराजन
 असवपानयास्क
 धर्तदूषमदनादिप्रदहलकलविकित्साग्रन्थाय३॥
 पुनवृदनाजानमूनियकठनाकिनियाहललममीनाममा

१२२

१

मृत्तिनकानहलण्मषीनामनागयाउत्पलिलकलपय ३
हलण्मषीनागशलनावकिनियायच्छविकान
हलण्मषीनागयाहृदधयाविकित्सा
स्निग्धमधूनादिउपवान
पिष्ट्यादिकवल
गुलीयकादिकवल
लम्भानकादिक्वाथपान
गुलीयकादिक्वाथ
तालीसपयादिपाचितलम्भमूत्रपान
गुलीयकादिप्रलप
मुखलम्भधनार्थकठजादिपुष्ट
प्रकादिशजनापेवान

लम्भ्यादनादिराजन
सापदवलण्मषीशलनावब्रूसाध
धनहलण्मषीनागयालकलविकित्साब्रूयाय४॥
ग्रथकमर्मातिनीतनामनागयाविकित्सा
कमर्मातिनीतनामनागयाउत्पलि
कमर्मातिनीतनागकवकाकिनियायच्छविकान
धकाकिसियासर्वकर्मनिषध
धयाविकित्सा
यथकालननदीतीरादिसकि सिद्धायक
पल्लवानपूखलिसहायक यय
वृक्षादिनपुष्टवनसजययन
श्रद्धदानविधि
सूत्रापानयास्क

15
षष्ठिकानादिरुजन

दूष्मादिपान

धर्तकमातिनीतनामनागयाविकित्सा **ब्रूयात्** ॥

पूनर्वादिर्गुणानामनियकथना

सुषादियाविषनञानद्यासयागलाखरूत्यादिनया

ननादानजायलपूर्विषदाप्रयाविकित्सा

मृनिनकाना।

मसियाक्तामनूखाकायरूत्यादिकिनिगलसक्तयमतव॥

गुहनपनिसननानाप्रकावनदूष्जनपनिसनरुक्ताया

दिविषप्रयागयायविवात्र

विषप्रयागयायूक्तामनूखायालकल

धसद्वैयपनिसनविवात्रयाय

किनियाग्रनपानादिस्तनगजगालारूत्यादि
गुफयाकावतय

विषनागशूलनावपनीश्चायायउपाय

माज्जनवायसादियातावलिबियावविषया

पनीश्चायाय॥

काकादिपनीश्चा **पञ्च**

माज्जादिपनीश्चा

नूनिगानदपनीश्चा

धूमगन्धादिपनीश्चा

धर्तग्रनिगतविषपनीश्चा

मूथजलगतविषपनीश्चा

जलसक्तयायापनीश्चा

१३०

जलशुद्ध्या विनिष्पन्नपत्रीश्च
अकनसदूदसविषपत्रीश्च
आसवसविषपत्रीश्च
जलपानसविषपत्रीश्च
द्यासपानसविषपत्रीश्च
सर्पयाविषपत्रीश्च
विषसहृदादिलक्षण
विषार्कशिवकाकिनियाविक्र
अथविषदाषनानिनीविकित्सा
कपित्थादिबुल्लप
अथविषयाद्यालसलयातवासल

विल्वादिशृगद
वत्सनाद्यादियाग
अविषसविषादियाग
नानाविषदूह्यामत्रिवादिपृथक्थाग यत्र २
ओषधयामात्रायमान
शृंगशदनविषदाषपत्रीश्च
कोष्ठगतविषरूतकनिमिरिनदधिघृतयकणमयनक
श्रीश्वरीकिंशुकादिनसपान
विषार्ककिनियासाध्यासाध्यालक्षणविकित्सा
विषार्कयाविक्रादिविकान
मृषिश्चविक्र
जिह्वासमृशलसासाध्यासिय

विषाह्याः श्रमादिविकार
विषाह्याविकित्ता
मधुर्गमदिवृष्ट
कूटनतादिवासयलय
श्रमाकादिनसपान
तगनादिपिण्ड
तिन्दूकादिपान
पलासवीजादिपानपिण्ड
नस्यकर्म **पृष्ठ १०**
हविदादिकवल
हविष्मदिमांसनसपान
विठ्ठगदिमूजन

विषयातिविध्यादुक्त्वं
मूलजदंष्ट्रकृत्स्नमेव
धपनिसविकित्ता
विषयासिगनामाश्रयः ॥
अथजीर्णविषलक्षण
दुष्पविषयालक्षण
विषयादुक्त्विक्त्सविचार
विषदृष्टिलक्षण
विषदृष्टधूलिलक्षण
कायादियायविषलक्षण
विषापदव
विषवगकृत्स्नपकार

मगान्नवनप्रिविधविषवग
दृष्टविषवगलक्षण **पृष्ठ ११**
यथमविषवगलक्षण
द्वितीयविषवगलक्षण
तृतीयविषवगलक्षण
धनचिह्ननविषदृष्टकिणिसिध **१३१**
विषदृष्ट्यासाश्रमाधन
मद्यादिजीमधनरुग्नीपनाका
धजवाद्यलपलपावकिणिकनवाद्यधाय
वैद्यनस्नानयादाववाक्कलपनिसनस्वस्ति
वावनयादावदक्षिणहस्तनकुण्डलाव
विषनागनमनुपालय

विषह्नमन्त्र
नकुलवनादादिमांसनस
जेषधादिसंहान
पिष्ट्यादिनस
विषदूखितकिनिनचकीथियकमतव
नेलयास्तनसद्युतप्रथाग
समस्तविषयाक्रिया
पलस्त्रानपूरुलिसविषदूखिसिंहायक
हविदादिविषनाननपिलु
पद्ममृत्तिकाप्रलय पय १२
चन्दनादिपानप्रलय
जलसक

मधूकादिकाकनसक
सिद्धकादिरुस्म
रुस्मपाकविधि
गिरुलादिसर्वपन
मृगदकाल
विषसूत्रप्रवाध
विषसूत्रप्रवाधजन
कूकमादिशालय
मृदीकादिनसपान
विषध्वर्मांस
विषयाप्रथमकालसनकमांस
मध्यकालसनकमांस

15
 10
 5
 पानकालसनकमांस
 वनाहमांसमत्स्याशजन
 नानापकावशाजनादि
 गन्धानादिशजन
 कृगमूगादिपान पृ 13
 प चन्दनादिनखदादयनामशृगद
 नकाद्यशृगद
 शृदादिगुटिका
 गुटिकाप्रयाजन
 वाक्यमरुमाकियायानिसगुटिकापलप
 मणुलीसर्पनकाकडोषधी
 कृमसर्पनकाकयाडोषध

यवदानूनादिनशृगदकल्क
 पिष्टल्यादिशृगद
 मधुकादिशृगद पृ 14
 यागकालसंक्षजकृणुदूरिपताकावाद्य
 धशृगदनलपनयाय
 सोपलुनामविषहृनशृगद 132
 धनविषारुयाक्रियासाधन
 धनदूषीविषयालकणविकित्तानामाध्याय 11
 पुनर्वादिशृगनाजामूनियकठना
 विषनदिश्वविद्धविषयालकणविकित्ता
 मूनिकाना
 विषदिश्वलकण

विषविद्वलकल
दिग्बविद्ययाविक्र
दिग्बविद्ययाविकित्सा
भवनादिगत्यागधन
श्रमलकादिकाथ
सामवल्कादिलप
विषयगमनवसपाक यग ७
विश्वलक्ष्मदिवलागधन
ह्रिदादिबुधुगिद
दिग्बविद्वल
दिग्बविद्वलयाविकान
दिग्बविद्वलयापकापकविवात्र

वलायापकापकविक्र
श्रयकविक्र
नकमाकल
सूयकविक्र
गमुकर्म
दूर्गधर्मासवलागधन
वलायासूद्रासूद्रगधवर्षुविवात्र
उलानादिविवात्र
धर्गविषलदिग्बविद्ययाविकित्सा लकलश्रुध्याय ८॥
पूनर्वादिनाजानमूनियककनाकिसियाविषनदुषित
संयमसविषयुर्गुगमुनदिग्बविद्वविषवगपीठिन
याविकित्सा मूनिकाना यग ७॥

विनकाकयाढातायकानकात्रल

सर्पदक्षयाविविधवृष

सर्पनिपीठितलकल

सर्पनिपीतलकल

सर्पदक्षडद्वलितलकल

प सर्पयाविषरागलकल

किगियागनीनस विषनगयश्वयाविवान

सर्पयाधतायकानरुद

दर्वकिनयालकल

दर्वकिनयाविषवातलकल

मउलीसर्पयालकल

नाजिलयालकल

पताकीसर्पयालकल

धयताजानसर्पयाविषयताजात

सर्पनकाकउलिसमययाविद्र

दर्वकिनसर्पकाकयाविद्र पता

मउलीसर्पनकाकयाविद्र

नाजिलसर्पनकाकयाविद्र

पताकीसर्पनकाकयासामान्यलकल

धयताजातयाविषनकउल

धनसुवनविषलकल

सर्पकाकयासाध्वलकल

विषपीनयालकल

विषपीतनभूतीसानादिनागशयिव

१३३

विषयूपलक्षण
 विषयद्वयसमलक्षण
 विषयमिलक्षण
 विषयकदासपातनवयालक्षण
 विषयकवायुश्रुत्यानयालक्षण पृष्ठ १८
 विषयद्वयसंघातवायुयालक्षण
 विषयकजलपानयाविवान
 सामान्यविषयनदिबविद्धस्वरूप
 विषयकश्रुत्यञ्जनप्रदहयाविकानलक्षण
 प्रकारानुगतसर्पद्वययालक्षण
 सर्पद्वयवर्णनदिविकान

सर्पद्वयद्वययासूक्ष्मसूक्ष्मविवान
 सर्पद्वयद्वयद्वयसमूह
 श्रुत्यादिप्रदह पृष्ठ १९
 यक्षमध्यादिपान
 धनवानिकविषयाविकित्सा
 श्रुत्यैहिकविषयाविकित्सा
 मृगालादिश्रुत
 प्रियंवादिक्वाथकल्क
 संनिपातयाश्रुत
 मिखाससर्पनिदाकयाश्रुजन
 निविकल्लिकादिगुटिका
 दर्वकिनसर्पद्वयकयाश्रुजन पृष्ठ २०

प

मंठलीसर्पकाकयाञ्जन
 किनियोकहतीयविषयाचिकित्सा
 विदुतादिकल्क
 दक्षिणसर्पकाकयाविनचन
 नाजिलसर्पकाकयाकषायपान
 नकायप्रयाजलसक
 सर्पकाकतालगावतयाकिनियाविकान
 धयाचिकित्सा
 सप्ययाविषुनमालसदिवावमालस्याकचिकित्सा
 नाजिलसर्पकाकयामनःनिरादिश्रूजन
 सप्यनकायानसंनिपातश्वया
 श्रुवकलुमदिश्रूजन

नगसर्पजनतयाकाकिनियाजलसकयदह
 धतसर्पदहयालकलचिकित्सा
 विषयूकवमुनयानसविषकिनियालकल
 विषाजितकिनियालकल यगुश
 धयाचिकित्साकर्म
 विषद्यश्रूजननादियाग
 प्रकात्रान्नवनयाग
 पियत्वादिशुटिकाञ्जन
 नर्कनादिश्रूजन
 श्रूजादूवादिश्रूजन
 धतविषाजितयालकलचिकित्सा
 श्रुथविषपीनयालकल
 धयाचिकित्सा

१३४

जलसकिणिशयक
मूज नयदहादि
श्रुतलिपुवालादिधूप
विषनसंयूक्त्याकिणिननाउननावविषद्यालक्षाय
धयाविकानलकल
धयाविकित्साकर्म पृष्ठ २२
कपित्कदिपान
विषयूक्त्याविकानलकल
धयाविकित्सा
गिरुलादिवसि
द्युतयदहादिक्रिया
विषघ्नजवगालिशजन

विषनमूकशवक्रास्नानयास्कविधि
वलिहामादि
स्नानयास्कनाकलनसुतयजोषधी
पयगवादिसामग्री
वेद्यनजलानयसवदावकलनजाकावमन्त्रपालप
स्नानमन्त्र पृष्ठ २३
स्नानधूनकावस्वस्मिवाचनकिणियूजा
धनसर्पदष्टादिविषत्रागविकित्सा श्रुत्यायत॥
श्रुथकक्तित्रागयाविकित्सा
कक्तियालकल
कक्तियाश्रुकात्र
कक्तियावल्गुदिविवान

15
कनरुदनश्रुसाध्वविष्णुटक

ककुसाध्व

विकादिदूष्टनिधिसविष्णुटकशूलनावकिणिसिधिव

लूतादिविकान

सर्पदशरुक्रियाधर्मायाय

प किणियागनीनसविकानयाविचान पय २४

नसादिधामुदायविचान

विषाययूकादिहृदु

वि विधधाहत्यान

पशुयाविषदाषमद्विचान

पशुयाकस्तुटिकामानविचान

धयाकान्धपमतनचिकित्सा

प्रथमादिद्विविधरुदविचान

धयासाध्यासाध्वविचान

श्रुसाध्वविचान

काकाकुदिमहाविष

धयागमुकमादि पय २५

धनस्तुटिकायालकलदिश्रुसाध्वय १०॥

श्रुथश्रुपवादवद्विधाय

१३५

श्रुपवादवद्वलकल

उग्रदानूदिनिधिनकपसकिणिवयमतव

दूष्टनिध्यादिसचयाक्काकिणियादाष

समूहलदिसचयाक्काकिणियागुल

धनश्रुपवादवद्विधाय १॥

पूनर्वादिना जानकना
पूर्वविद्वनामव्याधियाविकित्तालकल
मूनिनकाना
पूर्वविद्ववाधिलकल
धव्याधियाग्रसाध्यादिविद्यान पृ३४
वसन्कालसकिनियाक्रीगनिद्रूपन
वसन्कालसक्रीगक्रीगलमाढावकिसिसियव
ग्रीष्मकालसकिनिपनिसक्रीगनिद्रूपन पृ३५
ग्रीष्मकालयाक्रीगलमाढावग्रमसथाठकिसिसिय
श्रीवर्षाकालसकिनियावनक्रीगनिद्रूपन पृ३६
वनक्रीगसूखलमाढावग्रमथापनिकिसिसिय पृ३७
गन्तकालसकिनिपनिसक्रीगनिद्रूपन

गन्तकालयाकिनियाक्रीगलमाढावकिसिसिय
रुमन्कालसवनससूखक्रीग पृ३०
ग्रामसथयावतयाकिनिरुमन्कालयासूख
क्रीगलमाढावसिय
गिनित्रकालसवनसक्रीगनिद्रूपन पृ३१
गिनित्रकालयाशगलमाढावकिनिसिय
अथवामसितसानानापकावनयाधिरुय
धर्तलकलनपूर्वविद्ववाधिव्याय
धयानिमिहिनभदातवधककिनिवथमतव
पीयदासपूतकिसिथयमतव
धक्काकिनिकदाविनम्वासापदप्रपतनदोषरुय
पदप्रपतनदोषयात्रुगुरुल

माकि निपनिसनधप्रययादगयायुवविद्वकिनिगालन
 रुतीयावउथदिगानसंयूककिनिवय
 पंचमीदगानसंयूककाकिनिवयमनव
 पंचमीदगानसयथाकाकिनिसिथ
 वनविलासलमादावकिसिसिथ **पृष्ठ ३२**
 प माकि निपनिसाक्रगाववाठग्रामसहसुनूसिथ **पृष्ठ ३३**
 पुवविद्वकिनिग्रामसहसुनूनसामनव
 अथैश्वर्यकिनिवयमनव
 पुवविद्वमानसत्राग
 श्वतेपुवविद्वभागलदलश्रुत्याय १२॥
 पुनवदिनाजानमूनियकठना
 विस...

मूनिकाना
 विसर्पनागयानिदान
 विसर्पनागयास्तन
 ताकालशलनावविसर्पनागयाश्रुसाध्व
 विसर्पनागसवायूपकापशयिवलदल **पृष्ठ ३४**
 वातपृष्ठतिश्वयथ **१३/३**
 पिरुपृष्ठतिविसर्प
 विसर्पनजायलपूकक्रियाविवाव
 श्रुसाध्वविसर्पियाविवाव
 श्रुनिविसर्पमानदल
 करुपृष्ठतिन...
 श्रुषिकविसर्प

१५ निपातिकविसर्ग
 विसर्गसिद्धनद्वयविचार
 वलसम्बन्धयथागशिविविचार
 मर्मसंज्ञायलविसर्गसमाध्व
 १० संनिपातनकतनजायलपूष्ययथसमाध्व पृष्ठ ३३
 ध्यावातादिदाप्रसियावविकित्सायाय
 धनविसर्गनागयालकल श्रद्धाय १३॥
 पुनर्वादिनाजानकना
 ददयस्तुलीनागगधधक
 मृनिनकाना
 ५ श्रुत्यसत्त्वकिगियाददयस्तुलीनागशिव
 किगियानगलदाय्याविचार

ददयस्तुलीनागश्रवकाकिगियाधध
 विकानधकत्रसाध्वसिय
 धनददयस्तुलीनागयालकलश्रद्धाय १४॥
 पुनर्वादिनाजानकनावातकानीनागयालकलगध
 मृनिनकाना
 वालकानीनागयाउत्पत्ति
 वालकानीनागयालकल
 ध्याविकित्सा
 वालकसकटिकधयानजायलवालयालकलविकित्सा
 वालकवलसकृमिदवयाविकित्सा
 वलखनकाश्वावाधपनिसर्मासधनप्रलय पृष्ठ ३४
 किर्तमादिधनप्रलय
 सूनसादिधनप्रलय

पिथल्यादि (मधन) प्रलय
 लाकादि प्रलय
 कमि (मधन) ओषधी
 प्रपूनादि नैल
 धन कमि नागया विविक्ता
 प वालकाणी नागया सद्यः (म) क विविक्ता
 कालातीन शलना व वालकाणी मूसाध
 धन वालकाणी नागया लकल विविक्ता **मूसाध १७॥**
 पुनर्वादिना जान मूनिया कदना
 मधु कानी नागया उत्पलिंग (धधक
 मुनिन काना मधु कानी नागया उत्पलिंग
 मधु कानी नागया लकल
 मधु कानी नागया उत्पलिंग कात्रल

नक पितादि नूति घात नवलादि विकार **पग ३१**
 हूटि नादि विचार
 पिरु प्रकापया विचार
 नक प्रकापया विचार
 सनिपात दाषया विक्ता
 मधु स्कन सु नाना दाष विक्ता
 कछन मूगयाय
 मधु कानी शव के किनिया विकार यथा
 धन मधु कानी नागया विक्ता
 मूध धया विविक्ता
 माकिनि नापलातक
 मधु स्कन संगत (धौ) गद्यु गन सक
 सवंगि घटलक

१३१

15
कीनवृक्षादिमूलजर्जन
उद्वसनादिप्रलय
सजादिकाथनमदुसिल
खठिनादिकाथनमदुपत्रिसक
यक्षीमन्त्रादिलय
नलादिप्रलय
मृत्तिकादिवाधियास्वद यक्ष ३८
जातीपयादिभनेल
उलादिबलाग्नधनलय
काग्नटकादिनेल
सजादिवृक्ष
बलयकालन

स्वदनधूपनादि
मृत्नादनादिशजनापवाव
धनमदुक्षानीवागयालकविविकित्सा मृत्नाय १७ ॥
मृथहसुवागवागयाउत्पत्ति
हसुवागवागयाविकान
धयाविकित्सा
मृत्निर्मथादिडोषधी
स्वदादिनगसिंचनादि दूधन
द्युतर्मदादिस्वद यक्ष ३२
(गधूमादिपाकसक
उनलादिस्वदन
भगाजर्जन

कनधूपन
द्युतादिमस्य

सूत्रापानविधि

कामलहृत्वादिशाजनापचान

धनंरुस्यरुवातनागयाविकित्साभूष्याय १॥

प

नूथरुसामथितनागभूष्याय

रुसामथितनागयालकलधनागभूसाध्व

धयानिदानभूता

धलिविक्रनक्रसक्रकक्रसियिवसिय

धखूतानिदाननकिगिसियुदिनयाविद्यान पव ४०

धनंरुसामथितनागयाविकावलकलभूष्याय १०॥

पूनवदिनाजानठनाउल्कलुकनामयागयाविकित्सा

मूनिनकाना

उल्कलुकनामवागयाधियाउत्पलिकावल

धयाविकित्सा

द्युतवसादिसक

वायूरुवल्हदिस्वद

नूत्यंगदिकिया

(धानाकादिनाजीस्वद

स्वद्रादिमीसत्रसपान

उद्युचाठिनेल

नककोशदिमीसत्रसपान

वहनाहमीसत्रसपान

धगुलिनागसकेदाचितकिसिनमलमूगयाक

वहनसुसुशलसाभूसाध्व

नस

१३८

15
प्राणदिवायुयायकापनवाधिरुयुविचार पृष्ठ ४१

ॐ ह्रियनिनाधनडदावरुहयु

ॐ ह्रियकापनयाडसुह्रियनागदिशयु

पिलयकापनपालुनागदिशयु

10
विदाधसनिपातनददुश्रुदिननागरुयिव

वगनाधउश्रुधिसुन

वायुयासुवृषगुणनिलुय

धनडलेकुकिनागयालकलविकिसाश्रुधाय १२ ॥ पृष्ठ ४२

श्रुथवातगतिथाधियानिनृपल

वातगतिनागयाडत्यलिकावल

वातवाधिनानीयानिदान

धयाविकिसा

प्राणकालसश्रुसवयानयासुविचार

यवादिधूप

सज्जनसादिधूप

ककटादिधूप

जीवनादिधूप

मनीयादिश्रुजन

हिंमदिप्रत्यजन

नकायादिकाथ

पंचमूललंकाथादिश्रुजन

धनवातगतिनलकलवाधिविकिसाश्रुधाय २० ॥

धूनवदिनाजानदना

मन्यायदुभयलिसाधनलकलगधधक

मूनिनकाना

मन्याग्रहवाधियाउत्पलिकानल यग ४३

मन्याग्रहवाधियाविक्र

धयाविक्रिस्ता

उष्णकनसक

प मर्दनादिउपाय

उपायद्विष्टद

वीक्षादिकल्लय

गाल्यादनादिशजन

तेलनस्यादिउपचार

धर्ममन्याग्रहवागयालकलविक्रिस्ताग्रध्याय २॥

पूनवदिनाजानकना

मदकीलशवक्तकिगियाउपायगधधक

मूनिनकाना

मदकीलयालकलधयाविक्रिस्ता

गमदूधदिपान

पंचमूलादिवसकाथ

कननादिराजन

सूखगयादिउपचार यग ४४

मधूनवृहनादिउपचार

राजननर्थगदि

मददाषमदत्पलिनिर्भुय

उपदवनमलहावननावमहावननाहायकउपाय

गूदूगाल्यादनादिशजनापचार

१३२

15
धर्ममदकीलयाउपायग्रन्थाय २२
पूनर्वादनान्नाननानाउपवाचन
लहियानकनग(ध)श्लमूर्निकाना
कनशयिवयाकावल
द्युतादिविलपन
काकात्यादिकवल पृष्ठ ४७
सूधवलक्रिधननादिकवलनक
(म)कीनपान
मल्यादनादिराजन
जलचरादिमांसनकउपवाच
सूधनकयाउपवाच
किनियाग्रवस्तुदिविचानयाकावउपाययाय

धर्मकनयालकलविकित्ताग्रन्थाय २३॥
ग्रथवलकीलीध्याय
वलकीलयाविक्र
ध्याविकित्ता
नेलद्युतादिपान
मयूनादिमांसप्रसपान
मल्यादनादिराजन
मृगमटकादियवमराजन
वलदतनावर्सममादिकर्मसजाजलय
धर्मवलकीलयालकलविकित्ताग्रन्थाय २४॥ पृष्ठ ४७
ग्रथल्लभारिपनाध्याय
ल्लभारिपनयाविक्रलकल

15
शुभाश्रितपन्ननद्याधिशयिवलकल

नैथ्याविकित्सा

उष्णकावादिशुश्रूदि

यवसादिराजन

प शुभमयाविकावलत्व (दाषविद्वादि शलनावडयाथ

सर्षपादिनेलार्यग

धनशुभाश्रितपन्ननागयालकलविकित्सा **ब्रह्माय २७॥**

पूनर्वादिवाजानठना

नवग्रहयादाषनमनःसितापश्वयाविकित्सागधधक

मूनिनकाना

नवग्रहयादाषनमनःसितापश्वयावनानायाधिशयिव

धयाविकित्सा **यग ४१**

कालकदल्यादिरुक्कल

गल्लुवादिरुक्कल

यवसादिरुक्कल

मावात्वगादिरुक्कल

उदकयवसादिरुक्कल

रुल्लानकादिरुक्कल

कदनीरुल्लानकादिरुक्कल

ब्रह्मनकादिरुक्कल

मुख (गधनयकाय

धनब्रूनलामिकनामाध्याय २७॥

पूनर्वादिवाजानठनागलकागीनागयालकलवि

कित्सागधधकमूनिनकाना

१४०

15
तलकागीनागयालकल

तलकागीनागनकवक्रकिसियाविकानलकल

तलकागीनागशयिवयाकानल पृष्ठ ४८

धयाविकित्सा

10
सहस्यग

द्युतसक

तलकर्मयायविद्यान

तलकर्मयायमनवयाविद्यान

गमुनगधन

मधुक्षिष्टदिपाक

5
शूनादिगापन

वकाहादियादाकनयलप

तलनिवपिन

कूमादियादाकनतलनिवपिन

तलविद्यान

तलसुकुन

नाचनादिक्वाथनतलप्रकालनयाय

नखनागदिनिर्यानि

मूत्रादनादिशजन

नखयामध्वस किमिदवयाडपाय पृष्ठ ४२

नखसकिमिदयिवयाकानल

वलसस किमिपिकाय

कषायकर्कलप

नकूमांससजायल किमिवलसनपिकाय

किमियावलुदिविद्यान

किमिपिकायाद्यालसपूर्वाकप्रकारवासरतगय

15
 10
 5
 प
 असाक्षसायावकात्रादिकर्मयाय
 किं निनपत्रिणमादिमयात्क
 किं नियावलसायाववलनापनयाय
 वलनादिविणषन
 वलनादिप्रकात्रलकिं नियाचनलतलसदाषशयिव
 नकपिरुकरुवायूधलिमूढावकिं नियाचनलतलस
 नगययाकावतलकाणीनागउत्पलियाय
 हिलाहासिखातदवधर्थिपव्वतवेनाकसचनलपान
 तलकाणीप्रलुतिनानात्रागशयिव
 धर्तलकाणीनागयाचिक
 थयाचिकित्सा
 चनलतलसद्यालदवक्ताकिं निमासदायकमतव

द्यालयालकायायनिमिहिनस्तुनान्नसतय
 गगार्थगदिउपचात्र
 उद्धूतावधूनादिगमुकर्म
 गुडादिपाकनतलपाकन
 खठिनागदिनिनागापन
 ववाहादिदाकनतलनिव्वपिन 181
 अथवाग्रदश्यादियादाकनतलनिव्वपिन पञ्ज०
 तललकल
 धातुआदितलस्तुप्रलप
 नाहिल्लादितलस्तुप्रलप
 कषायपाकनतलप्रकालन
 थुगुलिप्रकात्रलतपश्चाककिववहिववचास
 किमिन्त्यादिनाकशयिव

मृथजलपायसमियासुनदावननखसकिमिदय
 थकिमिनदाककिनिपानिदूर्वलश्यावडनिच्यमरुयूव
 थयाचिकित्सा
 प्रथमसनखरगधनयाथ
 किमियाद्यालनहिक्किवलसामूलनवलसीनकिमिपिकाय
 घृणमधूनवलघृणुयाय
 किमियाहाकनायताहाकपूतिहाकसायावडपाययायविकार
 किमिपिकायमजिलसाक्षानादिकर्मयाय
 उहान्वकलुदिपाकसमसुपादनागयायिगसु
 सुनागानकविधि
 घृणमृजादिशजन पयज
 सवनादिप्रकार

धनगलकाणीवागयाचिकित्साध्याय
 किनियागल्यहनागगथदन
 मूनिनकाना
 किनियागल्यहशयिवयाकायल
 प्रकारान्ननगल्यहनागयाकायल
 गल्यहनागशवक्केकिनियाविकार
 किनियाविकारविक्र पयज
 गल्यहनागयासाध्यासाध्याविचार
 थयाचिकित्सा
 किनिवियावडपाययाय
 वयत्रादिनडपाय
 गलपागेसाविधार्तकाउकवयाववेधन
 विक्रदादिवासर्ललागतीसवासर्लवयाव
 किमियाधकासवालावसायडपाय

काथसथादावचादनसायाजीञ्जीञ्जीविचान
 कथसस्वयथनागदत्ताविलापनयायउपाय
 भूतिकठिनशलसावालातलयावकाय
 कथयास्वदद्युतपोनादिउपाय
 पंचमूलादिकाथपान
 पृथ्वीकादिराजनापचात्र
 नाञ्जीत्वदविधि
 सिन्नासिन्नविचान
 भूतिस्तिन्नशलनावविकानशयिव
 (म)राजनादिकंभनूसानल पञ्च३
 तैलादिश्रुत्यञ्जनस्वद
 मधुकादिबुधु
 तालीसपयादिधूप

छद्मकादित्रूजन
 कोमलहृत्पादिराजनापचात्र
 गलगहृत्पादककावेद्ययापनीसा
 धर्मगलगहृत्पादगयालकलविकिसा **मूध्याय २८**
 घूनवानिनाजानकना
 हृत्पादशिवक्र।किनियाविकानलकलगथ
 मूनिनकाना १४२
 हृत्पाद।किनियानागश्रुत्यकानल
 हृत्पादकिनिवेशनपनीकोयाथ
 हृत्पादिनकिनियानागमूकदि
 तैखतानकयाविचान
 जलपानयागुलविचान
 जलपानमविलनावदाषशयिवयालकल पञ्च४

15
दिकानलकल
हृष्यायाविकानमर्मस्तनपीठ
थाकश्रादिनकथसजिकासककिवायिव
सिद्धार्थनामवाधिशयिवविवात्र
10 हृषार्हयावेक
जलपानश्रावश्चकविवात्र
मृद्धीकादिनसपान
यवकीनादिपान
किणियागनीनसक्किदसस्तहृष्य
5 स्तहृपाकप्रकात्र
गलकथदिसमस्तनागर्मथूगुलिप्रगस्त
लावतिलिनादिमांसनसगल्यादनादिशजन
कामलहृष्यदिउपवात्र

धनहृष्यावागसिद्धार्थनामवागयालकलविकित्सा
श्रुद्धाय २२ ॥ पञ्चगज
यूनवदिनजानकना
किणिपनिहृगग्रहपीठसाध्यासाध्वगमनिगथधक
मूनिनकानाहृगग्रहादियागन्यादिविवात्र
ग्रहयानामशावादिन
ग्रहनपीठयायूयालकल
किणियकहृगग्रगयशयिवयाविवात्र
शववाकूकग्रहनपीठयाककायालकल
मृगकग्रहनपीठियालकल
प्रगालग्रहपीठियालकल
स्वयिनिग्रहपीठियालकल

15
 10
 5
 यतर्दनग्रहनपीठयाकलकल पयजउ
 कामाख्याग्रहनपीठयाकयालकल
 वनिजग्रहनपीठयाकयालकल
 सुविग्रहनपीठयाकयालकल
 ग्रहयासाध्यासाध्यविचार
 प असाध्यग्रहनजायलपूविकान
 समस्तवस्तुदिसामान्यविकान
 असाध्यग्रहपीठितविचार
 वर्षपर्यन्तादिग्रहयाविचार
 दृष्टसाध्यग्रह
 ग्रहपीठयाविकित्सा
 वलिहामादिगान्नि

गजमालागन्धन पयजउ
 मालासगजयवनविधि
 किमियाहवननकाद्यादिमनुष्या
 यदहपनिष्वनादि
 अंजनधूयादि
 गन्धुनादिअर्थ
 तिलादिअनूलपन
 त्रिकटुकादिनस्यकर्म
 स्वदाहर्तनादि
 पित्रमर्दादिसुद
 द्विपंचमूलादिकाथ
 वाक्कीनसादियान

183

15
वलिदानविधि
धूपविधि पृष्ठ ७८
नाष्टिक्रियविधि
ग्रहनागनमूकश्लेष्मनावकिनिलह्रियविधि
आल्यादनादिशुद्धनापचार
ग्रहविकिसकवेद्ययालकल
धर्मेष्टुनग्रहयोऽयालकलविकिसाब्रूयाय ३०॥
धूनवादिशुद्धनागनमूनियाकठना
किनिठायवावयालकलकठना
मूनिकाना
ठायवावकिनियावयालकल
ठायवावयाविकिसा

आकपिलादिशुद्धनागन
तल्लुतीयकमूलादिशुद्धनागन
कनवीनमूलादिशुद्धनागन
शुद्धशुक्कनादियाशुद्धिनिधूप
उत्तयाकासुशुद्धिनिधूपयाय
मनःशुद्धिनादिशुद्धनागन
काकपिलादिशुद्धनागन
गालंजादिधूप
कस्तुरितिलादितेल पृष्ठ ७९
हिंमदितेलननस्य
धर्मेष्टुनग्रहयोऽयालकलविकिसाब्रूयाय ३१॥
शुद्धशुद्धनागनयागयालकल

15
अपस्मानागया विक्र
धया विकित्सा नवग्रहागया प्रकनक्षकनयाय
धनं अपस्मानागया लक्षणविकित्सा **अध्याय ३२॥**

पूनर्वादिवाजानक्षत्रा

प वातकुण्डलीनागया उत्पलिलक्षणविकित्साग (धधक॥

मूनिनका नावातकुण्डलीनागया उत्पलिकानल

वातकुण्डलीनागनकवक्र किनिया विकानविक्र॥

वातकुण्डली असाध्यलक्षण

धया विकित्सा साधन

निर्वातकूनसकिनिगय

मल्यनद्युतादिशजन

कार्थयतिपानादि

वसिकर्म **पृष्ठ ३०**

प्रातःकालसद्युतपानादिविधि

धनं वातकुण्डलीनागया लक्षणविकित्सा **अध्याय ३३॥**

अथ रात्रा मथितनागया लक्षण

अदिकम्या उरात्रवृषिकावर्यनावरात्रा मथितनाग

धया विकानविक्र

धया विकित्सा

मासचूनसादूदसवानावसूथानक

कूल्माषादिउपचार

पिष्ट्यादिचूर्ण

पिष्ट्यादिदीनपाक

दाकादिपान

गुग्गुलुपिलादिनेल

१४४

यवसादिशजनापवान
यवातस्तनसलयनापवान
सूखगयादिदयक यग३१
धनरात्रान्मथितनागयालकलविकित्ताश्रुधाय३४॥
पूनर्वादिनाजानमूनियाकठनालूफनागयाउत्पलि
लकलविकित्तागएधधकमूनिनकाना
लूफनागयाउत्पलिकात्रल
लूफनागनकडाककिनियाविकात्रलकल
थयाविकित्ता
कीनरुदयाकाथपान
कीनतर्पणदिपथशजनापवान
मयुत्रमृगमांसादिनाल्यादनादि

धनसामान्यलूफनागयाविकित्ता
अथविणषलूफनागयाविकित्ता
विणषलूफनागयाउत्पलिलकल
लूफनागीकाकिनियासर्वगिससुसुलषविक
द्युतकीनादियानराजन
विटतादिरसमार्थग
वसिकर्मस्वदृष्टहनादि
धनसामान्यविणषलूफनागयालकलविकित्ता
श्रुधाय३५॥
पूनर्वादिनाजानकठनाउदावर्लनागयाउत्पलिविकि
त्तागएधधकमूनिनकाना यग३२
उदावर्लनागयाउत्पलिलकल

15
 उदावर्लवागीयाविकावलकल
 धयाविकित्ता
 उन्वकादिनेल
 जांगलेमासादिशाजन
 वस्तिनिवृहादि
 10 प पंचमूलनसपान
 यदुष्मादिउपवाय
 धनउदावर्लवागमध्याय
 ग्रथवल्मीकवागमध्याय
 वल्मीकवागयाउत्पलिलकल
 5 गमुकर्मकावादिउपवाय
 गमुनगमधनादि
 धनवल्मीकवागमध्याय ३७ ॥

पुनर्वादिवाजानकना
 पण्डमित्रागयाउत्पलिलनिदानगधधक
 मूनिनकाना पण्डमित्रागयाउत्पलिलकल
 पण्डमित्रागनशवकाकिगियालकलविकान
 धयाविकित्ता
 गतधोतसंकननसक
 किगिकसपातनाहाकलाखसखयक १४५
 लखनकिगिधकायावलप
 दूर्वादिलप पण्ड ३३
 हनिडादिलप
 मूनादनादिशाजन
 यवसादिउपवाय
 धनयणकिमित्रागयालकलविकित्ता ३७ ॥

पूनर्वादिना जानकना उन्नं कतना गया उत्पत्ति गायधक
मूनिनकाना उन्नं कतना गया उत्पत्ति लंकल
उन्नं कतना गनकवक्त्रा किमियाविकावलंकल
धयाविकित्सा
लिंध्यसकिनितय
लालस्वद
नालीस्वद
नकायिदिपाकन श्रुत्यकपनिषयन
विष्टतात्रसपान
यवकालादिनेलाख्यजन
नस्यकमनिवासनादि
धनं उन्नं कतना गया लंकल विकित्सा ब्रूयाय ३७॥
पूनर्वादिना जानकना मूनिं लालितालुना गया लंकल॥

मूनिनकाना लालितालुना गया लंकल
लालितालुना गया उत्पत्ति कावल
लालितालुना गनकवक्त्रा किमियाविकावलंकल
धयाविकित्सा
गमनमूलसंहिपिकाय
हिपिकाया घालसधननव्य
सूनामध्यादियनियान
हनिडादिलप
श्रुतिकर्म
पिष्टत्यादियनियान
वाधनाथलवलादि
नेत्रिकादिष्वलनापनलप
धनं लालितालुना गया लंकल विकित्सा ब्रूयाय ३८॥

धूनवदिनाजानठना
 यवगलुनागनामपादनागयालकलउत्पलिविकित्सा
 गथधकमूनिनकाना यवगलुनागयालकलउत्पलिविकित्सा
 यवगलुनागयालकलउत्पलिविकित्सा
 धयासाध्यासाध्याविवान
 धयाविकित्सा
 प विष्णवनादिनखलधन
 वातधूपलय धयउज
 नैहवत्तनूपानादि
 धनयवगलुनागयालकलविकित्साध्याय४०॥
 धूनवदिनाजानठनावर्मकीलनागयालकलगथधक
 मूनिनकानावर्मकीलनागयालकलउत्पलिविकित्सा
 धयाविकित्सा

कानानिगमुकर्म
 कषायादिलप
 लसूनादिलप
 विवलीयनागकउपवान
 धनवर्मकीलनागयालकलविकित्सा
 ध्याय४०॥ १४३
 अथ००शवपनिकिसिलहिययाउपाय
 अ०याविकानलकल
 वृद्धावस्तुसद्याधिउत्पलिविकित्सा
 धयाउपयाग
 कामलगया
 कामलहलयाउपवान
 पविग्रमादिनिषध

15
निर्वाह्यं भदि
डाकादिपान
यवसद्व्यदि राजनापचान
धनं दृष्टकालसं किं निलकायाय उपचान नृध्याय ४२॥
10 पुनर्वादिना जानकना किं सिंग (ध) नृवसन्न शूलधक च ७३
मूनिनकाना
किं निनृवसन्न शवयाकान लक्षण
नृवसन्न शूलनाव सिधिवया विचान
धया चिकित्सा
5 गल उलावका क्ता किं निथान उपाय
पूखन नृदिन जलानाय सकृत् तिंथकायया उपाय ॥
सर्पिर्दीनादिपान संचन

राजान विचारमया ननाव किं निनृवसन्न शय
निर्वाह्यं राजान वैद्यकपद्याकावा किं निसाय
किं नियाधसंसा
धनं नृवसन्न शवया विचान नृध्याय ४३
पुनर्वादिना जानकना
ज० नृवागया उत्पलिलक्षण ग (ध) धक
मूनिनकाना च ७३
ज० नृवागया उत्पलिकान ल
ज० नृवागया विकान
सन्न शदन विकान शद
धया चिकित्सा
निर्वाह्यं राजनापचान
वसिं दोना किं कर्म

धर्मेण ० नलागयाल कल विविक्ता श्रुत्या य ४४॥

पूनवदिना जानन नोखदा सवर्क धेक कि निध

यावहयाल हिय उपाय मूनिन काना

मामववडा हयावहया कि निवापनि मनिनाग

याय निमिहिन न्न पावलिहामादिकर्मयाय

प कीनपानादि

लखसजायल पूकामलघास रूत्या दिनक

मादूदेसाधलि रूत्या दिशूनया दूनतयावनक

लाद्युगपिष्यलीवुअदिनक

उत्कालिकादि सिखराजन

नसलवलादिनकमगवविवाव पय ३८

किनिवापनिस जिदा दसानिस मरुकादि श्रूगसधलव्य

दकवधससुन सवकनव्य

पकृतासवर्जिसद्युगनहाय

रानव्यक दूगमन रूत्यादियास्कमगवविवाव

कामल ग्या रूत्यादिदयकावगय

धर्मेण प्रकारनल हिया कि निवापनि सन

नीताश्रादिसहयाय रुयिव १४१

रुतीयादिदगमसगमनादिविधियातक

धर्मेण उपायन कि गिया निवाग शयि

वालक कि निल हियया प्रसंसा

धर्मेण वालक कि गियाल कल विधि श्रुत्या य ४५॥

पूनवदिना जानन गज्जल वादकान

घालकाखयाक नाना विविक्ता फनागयाल कल

मृनिनकाना ना विद्वि फ ना गया रूप ल कल
 ना विद्वि फ ना गया उत्पलिका नल पय ७२
 ना क स ग्र हा दि ग्र सु ल कल
 लता दि न ग य श यि या वि वा न
 ना विद्वि फ ना ग न क व क कि लिया वि का न ल कल
 कथा ग्र ह न ग्र सु श व या वि वा न
 ना विद्वि फ या वि ल म ल कल
 थ या वि कि त्सा
 क व ल द्यु त स क पय १०
 स मा ल य न ध्रु पा दि
 मा नू ल दि पा ना स्य न
 गाय मा ना दि य द ह
 कृष्ण दि ध्रु प

क र्क ज वी जा दि न स्य
 व ना ह द ना दि र्ज न
 गु ण दि नू स्य र्ज न
 व य स्य दि पा क
 स र्प प तै ल नि राल स न या व ल प न या य
 ग ज मू या दि न म द ने या य
 पू ष्य त लु ला दि न ना पि स व लि वि य
 व चा दि न का ध्रु प
 ग ज माला स वा क्क ण दि न स व लि वा य न या क्क
 हा म या य
 कू त ल ष द्यु त न कि लिया क्का स वू य न क पय ११
 ध र्म ना विद्वि फ ना गया ल कल वि कि त्सा नू य ७३ ॥

पुनर्वादिना जानकना
मूयसंगना गयागथधक
मूनिनकाना
मूयसंगना गया उत्पलिकानल
मूयसंगना गया विक्र
प मूसाधलकल
साधलकल
मूयसंगीकिलियाविकानलकल
गुरुमूयीशयियाविचान
धयाविकित्सा
निर्मलसूनापान
धृतकलनादिशजन
यवादिपूषपाक

गंगलमांसवसरुजनादि
कामलयवसादिराजन
निवृत्तिसूनसकिणिधनतय यय १२
उष्मापवावरुजनादि
धतवायुविकानलजायलपूयसंगना गयाविकित्सा॥
मूयपिरुविकानलजायलपूयनिमूयीना गयाविचान
पनिमूयीना गयालकल
धयाविकित्सा
नामपञ्चादिकाथपान
मूनिमथिदिक्काथ
मध्वानादिराजन
जलकूरुग्रावण
वसपान

१४८

15
सुगुप्तं कसीधूपान
धनपानि मूर्त्तीभागया विकित्सा
मृथपिष्टमहीभागया विचार
लक्ष्म्यकापनपिष्टमहीभागशयिव
पिष्टमहीभागया विक्र
धया विकित्सा
पंचलवल्गदियनिपान
यदावदियनिपान
निम्बपटालादि राजनापचान
धनपिष्टमहीया विकित्सा
मृथनकप्रमहया विचार
लासरुक्तिं कायकाया विकानल
कदम्बादिउष्णराजनया विकानल नकप्रकापश्याव धया मृसाध्वसनिपातविचार पृष्ठ १४
नकप्रमहशयिव विचार पृष्ठ १३

नकप्रमहया विक्र
धया विकित्सा
गुंष्टादि वृष्टुसूधगानक
कदनीवीजादि मृषपाक
गल्यादनादि मध्यांनस नक
गालिगुलादि राजनापचान
धननकप्रमहया विकित्सा
मृथसगर्कनमृगभागया विचार
सगर्कनमृगसंगनागया उत्पलिकानल
धउयकापनविकानल शयिविचार
सगर्कनमृगसंगनागीश्वक विनिया विकानल कल
नानामृगविकानल कल
नकप्रमहशयिव विचार पृष्ठ १४

ध्याविकित्सा

पाषाणरुदकादिनिक्ताथ

मूत्रलवणयुक्तसूत्रागानक

वसिष्ठान

गतावस्थादिउरुवसिष्ठकर्म

प धतसगर्कवमृगसंगनागयाविकित्सा

मूत्रवसिष्ठानसवायुयुक्तापनत्रस्मादृगनाम

मृगसंगनागयाविकित्सा

ध्याविकित्सा

स्वदक्षादिक्ताथ

मयूवर्मासमेनयादिपान

यवकालादिशाजनापचार

धतत्रस्मादृगमृगयाविकित्सा

मृथजापनमृगसंगनागयालक्षणाविकित्सा

मृथनाकादिपान

धतयानार्थगवसिष्ठकर्म यमगज

धतनानाथकात्रमृगसंगनागयालक्षणाविकित्सा

धतमृगसंगनागयाविकित्सा १४२

यूनवदित्राजानकनायसववागयालक्षणा

मृनिनकानायसववागयागीशयिवयाकात्रण

वायुयुक्तापशयिवकात्रण

ध्याविकित्सा लक्षणा

उष्णतेलादिगक

वर्णमदिस्वद

सूत्रातेलादिपान

मधुकादियान
नम्रलोमश्वनादियानिलय
कुलमूलादिधूप
पंचमूलादि काथनमूर्त्यगादि
पिकट्टकादियूकसीधूपान यम १३
कगलोदिराजनापवान
यवसादितर्पण
वाक्यक्रामाकिनियानसामनवश्रदिविकारयाविवान
धयाविकित्सा
हलकागीतलजलपानादि
कामलहलजगलगीसादिराजनापवान
धनवाक्यक्रामाकिनियायसुतवागया
यसुतवागयालकलविकित्सा मूर्त्याय ४८॥

यूनवदिनाजामकना
दन्तवागयानिलुयगधधक
दन्तवागशयिवयाकात्रलयता
सामान्यदन्तवागलकल
दन्तवागीश्वककिनियाविकारलकल
दन्तवागशयिवयाकात्रल यम ११
वातदूषदन्तवागयालकल
दूषयितनदन्तवागशयिवयाविवान
दूषकलनदन्तवागशयिवयालकल
विदाषनदन्तवागशयिवयालकल
वृद्धावस्तनदन्तवागशयिवलकल
श्रुकस्माद्धाषविनीकिसियादागिनहि.क्रिवलसा
नाजायामरिद

15
 मूकस्मादन्तपतनशूलसालाखदास्यवलसाधउत्पातधाय
 जवदायादांगसशकवलसाधमूसाधधाय
 धकाकिसिगक्रयादगसतालतावच्छय
 धमउत्पातनजायलयूदन्तनागलकण
 मूथमूगलुदाषनजायलयूदन्तनागलकण पृष्ठ 16
 साध्यासाध्यादन्तनागयालकण
 साध्याकन्तनागयालकण
 मूसाध्यादन्तनागयालकण
 वासलयायनवमगवदन्तनागयालकण
 धयाविकित्सा
 दन्तसद्युगनप्रकालनयाय
 कट्टकादिचूर्णपाकनदन्तसल
 कात्रादिनदन्तसल

गजमूगनसन
 वातिकदन्तनागयनिलसर्वपकलनदन्तसल
 नननस्यकर्म
 चेहिकदन्तनागयापठलादिनेलपाकननस्य
 अरु
 ध्यादिनेलपाक १७०
 नकमालादिनेलपाकसर्वदन्तनाग पृष्ठ 18
 पिथन्यादिनेलपाक
 यात्रावनादिनेलनक्रधानल्ल्यादिसथान
 ब्रिमदादिद्युगपाकनक्रस्योतसथान
 नावनादिचूर्णनदन्तनागनादि
 घयोपुत्रीकादिलय
 वचासर्वपादिलय
 कर्कजवीजादिधूप

वल्गवस्तु विणमलवर्हिषधन
श्रद्धागदिनजायलपूदननागयाविकित्सासामान्य
श्रद्धदकपाकनविधि
दकपातनार्थकृत्लाहादिगलाकादयक
कदाविदुदकपतनमश्लक्ष्मजलावगमहनादिउपाय पृष्ठ
विबलीयो केषकावलदकवलयाउपाय
धनदकनागयालकलविकित्सा ब्रूधाय ४२॥
पूनर्वादिनाजानदना
विरुत्रंगनागयालकल
मूनिनकाना विरुत्रंगशयिवयाकावल
विरुत्रंगशवक्रायाविकावलकल
समस्तविकावलसंशकशलसा जिह्महासिय
हीनविकानशलसासाध्य

थयाविकित्सा
सर्वांससद्युतलक
नादिदिफनालकयकावलज्जनसदादि
वामदवादिवदया०
कामलादिराजनापचात्र
किनियामनप्रसन्नयायनानृहणादिदयाय
गत्यादनादिराजनापचात्रादि
गजगान्निविधिनगानिकर्मयाय
धनविरुत्रंगनागयालकलविकित्सा
ब्रूधाय ४०॥
पूनर्वादिनाजानदना
किनियानृननागयाउत्पलिंगथशलधक
मूनिनकानागुलयास्रूपनिर्णय

15
शूलनगरीनसुधास्रसंधाउदुमलयायुविचारयग

द्विविधशूलविचार

द्विविधशूलयादासविकारविज्ञ

धयाविकित्सा

थैलिकशूलसद्युगात्यंगक्रिया

प सकरुवातशूलयाउद्धनेलसस्रदादिक्रिया

गमद्युतच्छुदादिनधूपयाय

शूलद्वययासामान्यविधि

हविदादियिष्ठ

शुंभादियिष्ठ

शुंणकल्कादि

श्रानाहवागकप्रतिपानादि

धनद्विविधशूलनागयालकलविकित्साश्रुआयज॥

यूनर्वादनाननठना

श्रानदनागयालकलगथ

मूनिनकानाश्रानदनागयाउत्पलिलकल

शूलश्रानदनागयापताप्रकाशद

सानदनागयाविकाललकल

धयाविकित्सा

यातःकालसविचारदि

दिनादिविचार यग

पंचलवलयकसूनापानादि

षष्ठिकादनादिशजनापवात्र

कषायनिकादिकवल

नजावत्यादिकवल

नेलपानप्रयाग

137

धर्मसुलभमवदनागयालकलविकित्सा
 अथयैलिककृष्णमवदनागयानिबुपल
 यैलिककृष्णसानवदनागयाउत्पलिलकल
 धयाविकावलकल
 धयाविकित्साकपायाथ्य
 प्रागःकालसंसृष्टगणकनगाल्यनराजन
 मृदीकादिनूनपान
 यिलघ्वरुहनादिक्रिया
 धर्मकृष्णसानवदनागयालकलविकित्सा
 अथवागयकृष्णियाकृष्णनाममवदनागयानिबुपल
 प्राकृष्णमवदयाउत्पलिलकल
 धयाविकावलकल

धयाविकित्सा कृपायाश्च
 सिन्धु राजनादि
 पंचलवल्गु सूत्रापानादि
 तैलमांसादि दृढनापचान
 वस्तिकर्म
 धनयाह्नगन्धनदवागयालकलविकित्सा
 मूथनकगन्धनदयानिबूष
 नकगन्धनदवागयाउत्पलिविकानादि
 धयाविकित्सा
 गतधौनघृताख्य
 खड्गनादिमिथितजलपान
 धनयनायकावगन्धनदवागयालकलविकित्सा
 मूथयवगलुवागयाविकित्सा
 यवगलुवागयालकल

ध्यासाधन
नैलाख्यं गवकविश्रवनादि
धर्मयवर्ग उवागमध्याय
मूथगीतस्कनत्रागयाविश्रव
गीतस्कनत्रागयाउत्पाहि
ध्याविकात्रनिवृपन
ध्याविकित्सा
निर्वातस्कनसकिगितय
मिच्छक
मिक्कममव
उम्भनलनसर्वाभलप
उम्भपवानराजनादि

धर्मगीतस्कनत्रागयालकलविकित्साध्याय १३॥
पूनवदिवाजानकनाकुविधाषयासाध्यासाधुलकलविकित्सा
गएधधक

अथकसिहानकाकयाविश्रव
कसिहानकाययाकात्रल
कसिहानकाकयाविकात्र
ध्याविकित्सा
पूरुलिसकिगितयक
धृतसक

कीनवृकयाखालादूदूवनावतानक पय ८४
हविडादिलप

मधुनादिआहाननक
पूनवदिधलवैयावनाखसखयक
मत्स्यादिकादिशोजन

धर्मकसिहानकाकयालकलविकित्साध्याय १४॥
पूनवदिवाजानकनाकुविधाषयासाध्यासाधुलकलविकित्सा
गएधधक

१५२

पय ८४

गएधधक

मूनिनकाना
विसर्पिकादि जिह्वायकानकविदाष
धयात्रसाध्विवार
साध्वलक्षण
कविदाषयाउत्पलिकानन
विसर्पिकाकविदाष
मणुलीकविदाष
दङ्कमहादङ्किकविदाष
धनयुलियाविकान
धनयुलियाविकित्ता
नकविष्णवनादि
जागसूकानामकविदाषयालक्षणविकानविकित्ता
नैलपानादि

पिहकानामकविदाषयानिर्लुप
रुल्लिकानामकविदाषयानिर्लुपविकित्ता
उन्नमिकानामकविदाषयालक्षणविकित्ता
विचर्चिकानामकविदाषयालक्षणविकित्ता
हलपूथीनामकविदाषयालक्षणविकित्ता
कित्तासिनीनामकविदाषयालक्षणविकित्ता
कविदाषमर्षनिपातश्यावत्रसाध्वश्याविवार
कविदाषयाउपाययायकवेधयापर्ससा
धर्तंकविदाषयाउपायनिर्लुपनूधायजग
पूनर्वाद्यजातनठनायुसथाठकिगियामृत्पूश्यजिमठाना
वनसथाठकिगियाचानयानवलवक्तगथशला पयुज
वनसथाठकिगियनिसचानयानअमसर्वानाव
विकानशयिव॥

15
 10
 5
 जानयायाविकानलकलधसम्युर्मुनिनकाना॥
 दनविशगनकषायादिषुसंसंयूकश्वपृथ्याविवान
 पृथ्याद्वश्रुदिवलुविवान
 नयागुलिमृहिकापययश्वविकान
 मृहिकायाश्रुजीलुविवान
 प सुसचादकिणिपनिसनचानयानविकानमश्वविवान
 मृहिकायाश्रुजीलुविवान
 भवतायकात्रलकानल
 दोहदयाविवान
 गविनीमाकिनचानवयाविवान
 चानवक्रामाकियाकनानचावक्रायाविवान पपप
 वृकलंमदिनयिवविवान
 यथाकाचादकिणिनचानयियाविकान

धनसुसचादकिणिपनिसनचानयिवयाकात्रल
 श्रुथग्रमसचादकिणिपनिसनचानयिवयाविवान
 पथमपथमविवान
 किमिन्त्यादिदयूविवान
 कीनश्वविवान
 नानात्रांगउत्पलिशयिवयाविवान
 चामनकताविवान १५३
 ग्राम्यकिनियाचानयिवयाकात्रल
 चानयानजायलपविकानयाचिक पपप
 चानयाविकानयासाध्यासाध्यविवान
 चानयानकिणिसियूविवान
 श्रुथमृहिकारकलयाचिकित्सा
 तैलसकादि

१५ वरुणसूक्तपद्मयावर्तखनधकावकिमिच्छयक
 निर्वर्तिगालासकिगितयावर्हिक्कादिधूपविय
 हिंक्कादिधूप
 पिष्यत्यादिपिण्डकवल
 दन्त्यादिपिण्ड
 १० वालिकादिपिण्ड
 पाभदिपिण्ड
 आनाशकवसिद्रान यन् ८२
 आनाशकनिबृहादि
 ५ पंचलवलयकपिष्यत्यादिसूत्रापान
 मूर्जशृषादिशजनापत्रात्र
 थगमृलिकाशकलयालकलचिकित्सा मृथायज्ज

१५ एनर्वाटनाजानकनाग्रहनीदाषनाम
 मूनिनकानाग्रहनीदाषनिबृपन
 वातग्रहलीलकल
 वायूयाकापनविषमकवादियाधूविचान
 धपाचिकित्सा
 पंचसूतादिकोथ
 हिंक्कादिपिण्ड
 वातगुल्माकाकाथादि
 वातकविधाननिबृह
 धर्मवातिकग्रहणीयाचिकित्सा
 मृथयैलिकग्रहणीयालकलचिकित्सा
 मृत्सादिनसपान
 घृतपानादि
 x x x

किनातनिकादिकाथसद्युतपाक पत्र २०
 अथकरुग्रहणीभागयालकलविकित्सा
 जम्बादिपानविधि
 सर्वदातविकानसग्रहणीदीपनविधि
 विनकयाविद्यान
 प पयमूलादिचूर्ण
 हिंमदिपाक
 किमिन्द्रादिउपाय
 नानाविधदूधपान
 धनग्रहणीभागयालकलविकित्सा अध्यायजना
 अथश्रामशगयाविद्यान
 श्रामविकानयाउत्पत्ति पत्र २१

श्रमिमन्दशयिवविद्यान
 श्रामयालकल
 ककुसाश्चश्राम
 श्रामशगीकाकिगियाविकानलकल
 नसक्तानसश्रामयकापयालकल
 श्रुक्तिधउसश्रामयकापयाविक्र १७४
 दाकल्ल्यादिसश्रामयकापयाविद्यान
 धयाविकित्सा
 स्वदादि
 उष्मादकादि
 सिद्धादिपिण्ड
 चूर्णनिष्ठयथाग

15
धतः श्रमः गगनालङ्कारः विक्रितः श्रद्धायः ॥ यत् २२
यूनवदिनः जानकना किं निया किं मि काष्ठः गगनानिदान
मूनिनकाना किं मि उत्पत्तिः शिवयाकावन
किं मियावर्षः विद्या
किं मियाः कावनः निर्भुय
किं नियाः श्रुत्यः नवसः किं निनः नयिवः विद्या
किं मिः गीशः वक्रः किं नियाः विक्रान्तः कल
अथ किं मिः गगनाः विक्रितः
कृतः जादि काथ
शलातः कादिकवल
काकादः न्यादिकवल
मन्दुकः पञ्चादिकवल

कटुः नाहिल्यः दिनिः ब्रुह
कृतः कादिनेलानुवासन
सूचदिनेल
यवानिः मादिलः जनापचाय यत् २३
माषयवसादिना जनापचाय
धतः किं मि काष्ठः गगनालङ्कारः विक्रितः
श्रद्धायः ॥
यूनवदिनः गगनाजानकनारिः कावलः हियान
किं नियायुः स्किगः थमः शलधकः कीनः गथः शल
रुनः कयः गगनः थशलधसमः श्रुद्धादयः कमात
धकः कठना मूनिनकाना
कयः गगना उत्पत्तिः कल
कीनः दूर्वलयालङ्कारः

15
दूर्ध्वलयाथगायकावशद
कयभागयाजितायकावशद
दूर्ध्वलयालकण
दूर्ध्वलयायिक

10
प उपधाननदूर्ध्वलयालकण
स्वरावनदूर्ध्वलयालकण
भाउकयश्वनिमिहिनदूर्ध्वलशयिवयाविधान
भाउकीलयालकण यव २४
नककीलयालकण
कीलमांसयालकण
मदकीलयालकण
मूक्तिकीललकण
मजाकीलयालकण

शुक्रकीलयालकण
दासकययालकण
कीलपिरयालकण
करुवातकीलयालकण
शुष्मकीलयालकण
करुपिरयकापनवायूकीलयालकण १७७
दासकययिक
भाउकयनवायूयकापयाविधान
नाजयकायालकण
गमभागयाभूथ
कयभागयाभूथ
दकयजायनियावचनकयभागशल यव २७
वद्ययाप्रपविधान

15
वदयाकृष्णपदसकयश्वर्थगुक्कपदसद्विश्वर्थ
किनियाकयवृद्धश्वविद्यान
कयवागयासाध्यासाध्यालक्षण
कयवागयाचिकित्सा
10 नसकयश्वयाजगतादिमृगपक्षियामांसनसतानक
नककयसजगतादियात्रकतानक
मांसादिकयश्वयामांसनक
महिषादिमांसनवसवानदयक
भदकययामदसंयूकमांसनक
5 अस्त्रिकययाश्रुक्तियूकमांसनक
मज्जाकययामज्जानक
गुक्ककययामज्जादनाद्युतदूधनक

दाघयाचिकित्सा
किनियावलसायोवयाय
कीलयाचिकित्साविद्यान
किनियाश्रयसत्वादिपवीकायाकावचिकित्साविद्यान
यथास्तुनादिविद्यान यम २३
विद्यमध्वनादिशाजन
ग्रीयल्लुदिनिष्काथ
सूथवलकिण्णाल्यादनादिशाजन
वृक्षविण्णदिशाजन
वक्त्रवाकादिमांसनमशाजन
गाल्यादनादि
मदादिपाकघृतगर्कनासंयूकयादनकसूथ
गुक्कवर्धनादिघृतादिशाजन

कवीनादिराजनसर्वकयया
 आगन्तुनागयाराजनादिविद्या
 मादकदयकविद्या यत् २१
 ग्रहणीदीपकमादक
 कवीषयथाग
 कवीषयागुण
 वाजिकवीषयागुण
 मृगयागुण
 आसकगुण
 आसकथाग
 कवलयायमान
 सिद्धाषधयाग
 स्वर्गमुकादिकवल

य

उग्रल्लादिकवल
 ग्रीयन्मादिउषधीमांसवृद्धिरुयकता
 कलुकाविकादिउषधीग्रहणीदीपनरुयकयता
 गलीनादिकवल यत् २८
 कलुकावकादिकवल
 जीवन्मादिकवल
 दाहिमादिकवल
 गिनीषत्वचादिकवल
 ककुनादिकवल
 गल्लुकादिकवल
 दीफादिशुयकताउषधी
 अनन्तवादिमदकीणयावासल
 पूगकादिमांसवर्द्धनयाउषधी

१७७

15
 10
 5
 युतिकादिडोषधीकलधाठया
 कदम्बादिकवल
 वृक्षविष्ट
 मृगधरादिपाक
 वृक्षदियायमान
 सवर्तनवर्त
 दीपनीयकवल
 महाषष्ठादिधूप
 पाभयाकवल
 मृकालादिवाताध्मातयाडोषधी यय २२
 उन्मूयुकादिडोषधी
 कालपानविधि

१३०॥
 मृनिदीपनचूर्णविष्ट
 चूर्णविष्टनकयाकालसूक्ष्मवलक्ति
 निम्बत्वचादिडोषधमद्यानिया
 एनञ्जदिकवल
 सूवर्चलादिकवल
 धनकीलध्माठयादिनकयभागयालकलविकित्तामृक्ष
 पुनर्वादिवाजानठनामदहायूलकलगणधक
 मृनिनकाना
 मदहायूयावातादिहातायकावकानका पन १००
 सीयादिचकृदणमदहृष्ट
 वातिकमदयालकल
 वर्षाकालसहावगुलिवातिकमदधाय

15
 10
 5
 प थैलिकमदयालकण
 नप्रकालसथैलिकमदहाय
 लक्ष्मकमदयालकण
 लक्ष्मिकमदहमनकालसहाय
 नकट्टिजायलमदयालकण
 ग्रीष्मकालसनकविकारमदहायव
 सन्निपातमदयालकण यव १०१
 मिश्रगंधमदयालकण
 श्रुतिजनमदयालकण
 हर्षनमदहाययालकण
 पाविनामिकमदयालकण

निसर्गजमदयालकण
 मदहाययाविक्र
 संगार्पजायलयमदयाविक्र
 थैलिकमदयाविक्र
 सौर्यजमदयाविक्र
 धतमदहउपकान
 श्रुथमदयाविक्रिस्ता यव १०२
 वातिकमदयाविक्रिस्ता
 पंचलवलयकसूखादकपान
 तीक्ष्णकवल
 माषचूर्णुदियाग
 नैलपान

१५१

कामलहृत्पदिकवल
धन्योत्तिकमदयाविकित्सा
नूथयैलिकमयाविकित्सा
सुधापूरालिस्किनिहयक
याकगुलिगलसकून
किनियाकासधनयानलखहायक
विसमृद्धालादिकवल
खड्गनादिउपयान
पदुषकादिपान
हृत्पदपरिदिशजन
षष्ठिकानादिशजन
मृत्नादिनकमतवविद्यान

द्युतपानादि
धन्योत्तिकमदयाविकित्सा
नूथयैलिकमदयाविकित्सा
कटुतेलेनसर्वसिस्क
नीकादिकवल
डाकादियिण
आनन्दधदिशजनापयान
धन्योत्तिकमदयाविकित्सा
नकयाविकानगमदहायूयाविकित्सा
मृत्पूषादिपान
यैलिकमदाकउपाय
सनिपातयाविकानमदहायूयाविकित्सा

x x x

लवणविषयल्लादिचूर्ण

सौधूपानादिउपाय

धृतनानाप्रकाशमदहावयाविकिसालकलपण १०३

श्रुधाय ३१॥

प

श्रुथकर्णकमसकमिजायलपूयाविधान

कमियावल्लुविधान

कमिनदाप्रशवककिगियाविकानलकल

कमियासाध्यासाध्याविधान

धयाविकिसा

हृगवाजादिकल्कप्रलप

वर्लिप्रयाग

कमिनग्रन्थिदयकडायाउपाय

कमिध्रकवलादि

कट्टकादिपानशजन

धर्तकर्णकुमिनागयालकलविकिसा

श्रुधाय ३२॥

श्रुथकर्णनागयालकलविकिसा

कर्णनागयाउत्पलितकल

१०८

कर्णनागशवककिमियाविकानलकल

करुनकवातनजायलपूकर्णनागयालकल

धयाविकिसा

हृगवजादिचूर्णनसनकर्णसक यण १०४

कालीमधकादिकल्क

मधसिखदिभेलनकर्णसक

गलीप्रमूलादिकर्णपूवण

15
 10
 5
 ययोपुत्रीकादिकल्लोत्त
 नस्यकर्म
 जेलयकादिधूप
 राग्यादिराजनापचान
 श्रीकावादिनस
 जलावगमहादिमतव
 धतकलुनागयावि कित्तालकलश्रुध्याय ३३॥
 श्रुथरुकाकन्दनामनागयालकलविकित्ता॥
 रुकाकन्दनागयाउत्पलितकल
 रुकाकन्दनागीशडाका किगियाविकावलकल॥
 धयाविकित्ता
 श्रुसनपानादि

वयादिकवल
 तजावत्यादिकवल
 विगुकादिकवल
 कट्टकादिकवल
 मूर्मरुषादिराजनापचान
 धर्मेरुकाकन्दनागयालकलविकित्ता श्रुध्याय ३४
 पय १०५
 पूनवदिनाजानकनारुकासापनूद्ययालकल
 मूनिनकाना किगियाज० नानियाविचान
 ज० नानिस्ववृथलकल
 ज० नानिननयाउलिपकयाय
 अमिसूर्यशामात्मकलकलनीनया

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

मन्त्रादि या कनानरुक्मसापयूद्धया विवाच

रुक्मसापयूद्धया गया उत्पलितकण

रुक्मसापयूद्धया गीशवक्त्रे किमियालकण

धया विकित्ता

पंचमूलादिये निधान

ग्रहणी दीपन

विषाखादि नैल

सर्पचलवर्णं शुभदिकवल पृष्ठ १०७

यवसादि राजनापवान

धनरुक्मसापयूद्धया गयालकण विकित्ता मूलाय ३५॥ एषा नाकादि प्रदह

यूनवर्दि राजानकना द्वाली कनामसारुवा गयालकण गथा॥ स्नेहपानादि

मूनिनकाना द्वाली कसारुयालकण

वानपिलक रुक्मसापयूद्धया कनान

काना यका न्दाली कना गशयूवपथस

वातिक द्वाली कयालकण

वातिक द्वाली कशवक्त्रे किमिया विकानलकण

धया विकित्ता

मालत्यादि पाक

नाली स्वदादि

गुल्लादि प्रदह

नाकपञ्चमदि पाक

एषा नाकादि प्रदह

स्नेहपानादि

१३२

नकमाकलादि
धनवातिकडाणीकयालकलचिकित्सा
मूथपेलिकडाणीकयालकलचिकित्सा
पिरुनधाडुप्रकापलकल
डाणीकनम्वयथुनागशायिवविचान
म्वयथुयावर्तुदाहादि
धयाचिकित्सा
दवदाव्वादिप्रदह
म्वमादिपाक यग १०१
कृणमूलादिप्रदह
नकमाकल
म्ववल्कदिकषायचूर्ण

धनपेलिकडाणीस्ययथुयालकलचिकित्सा
मूथकरुडाणीकम्वयथुयालकलचिकित्सा
करुप्रकापचिक
उदमम्वयथुचिक
धयाचिकित्सा
गमयादिस्वद
काकादन्यादिलय
कृष्णदिलय
पूतर्तुवादिप्रदह
निम्बपत्रादिशजनापचान
नकमाकल
कट्वाहिल्यादिचूर्ण

कृष्णध्वविचार
 स्वदनार्थगदिप्रकार
 विवर्णीयाकडाणीलधन
 धनकरुडाणीस्वयथूयालकलविकिसा
 मूथनकडाणीस्वयथूयालकलविकिसा
 नकयकापचिन्न
 कदयल्लरुचिन्न
 धयाविकिसा
 सिग्धगीतलादिराजनापचान
 तिन्दूकादित्वक्लपपाक
 नकमाकल
 पूर्वाकिचूर्ण पन् १०८

धयथूयानकाधिसुनादिविचार
 धननकडाणीकधयथूयालकलविकिसा
 धनवातादिनयताप्रकारधयथूयाविचार
 मूथसनिपातडाणीकयाम्धयथू
 डाणीकधयथूयालकल
 धयाविकिसा
 वनाहादिमूक्तिनस्वद
 तिलचूर्णुदित्वद
 टरुधूमादिचूर्णु
 मूर्कपनादिचूर्णु
 कृष्णदिलय
 सिग्धमूलादिप्रलप

१३०

काकादन्तादिप्रलय
निम्बादिपाक
श्रुवापादिपाकप्रलय
उपनाहनविधि
आतिष्मत्यादिकाथयान यन् १०२
पठालयनादिशूष
गाल्यादनादिशजनापचान
धतडाणीकगाल्यालकणविकित्सा श्रुवाय ३३॥
श्रुथश्रुतिपातगजलकण
श्रुतिपातयाविद्र
श्रुतिपातविकान

श्रुतिपातनग्ननाग्नदिशयुविवान
कण्ठादिविकान
धयाविकित्सा
दानुल्लदिकर्मनिवृत्ति
माकिं सिजनायउसकायक
पूखलिसकायक
रुतंसमसानक
कामलहल्लदिशजन
शूद्रकवल
मदिनायानविधि
षष्ठिकादनादिशजन यन् ११०
मांसवगवान
वस्तिवृद्धल्लदिकर्म

धर्मश्रुतिपातनागयालकलविकित्ताश्रुध्याय ३१॥
 पुनर्वादिवाजानठनाकातायकात्रुलमयालकलगथ
 मूनिनकानावातादिर्ययकात्रुलमयाउत्पलि
 वातगुलमयाउत्पलितकल
 वायुयकायनगुलमश्रुयिविवात्र
 वातगुलमश्रुयिकिसियाविकानलकल
 धयाचिकित्सा
 पुनिकादिनसयान
 गलीनादिकाथयान
 नाहिषादिकाथ
 कषुलवलादिकाथ
 मधुसिञ्जदिकाथनसयय ॥१॥

कामलगाल्यादनादिशजन
 धर्मवोगुलमयालकलविकित्ताश्रुध्याय ३८॥
 मूथपिरुगुलमयालकलविकित्ता
 यिरुगुलमयाउत्पलि
 यिरुगुलमश्रुवक्किनियाविकानलकल
 धयाचिकित्साकर्म
 उगीनादियान
 यियालादिपाक
 कथिजलादिमांसशजन
 ग्रामाकादिग्राम
 धर्मयिरुगुलमयालकलविकित्ता
 मूथश्रुमगुलमयालकलविकित्ता

१३१

१. लक्ष्मणुल्लयाडत्यलि
 २. लक्ष्मणुल्लयवक्तुकिरियाविकानलकल
 धयाविकित्सा
 हविद्यादिका०
 व्याख्यादिका० पान पृष्ठ ११२
 चित्रविल्वपत्रनैलपान
 प्रसन्नजनादि
 वंगपत्रादिराजनायचान
 धर्मलक्ष्मणुल्लयालकलविकित्सा
 मूथवक्तुल्लयालकलविकित्सा
 वक्तुल्लयाडत्यलिलकल
 धयाविल्लुल्लयाकपकानलविकित्सा

सर्गादि का ० पान
 ग्रीष्मदि का ०
 धर्मनकगुलमयालकलविकित्सा
 सनिपातगुलमयालकल
 वातदिथवंथवयकावविकित्सा
 धर्मवातादि कातायकानगुलमयालकलविकित्सा
 मूत्राय ३२॥
 मूत्रद्वडागयालकलविकित्सा
 द्वडागयास्ववृष
 वातिकद्वडागयाउत्पलि
 वातिकद्वडागशयिकयाविकानलकल
 थयाविकित्सा
 सामूद्रकादिपंचलवणपान

वचादिपान

कटकादिपान पृष्ठ ११३

ककटवृक्षराजन

धनवातिकद्वडागयालकणविकित्सा

मूथयैलिकद्वडागयालकणविकित्सा

य

यैलिकद्वडागश्वक्कयाविवाव

धयाडोषधी

गिनिवगकनादिनसपान

जंगलमांसनसराजन

धनयैलिकद्वडागयालकणविकित्सा

मूथकरुद्वडागयालकणविकित्सा

करुद्वडागयाउत्पलि

करुद्वडागीश्वक्कयाविकाव

धयाडोषधी

निकादिकवल

गल्लकृदिकवल

कपित्कदिनसपान

मृगमांसादिराजन

१३२

धनकरुद्वडागयालकणविकित्सा

धनवातादिस्वगाद्वडागयालकणविकित्सा

मूथायन॥

मूथगमद्वडागयालकणविकित्सा

वातादिगमद्वडागयालकणविकित्सा

वातादिगमद्वडागयाउत्पलि

वातिकगुणगोशुवक्त्याविकान्वित
 ध्याविकित्सा
 द्युततेलादियनिषक
 सहपान
 प्रतिपानविश्वनादि
 वातघ्नहृणदिशजन
 शूलपादि
 स्वदनकसाकणदि पृ० ११४
 उपलब्धविधि
 कपिन्नादिपाकनालीस्वद
 मूल्यगस्वदयाकावश्वसर्वगपसक
 शूलिमादिपाकलघ

शूलश्चदिप्रलय
 पंचमूलादिप्रदह
 तैलद्युतादियान
 वलादिनसपाक
 द्युततेलादिपाक
 द्विपंचमूलादिस्वह
 वस्तिकमादि
 उदकसकादि
 शूनिकमादि पृ० ११५
 शूनिकसमायतापनीकाविचान
 शूनिकाहापकनल
 शूनियालिखनविधि

यत्रिमर्दनादि
 उपनाहस्वदादि
 धनवातिकगुणगया
 लक्षणविकित्सा
 मूथयेलिकगुणगया
 लक्षणविकित्सा
 घिरुप्रकापयोचिक
 येलिकगुणगश्वक्त
 याविकान्वित
 ध्याविकित्सा
 सूनासंयुक्तद्युताख्यग

तैलादिलय
 मृन्मलादिगुणलप
 पद्मासुनादिलप
 पद्मकाशीनादिलप
 सालिवादिकल्कलप पृ० ११७
 जीवकर्षणादिघृतपाक
 घृतमृन्मादनादिशजन
 नीतलपदहादि
 धनपेलिकगुणगयालकलविकित्सा
 मृथल्लक्षिकगुणगयालकलविकित्सा
 ल्लक्षिकपापयालकल
 ल्लक्षिकगुणगशवक्रयाविकान

धयाविकित्सा
 विलादिलवद
 तैलाद्यंग
 यवसर्षपादिगुणगयाकनयदह
 मृत्तगीतिलादिगुणलप
 मृजादिमृगयाकनगुणलप
 मृगलमासादिशजन
 लवणमधूयूकसूत्रधान
 धनल्लक्षिकगुणगयालकलविकित्सा
 मृथविषमविदाषसंनिपातगुणगयालकलविकित्सा
 सर्वधुवकापनसंनिपातशयिवविकान
 संनिपातगुणगशवक्रयाविकान
 धयाविकित्सा

१३३

नक ग्राव शलसा पिलसा हाक यका व लय द हयाय
 वसा नैला दिन ग म स क
 ष ठिका दिपाक
 सहादि काथन ना गी स्व द
 सुवच्चिका दि ल म म क्काथन ग म स्व द सक प १११
 पा ० दि य ल य
 नक ग म ल्या दना दि राजन
 ध न विधा ष सा निपातिक म ग ग या ल क ल वि कि त्सा
 पुन द्वदिना जान दना कि सि नी यु ग म ना दिन ग म ग या ज्य कि
 ग र थ ध क च ल नाय का व ग म ग या ग र्ग र्ग वि च्चु नि वि र्ग ल ष
 सा ध्या सा ध्य य त्या क य र्ग म धि क्क ना दि थ स म र्क मू क्क द य क स
 वि श्र य मा ल ध क

मूनिन काना
 कि सि या ग म ग या ग न ना य का व
 आ ग लु ग म ग या ग
 दा ष ज ग म ग या ग
 आ ग लु ग म ग या ग या जि म न ना ड त्य कि
 ष ठा वा ध ६
 दा ष ज स्व द्रु य
 दा द ल म त्य कि नि र्गु य
 स्व ल ना दि नि र्गु य न प ११८
 ष ठा वा ध नि र्गु य न
 र्ग नि र्गु य ल
 दा ष ध नि र्गु य ल
 मू न स्व ल न नि र्गु य ल

15
यत्ननयंभदिनिवृपण
श्वयथुधदनादिवातविकान
पनिस्तानलकण
विस्तषलकण
संगलकण

10
प तलसंगदिनिवृपण
सर्वसंगलकण
रुनयोसाध्यासाध्याप्रत्याख्यादिनस्वतायकान
असाध्यालकण
गीताश्रुदिविविधकिया
श्रुगनुगमवनागयाविकित्सा
गीतलजलनगवसक यय ॥२

गजगलनासवाथिलगच्छादिकामलपूथनगयादयक
गीतलजलनयविसक
रुंदादियलप
यकादियलप
नलर्वशलादिगमलप
कूमदात्यलादिकलकनगमलप
यवतिलादिगमलप
पातगलादिगमलप
यदहादिप्रथाग
वलादिकाथनश्रुत्यमपानादि
यवगलादिदूषुसद्युजलपान
गतधोतद्युतार्यग

१३४

15
 चन्दनादीनादिगन्धयुक्तं
 मृजवनादिमृदुपाकनग्नार्थग
 काकात्यादिपाकपान
 गन्धसद्युक्तार्थग
 10
 मृदिषादिपाककल्कनग्नयुक्तं
 नलवर्शलादिगन्धयुक्तं
 गन्धदूषनादिपुष्पकोथनमृत्तयुक्तं पानादि
 गन्धमहिषादिमृत्तयुक्तीषकाथ यय १२०
 वाक्त्रिकादिगन्धयुक्तं
 5
 प्रवकायनादिमांसनस
 नकगन्धदूषनादिमृजवनादिमृत्तयुक्तं पान
 धर्मधनविग्रहादिगन्धयुक्तं विकित्सा

धर्मधनविग्रहादिगन्धयुक्तं विकित्सा
 पुनर्विद्वान्जानकनागन्धयुक्तं पान
 विकित्सा नद्रूपविकित्सा गन्धधक
 मृत्तनकाना
 किमियागन्धयुक्तं मृत्तवादिनजिमृत्तयुक्तं पान
 मृत्तयुक्तं पान
 मृत्तयुक्तं विकित्सा
 सिन्धुदिपाक
 नाठीस्वद यय १२१
 कूटजादिपाकननाठीस्वद
 माहिषादिमांसननाठीस्वद
 मृदनादि

× × ×

कूलकादिपावननालीखद
खलखद
निलसर्षपादिबुलुनलय
खनवीजादिकल्कनपिलुखद
दवदावादिपिलुखद
सहास्यग
यवकोलादिनेलपाक
मूननादिनेलगर्भ यव १२२
थुलिसहयानयास्क
थतस्कवगययाचिकित्सा
अथनियानलकण
नियानचिकित्सा

निधिष्वग्गलकण
निधिष्वस्वपलकण
निधिष्वयाचिकित्सा
द्युतनगगुप्तक
गंलीवजलसेकिसिखयक
लाखनथाकायावद्युतगकुनगगुप्तक १३३
मृहिकानगगुप्तक
कूकूटालुमिग्रसूनायान
कूकूटालुमिग्रसूनायान
थतनिधिष्वग्गलकणचिकित्सा
अथविहृतगगुप्तकगयालकणचिकित्सा
विहृतगयालकण

ध्याचिकित्सा
पत्रिणमनिवावणसूखगया
नैलपविषक
कुत्सायादित्यद
द्युतनैलपानमर्दन
धनविहगगगगयालकलचिकित्सा
मृथम्राहगगगगयालकलचिकित्सा
म्राहगयालकल पय १२३
म्राहगयाविकावलकल
ध्याचिकित्सा
नैलनसर्वमसक
नकायादिक्वाथननाजीस्वद

यवचूर्णदिप्रलय
नैलयकमृजाकीवपान
सुववछनसचनमर्दनादि
धनम्राहगगगगयालकलचिकित्सा
मृथमृनगगगगयालकलचिकित्सा
धनगगयासिडत्यलिलकल
मृनगगीशवक्रयाविकान
ध्याचिकित्सा
उमृकैलनगगलय
नाजीस्वद
मर्दननैलजलयान
गिप्रवगगदिपाकननाजीस्वदप्रलय

धनं नृनग्नगयालकलविकित्सा
मृथसंकुचिनग्नगयालकलविकित्सा
संकुचिनयालकल
धयाविकित्सा
तैलनग्नगसक कसकृता
मृवग्नवदिनाजीस्वदमदन
तिलसर्षपदुर्लभ
वयादयादाकनवनवावदयक
वहललपयानादि
वृहनादिकिया
धनसंकुचिनग्नगयालकलविकित्सा

उग्नग्नगयालकलविकित्सा पृथ १२४
मृथम्लानग्नगयालकलविकित्सा
म्लानयाउत्थलिलकल
धयाविकित्साकल्प
उश्रुद्युतनग्नगसक
निचूलरुलकल्कयलय
मांसनिर्हृदि
मृक्किरालस्वद
धनम्लानग्नगयालकलविकित्सा
मृथमृवग्नगयालकलविकित्सा
मृवग्नगयाउत्थलिलकल
धयाविकित्सा घृततैलसकनाजीस्वदादि

१३४

निवादि नग्नगयालकलविकित्सादि
मथि नमाठनग्नगयालकलविकित्सादि
उन्मथि नग्नगयालकलविकित्सादि यत् १२१
द्विविधउन्मथिगयालकल
विमथग्नगयालकलविकित्सा
एका नग्नगयालकलविकित्सा
किन्नग्नगयालकलविकित्सा
किन्नलकल
किन्नयाविकान
किन्नयाविकित्सा
द्युतनसर्वमिलप
वन्दनादियुलप
जलसकद्युतार्यगदि

स्वदादि यत् १२३
जलयान
किन्नवनगयालकलविकित्सा
धनकिन्नग्नगयालकलविकित्सा
मूथविद्युतग्नगयालकलविकित्सा
विद्युतलकल
विद्युतयाविकान
विद्युतयाविकित्सा
द्युतसेकपलपादि
कीनवृकादियुलप
नालीस्वद
गमधूमवृक्षदिवरुतयुलप

शालस्वद
तिलसर्षपचुर्बुदिकल्कलय
घृतकीवादिपानवसिकर्म
थतविद्युतगवनागयातकलचिकित्सासूक्ष्मायन॥
ॐतिशुद्धनागस्कनद्वितीययापनाक॥ ॥ पृष्ठ १२१

१३१

प

रुक्मिणीयनं स्निग्धं चिह्निलं रुनिलं गुणं दालं स्य करं शीतं यत्री वमनि सार्थं ॥ विक्रितं मस्य शिक
 दूकपि यली मूलं विगुक वव न्दय वया भति विवा विल्व मूलं विवृद्धिं ग करं जारु यामल कोनिका थयि
 त्वा वरु र्गम वगि र्ग सो वव्व लल वल्ल न्वि र्ग याय थत् । पत्रि लम मवा स्य द धि र्ग दा डि म स र्ग मं र क ध गी
 कषाय सिद्ध काड वादनं यूक्ता र्ग जयत् । सूत्रां विवृद्धि र्ग याय थत् । रुक्मिणी वाग् (स्य का) रुक्म वः पूर्व म
 दि र्ग यं त व व त त था । अवित्रा (धन व र्ग तं रु या दि) गु सा त्व र्ग । य (था का) रुक्मिणी सार्ग क्रिया रिः सा धय
 दि व का र्ग ग्रह य च्च ना गनी सा ध्वा सा ध्वा विव र्ग ल १ नि दानं र्ग रु र्ग मार्ग मत्वा काला विता निव ॥ यथा र्गः
 लक्ष्मी सिद्धि क्रिया माल मथा पिवा । य र्ग र्ग या य था यार्ग स रि व दू कु ४७ यात् ॥ न्य व वी त्या ल का र्वा ना र्ग
 गन य वा दि त ॥ ॥ न्ति र्ग या ल का र्वा ग जार्ग र्ग द म र्ग य व व न वृ द्ध या ॥ दू द ना ग र्ग न दि ना य स र्वा ता
 या ना ध्वा या दि नी य ॥ ॥ र्ग (ग) रुक्मिणी जार्ग म्वा र्ग या ल का र्वा स्य पृ कृ ति । का र्ग दू र्ग म् द न र्ग मूर्च्छा कि नू य मृ
 कृ ति ॥ वा व र्ग १ के र्ग वि र्ग या लि र्ग १ सा ध्वा स्य । य त र्ग १ वा दि त र्ग र्ग म् (ग) न या ल का र्वा स्य ना व वी त् ॥ का र्ग
 दू र्गान् म द न का न् य दि रु द्ध य नि दि य १ रुक्मिणी न् रु द्ध य द्वा पि पि व द्वा म द ना द क । त दि द का य थ र्का

15

10

5

15

10

5

वा०

वा०

युत्रकयिरुक्कनिलान्।ससमत्कृष्टदाप्रमुमूर्च्छनागनियकृति।मूर्च्छितांनिवृत्तं वयतयद्विदयत
 ॥उक्ताकुक्रामःपततिविद्वलनिवगकृति।विन्यस्यधायतिकर्त यत्तथाकुर्वन्वत्तिवागमगायत्रयनिवका
 वदनालोहिनीश्रुत।नारिनन्दतिवीर्यानांलालावास्ययवर्हत्।वक्रप्रस्थाविलसुर्वनचवालनवीज
 त।सर्वगमगालिसीदन्तिनववायुःपययत।नवमूर्णयनीर्षवाश्रनद्वस्ययवर्हत्।पिरुवास्ययवर्हत्
 ल्पमात्रधित्रभववा।सात्रिष्टमपिगदृष्टकर्मकृत्थादितद्विदित॥नवमदनऊर्ध्वंविदित्वाकृगलारि
 षक्।सुसाल्प्यव यौदर्संज्ञात्वाकृत्थात्क्रियामिमां॥गमयनयदहास्यकल्योःकर्मद्वभनवा।गीता
 दकोवगमद्वयवातस्त्रायनंहित।नवक्रियासमाक्रान्तायथानाहःपशम्यति॥दधिमसुमणीनवयि
 द्वालोत्रांश्वसर्षयान्।तेन्निवृत्तमुदात्तथायावगमद्वयवर्हकः।गकृत्तुद्वानिब्रूहलगीतावस्त्रिन
 नर्त।यथाद्युतसमधर्ककोदरापरुसंसृजत॥ततोमोदाययद्वसिंकाष्ठनिर्वायलंहित।वदनाधधसं
 कृष्टगर्कनाब्रूयस्यती।तममोदाययत्यिषु मजाजीमत्रिवैर्यत।निर्वाणभवलरुतमूर्च्छवास्यायगम
 म्यति।तस्मादननत्रमिमान्कवलान्दाययद्विषक्।अमातकान्निर्तितीकंकयित्कानांशलादकान्

५

यरुमा वा नमः कवयस्य नारु वंति वन वा चैधः ॥ रुवन्ति वलस्य नरु ॥ रुवन्ति वलस्य नरु ॥ रुवन्ति वलस्य नरु ॥
 दृष्टय चैधः ॥ रुवन्ति वलस्य नरु ॥ रुवन्ति वलस्य नरु ॥ रुवन्ति वलस्य नरु ॥ रुवन्ति वलस्य नरु ॥
 ॥ रुवन्ति वलस्य नरु ॥ रुवन्ति वलस्य नरु ॥ रुवन्ति वलस्य नरु ॥ रुवन्ति वलस्य नरु ॥ रुवन्ति वलस्य नरु ॥
 नू ॥ रुवन्ति वलस्य नरु ॥ रुवन्ति वलस्य नरु ॥ रुवन्ति वलस्य नरु ॥ रुवन्ति वलस्य नरु ॥ रुवन्ति वलस्य नरु ॥
 मध्यकल रुवन्ति वलस्य नरु ॥ रुवन्ति वलस्य नरु ॥ रुवन्ति वलस्य नरु ॥ रुवन्ति वलस्य नरु ॥ रुवन्ति वलस्य नरु ॥
 वनारु रुवन्ति वलस्य नरु ॥ रुवन्ति वलस्य नरु ॥ रुवन्ति वलस्य नरु ॥ रुवन्ति वलस्य नरु ॥ रुवन्ति वलस्य नरु ॥
 नरु रुवन्ति वलस्य नरु ॥ रुवन्ति वलस्य नरु ॥ रुवन्ति वलस्य नरु ॥ रुवन्ति वलस्य नरु ॥ रुवन्ति वलस्य नरु ॥
 यन्तानामयादय वृद्धा कवाय कद्रु नि को म्ना मधुना लवधः ॥ यथ दश विरा ॥ गन मद्रु
 सा नू गना मही ॥ कृष्ण वाय्य धवा ॥ यथ दश विरा ॥ गन मद्रु ॥ रुवन्ति वलस्य नरु ॥ रुवन्ति वलस्य नरु ॥
 गोवर्धु जाति रु ॥ कृष्ण कमाय मधुना सा वेति च मदि ना ॥ यथ दश विरा ॥ गन मद्रु ॥ रुवन्ति वलस्य नरु ॥
 यथ वे वदि दद्रु ॥ यी रुं कमाय कद्रु का नू दानि लवि वरुं नी ॥ ॥ यथ दश विरा ॥ गन मद्रु ॥ रुवन्ति वलस्य नरु ॥

15

10

5

किंविच्छेदविदध्वारा। अथवा सलवधनगजानीरसाहिता॥ ॐ यथावर्धुता। येवनसगल
 वरुमियाकारितावध्वारा। अथवा। गनासायलकधी॥ गुर्वहिनयूनीमाचदुर्कनाचविमादिना
 मृरिकावावगगायध्वारा। निलवधनी॥ अथवा। रुस्वामी। सानोर्ध्वयनिमृगगा। मन्दप्रसक्तथ
 लक्ष्मीमृरिकाकाधुलकधी॥ नरतुर्द्वयवध्वामिहर्तुवमनूजाधियवन्वायनक्तिर्तिरुक्ता
 रुवतिविकाविण॥ नूवे॥ कसाये॥ कट्टकेसुधद्रुमसमहवे॥ नयेर्नानाविधेनागंमयकिमगर्तवन।
 नवीतनुयथा। गनगुरुणीदानुधरुवरा। जनयन्मिहर्तुकावावधरुगदानुधी॥ ॐ यथावर्धुता। येवनसगल
 वानधायकीरिता॥ ॐ यथावर्धुता। येवनसगल
 यदायययनना। गममृदिताकारकामया। ययथागंतीगर्तगुगुद्राति। धनूका। तर्थायकागगर्तयीको
 र्ददनामकायुता॥ यद्विगीरुतायवामासयकायतेरुधी। ननवालोगरवध॥ ॐ मृरिका। मयलवरा। ते
 स्याददयसंज्ञानायीना। श्रीप्रतिष्ठिता॥ निजावधवरा। नाकनूसगरुः। ययरायया॥ ययनं। धनूका
 कालरुकिनीयदिवागदी। मातुर्दददयययुमृदसमनवर्तत॥ ययकदकययवतुहवत्यतिनि

प

८१

४४

य३

ग४

5

10

15

20

25

30

मृरुकावाधतंगरीडत्यादयनिनागंश्चविविधान्खाधनागान्॥प्रसस्त्वाका न धाडा रुद्रुदि
 रायामरीगका॥श्वरुमृरुकाहानादानरुद्रुयुनमेनुच॥अम्याधामृदकाशनीदुर्कनारुवति
 किशि॥आहानयनिधामचन्राग॥सादतिमृरुकी॥मृरुकायनिधामवायदाहानेनिधवरा।
 दावेनलरुतगनमृरुकारुद्रु(एनवो०००)रुद्रुका न धीआकंयाम्या न धानिवायिनी॥गकानीमृरुका
 दातेरुद्रुद्रुद्रु॥युथकविध॥अथविक्रानिबन्धकगकानीमृनकाधियामृरुका॥एतानि विविध
 प गुणकुनिध्यागुलजायागा॥रिब(गनसुधासुधसुलीकन॥कृष्णायवागममारीगामन्दप्रसादिसा
 र्येग॥गुलार्कचिमनाश्चापियनिगुक्तमृवाहणी॥एवगायवागममारीगसुहृमा रु॥यनिगुयति॥दक्षमा
 न००वावस्माहानगगुकिमार्येगा॥रुनययूमेनहिनेयुनाममि॥हदकिनीविवर्धुमत्यवगीवक
 धरी॥गकनीमेवरा॥नास्तिरुद्रुआनचानेवविमनारु॥रुद्रुदूषनयारुश्रीमन्दप्रसादमृदादि
 गा॥वीरुप्रयागममारीग॥कृमिदूरीनिनूहति॥उवमत्यर्थदूर्नेधेयुनीसीरुलयेगवरा॥विनम
 र्मथकाअनयुक्तवज॥गगक॥अथवाचमानका॥म॥युक्तवजनाधन्विम॥रुवत्याधुय

आन३

यागनविधुयन सद्धविधानमर्ह विद्वलानागियसुखद्विजमानसभानवाद्याध्वानकृतिर्धःसगन
 १५ साधुलक्षणाकधुलीगूलविन्यस्तान्ताध्वानामुद्धमूद्धभालश्चर्यगुमारीगनसुनायविदुर्मनायाध्व
 नूयगर्जदक्षालकालेयकारिर्गो१गतकर्ममगिमानवेद्यःज्ञानरुचिचिकित्तिडाज्ञानार्थकदिद्विज्ञानवा
 दयस्कूलविद्वमेधगतकमालिगिरीसुहृदसर्वसैनसचयराज्ञायेनेकतिनदधायकालकनिवाद्य
 १० ता॥निमधुस्यवनिकोषोयानिमीमर्द्धअरुमीडक्तितायनिमधुस्ययायायविवर्तनेशागतकाकः
 गतावायु१दिप्रभवप्रणमतिवडुनप्रस्वन्नरूक्ययावकुषायुमाधतशागतकवात्रिधाकूय
 सुखाप्रनावप्रनयतागलिन्नकूयगत१सम्यकनारीगमवगमैहेता॥निवातासीवभलासीधू
 यथकासाधेसुवाहाहिगुस्रकूत्रधापीने१सर्वगीधेयवन्नये॥धूयनाभननागस्यवायुः
 ५ गम्यनि कायकशा॥नृधालेकवलान्दद्यान्मृहिकायानिब्रह्म(६॥यिष्यलांयिष्यलामूलेचि
 त्तुर्कहकिपिष्यलायवामनिवायाहीगथाकहकनाहिधा॥हनिद्वद्विर्ज्ञानिमनिवानिमलोष
 धीप्रलामधूनसीवेवगथागदस्विनीमयादवदानृगथाहिगुंशिवृतीनेनसर्षयी॥विद्वलामरुमा
 वि २

दीवनायेव नु यवानायालवोः येवहिर्यैकं क्षादयित्वा सुखं लामृदित्वा (ममयेने वधिं ठं ना गं य य नू।
 उरुनमृरुकोठुकासपुत्रीसं निनूहति॥ ययननयथा (न वि (ग वा मा य ल य वा। नूथन्य दसे दार
 यीमृरुकाया निनूली॥ दना कट्ट कट्टी वीरवा ७ मरुत जान क। गिना य य गुं ल गु ने य य पा त्त सु य द की
 (ममयेनाथ मृदिनी यि उ म सो य दा य य नू। उरुनमृरुका स नी स य ना य निनू हति॥ वात्स का न वि ठं न
 निहर्त्तु न न य य य य गुं मूलैरु नी ग द्वां द लानि नू ॥ ११ ॥ ११॥ आ मा त्र भृंग व नी च र्ग गि नी वा द नू य की
 प उलूखलं क्षादयित्वा येवहिर्यैव (११) ॥ यिं ठं उ दा य य द्दे द्या (ममयेने व म र्दिनी ययननयथा (न वि (ग
 वा ना य ल य वा। नूथन्य दसे दार यीमृरुकाया निनूहती॥ या ७ म ति वि सी हिं गुं च र्ग र रु सि नी म धि
वा हिं धी कट्ट की मूली रु धि कू कट्ट लानि वा ०० नू दा नू य य र्ग य द रु नि ड ना ये व वा वि य ली य लाः
मूलै वि गु कं ह स्ति यि य ली। गि वि नी गि वृ नी वे व वि ठं ग न्म त्रि वा नि वा॥ ये व हि र् ल वोः सा र्द्व क्षा द यि
त्वा सु लू ख ला (ममयेनाथ यी मृ द्या यि धुं सो य दा य य नू। उरुनमृरुकां स नी स य ना यी है निनू हति
ज्ञा ना रं व य थ थार्क व कि म सो य दा य य नू। अ नू क व द्द चि द्दी व कृ मि का र्द र (ये व व ड य कृ मे नि नू ह

८२

४६

म२

पि४

15

10

5

स्नानवसनमुदयवसि सिद्धो यथाथाकं निवृहं दापयद्रिषक। डयकमरुधनागं गमाग्रिह्यवृद्धिमान्।
 शुद्धकाष्ठविदित्वाथ वद्धलं कं दवावर्णं। ग्रहं लीदीयनाथेय वानप्रणमनाय च। यंचरितं लवलीः सार्द्धं विष्य
 लीमनिवानिच। मेनयं वाज्यसनां वापतिपानं यदापयत्। रुकाक्षमवमानं गं मूत्रवृषं राजयत्। ततः क
 लक्युषणया दानं कुरुयदायत्। समसुरुकं चरता राजयत् स राजनं॥ वृत्त्यवमृहिका धायः पृच्छतं
 गायकीर्तिः॥ पालकाख्यं नमसिषावात्रणं नाहिनीषिणा॥ ॥ वृत्तिपालकाख्यं गजायुर्वदमहायवचनं
 द्रुवनागस्तनद्वितीयमृहिकानामा धायः॥ ७३॥ श्रीगहिराजा चम्यायां पालकाख्यं समपृच्छति। ग्रहणी दा
 षनामानितस्यमात्रकपृच्छतः। चर्वपृच्छं गजाजनपालकाख्यं सुभाषवीगं। व्यापस्यथमस्तनसूत्रिनाय
 हणीगदाः। उद्यमहं नमः श्रुतं वदामि विस्मयं। दाषेः पृथक् समसे वीरुवंत्यनिलादिरिः। अर्थ
 हनादनाहनाहये वविषमाणनात्। कृपिनामात्रतः काष्ठं व्यापादयति पावकं। रुक्मिणमुविषाषण
 कनातिविषमद्वर्णं महापीठं तथैव गमनं विचयवसादिकं। यंचमूलद्वयकाथं वालधिववायूनः। सम
 स्नानविषादिगुलवर्णं यदापयत्। सवाधंसलवर्णं हिमं निति विषां वचां। गजमूत्रयूनं पिबुं दद्याद

तपतिर्नृपवचापि न कथमप्यवर्तते। सविर्वर्धसमूलं वा साध्वानं रुक्मिणं वद्ध। वृत्त्यवमृहिका विद्यादातजं ग्रहणीगदी३

15

10

5

स्येयधवर्त्त। काधन्वावागुत्मा कानुदापयथदन्पूर्वगणानि नामं च सैद्धन्तुत्वा स्रद्धयदायिचक्रितशदी
पनीयगण काधिसुत्कल्ले श्रयसाधिते शस्रद्धे नूयवन्नसम्यक् कलाजनादिषूयाजिते शयिवदयलुत्तर्त्त
वादगमूलगलेः सृती विविकंगतविक्रं चकभले वांसयन् ॥ सुस्निग्धमनूवाये सुतता नागं निवृद्धय
ता वागिकतविधानतयानि वृश्चकमाहृतश। रूथानूवासयदन् स्रद्धे वनिलनागने दीपनीयतया व
त्स्यात्स्निग्धलिङ्गत्वे दर्शनं। यनियादिगच्छनमाविधिः ॥ सुवदायवन्तः ॥ रूथवा वागिकया कायदुः
पणीगदवागिकाः। मूतदुर्द्धयवद्वा मिपिरु कस्यापिलक्षणीपिरुयुक्पिते काष्ठकदका आदिशजनेः
। दूषयित्वानर्त्त कथातग कदल्लेः स्वके यती सदा सवदन्ति निन्नृगूयेरि कसाधनी मूसा मलकका
गमर्थद्विपशु मधूलिका। मूर्वा च वालवित्वा निमधूर्क माषयशुपिलाधंयपूठनी कंचय क्वापायावण
यितं। गक नामधूसंयुक्तं पानं पिरुत्तकं सृती विमूकपिरु कापाय सविन वयथा जयन्ता पानं वराजन
वायिविधिं तस्ययवर्द्धयन्ता किनागनिकं रुनिर्म्बयटालं वृहती दयी मूसा वत्सर्क मूसा पाशं गजाव
ती मयि। तथयप्यठकाणी नवासा कदकनाहिणीं पक्का खनिविषां चैव तस्मिन् काथे दृगं यवन्ता गदुव्य

प

२०

कल्यसंयुक्तं पौलि कं प्रहृणी गदा न दार्षपत्यनी कं हंति नागं च पौलि की। कल्यकृपितकाष्ठस्य समानत्र
 सादिरिशा मूजीर्णं अगनादापिलिंगदाषान्तिनिदिशि ग॥ समूलकल्यपि रं वसकदासं विमूचति। यवा
 अमानं निखिलं नयदग्नि समीपतः। उं वृक्षमववृणां कृष्टस्य वधवस्य च। कषायः कालयज्ञां ल
 यथमधुना सह। प्रलालवज्र कर्षू नयनकायु नूचं दनेः। सूक्ष्मवृक्षो कर्तव्यपि यली मन्त्रिवा निच
 मासादूर्ध्वं ततः। पानं पायय दूरमा सर्वं। सर्वं वा तविका नय्युहृणी दीपय हिषक। न द्वाषह न लेभ्य
 नोक्त्या विस्त न का विधिः। वल्लं स्यादूर्ध्वं तस्मात् रुत ग्ध कमत विधां। नूना ग्धं कानयय मुग जानां द्वा
 षमिदय। यं चमूलं दयं पा भमया मार्गं सगम दूनी पाषाण रुदकं लाधं दं रु निद विहीत कं। मूर्या
 सल्लकां मूसां मूर्हा चानि विषां वचां। वली न जावनी चार्धं तथा कटू क नाहिणी। वचां कृष्टां वनी धेनी विठ
 गं मूर्चया सह। तथा कटू कर्षू वी च तथा निम्ब क नं जको। मूर्हा मी का कमाचीं च विरु की जीव क दयं। मूज
 मादां च कालां च पिथली मूल भव च। दो क नं जो तथा कं च गियु कं सा वि वाम पि। दा ठि मं नि कि ठी कं च मा
 रु लं ग म्भ व त र्मा ल व भानि च सर्वाणि सूक्ष्म वृक्षानि कानयत। सूक्ष्म वृक्षो कर्तव्यं तः समं तय साधयत

॥ संच वं च समायुक्तं नाम कं वाचिकित्य कः ॥ अतः स्वयमानि यवी द्वा द्वा वल चित् । च ४ ॥ अदि यं व वी हि
 गुरुगं समावयत् । सीधू कांजि कयुक्तं न गमू ग द वी कर्त । द धा च मधू ना सा र्धं सम म त द्वि या च यत् । यू अ
 धा । ग द्वि ज्ञान यू र्ध्वं स्मि वा च सु द कि भ न ॥ पि णी रू र्ग रि ष क क्क त्वा ग ज्ञान द या द्वि च द ८ ॥ स धा र्गं स फ न
 रं रु वे य ॥ १ ॥ सु वि ण न र्द ॥ दा त र्गं क मि का ॥ ४ ॥ व दी ण य वा न ण य वा म द दी ण य व न थ वा ग रि ना य वा
 य था य र्ध मूल र्द न र्ग वि ष य र्धं क रि मी । अ जी ण न स मा यु क्तं मा र्ग र्ग न रि ना ण य त । ग ज्ञा ना म थ वा थ
 प नां म रि । वी णं ग वा म पि । या नि ना म पि स र्धं य र्धं षा म पि स र्धं द । अ ल्प म ल्पं य दा त र्गं न व म म ॥ ४ ॥ क मि द्रः
 क मा र्ग ॥ य दा नि य रू त ग्री षा न य न न यु दा य य त् । द र्दं द र्दं वा वि ण म य नू ष ण नि सि द्ध य । क मि द्र म
 वि का य द्र पि ण क ल्प स मा क र्ग । दा य य र्धं षा सा र्धं य र्धं क र्द वि कि लि ड । ना ना वि र्धं य य ४ य । कं य द्वा ष पूर्व सू
 वि रि १ ग र्गं न ष पि स र्धं ष या ध न न द द्वा त । ग ष मू ग पु त्री ष त्वा जा नि ण षा च सा थ वा ॥ ४ ॥ य व वी त्या ल का र्वा न
 र्गं ग न य वा दि त ॥ ॥ ॥ नि या ल का र्वा ग जा यु र्ध्वं द म हा य व व न द्वा द्वा ग स न दि नी य य र्द णी दौ ना मा
 धा य ॥ १ ॥ ॥ अ नू य य व सा हा ना नु नू सि षा नि रा ऊ ना नू । अ ल्प या द स म न्दा ॥ १ ॥ स दा जा ग न ण नि गि । त दा न

२१

पञ्चमस्तु क म गि म न्द ग्य जायत। मृगि सा द न सि ग्ध ग्ध क ष्ठ ४ गु का नू ल्प रू गी। न क ४ यी ता थ रु त्रि त ४ सर्व व र्ण
 यू त रु था। वं क ण व धा उ ४ स म्भ्र म ं र्थ रि सँ क्लि त ४ ड द कं रु य धा पा ल ग ल त्वा व्र प जा य त। सँ द द नू सि क ष्ठ
 ४ द्वा नं द्वा न श या यै न व मा मा ग या ४ स्ति ता ४ म्भ्र म ल क ण सँ य क ४ स म्भ्र म ं र्ति की क्लि त ४ सु गी तं पि क्लि तं चै व
 दू र्ज न्ध क मि रि यूर्त। स यो लिं स र्व ना ग म्भ्र षा च न नृ प स रु मा। ड य क्लि ता य दा वे य म्भ्र कं ल्य त्रि क र्म रि ४ क ष्ठ
 सा ष्ठ रु व र्थ प वि ना ग य ति वा ग र्ज। ल क णं वि क्लि तं च त स्य व द्वा म्भ्र हं गृ ष्ण य मु ला ला य त्रि धा वी य त्रि त
 क म ना रु गी। मू न य र्थ क त य न रु तं स म्भ्र न ला च नै म न्द ग्रा सौ पी ना रा सँ स गू लं व मूर्ध य कू नू त मू दू ४ य
 वृ ष्ठ नि लं य ग्ध स दा ष्ठा त ४ य मूर्ध व ति। न स स्र न ग र्ग वा म लिं ग न्ध ना नि नि दि ष्ण त्। य त्रि य र्थ ४ ४ ति या
 ह्य र्थ त ट द्द म तं ग र्ज ४ द हं की दू य मा न स्य का ग मूर्ध स व द नै य क वा जी व न ग मु ष्ण लि त रु त्ति सँ ग य ४
 । या नि सँ कू चि ता ग य गू ला रु ४ स नि षी द ति। नू क ४ क ण रि न्न व च्चा मां स स्र न ग र्ग रु व त्। रु त्रि त ४ पि क्लि
 ले ४ सि ग्ध रु क ४ सँ व द्दि तं ग र्ज ४ लै र्थ मू च त य स्या स्र न ग र्ग म द सि ष्ठि ता। गु नू रु स्र नि मी ल्य कं व दू
 र्थ वि ध म ल्य पि। मू त सी कू सु मा रा सँ मूर्ध या व दू मूर्ध व ति। मृ क्लि षा उ ग र्ग वा ज नू लं ग न्ध ना नि नि दि ष्ण

त्य व र्थ मू र्ध य त्रि वी ज न ॥ ५

५ ५ ५

गानकं सकृद्वदन्त्यं मर्त्यं दूर्गन्धं यूकं विष्टं जन्मना ग॥ सर्वेश्वरगणेशं नमस्कृत्य
 विष्टं मर्त्यं च पार्थं सकृद्वदन्त्यं मर्त्यं दूर्गन्धं यूकं विष्टं जन्मना ग॥ सर्वेश्वरगणेशं नमस्कृत्य
 अथ वदन्ति सुब्रूयन्ति विष्टं मर्त्यं दूर्गन्धं यूकं विष्टं जन्मना ग॥ सर्वेश्वरगणेशं नमस्कृत्य
 यस्मिन् सा कलकं कामां समीलनं या क्य वनं नृपान् ॥ कं दूय दायं ददयं यदा हं गी तं रिल्ला वं पि
 रुसं सु॥ र्मं मर्त्यं मर्त्यं मर्त्यं वनिर्दाला लाधुर्निवाकरु दाव सं सु॥ दाषाग्नितायं खलू सिद्धि मति धा ॥ ३४
 प धिर्नयं वरु कृक सा धर्मा दा नृदयले वन नन्द सा धर्मा वि कि सिर्न न कथयामि ना जन्तानि नृप स म्य क खलू
 काल द॥ १॥ बाधी नृवयं सत्व गनी न सा मति न ॥ ययं जी न रिष क क्रिया यथा हि ना ग॥ सुमुखी रु व चा से दे य
 थ के ॥ खलू स्व द य र्क य व ग य बा पि नि वा न द॥ १॥ द कं ना ग ने द व मूलं यथा जयं त्या म वि षु द्वि रु तां सि द्धा
 सुब्रूवीं गिरु लां सकृद्वदन्ती न कनि म्व य ठा ल य र्वा द वा क नं जं मर्त्यं निव मूलं न जा वती वाल ले ग्व यूकं ॥ पि षु
 दया ज्ञ गायं त रु न ॥ स य य त सुखी ॥ वृष्णि नि षु य या ने श्व मु लिका मा य रा वि तं ॥ सा ध य र्क य था या गं सु स मी
 द रि ष ग्व न ॥ ॥ नृ नि पा ल का र्थ ग जा यू व द म हा य व च न दू द ना ग सु न दि ती य भू मा ध्या य ॥ ३५ ॥

२२

दि०

४१

५२

च२ न२

३३

ॐ ३

नूपसंसृष्टं संहि नमनि सार्थं ककु मूली वरुवति । नवास्य मूर्णं यव रुतं गश्ये वीति धार्तं समी च कमि रि नूपसंसृष्टका
 वत्वा च कमिका षीति विस्त्राय तं चिकित्से उ मूय क मंतू ॥ कूटज मूलं यव त्व व म्मथ पि चूम द्य पाणं काल्प कि वात तिक वाहि
 ली माष यर्धु कां वाजी का भन की विठंग रि क दू क गिरु ला रु ला न कं द ह नि द क र्ज जो व ति न तानि सर्वाणि सम रा ग नि
 यथा लार्नि ४ का थ र्ता न वा न ग स रु या ज यित्वा पाय यतू । य द्वा रु ला न क कूटज कं द क रु नि द्वा स्तू र्ज कां ध ति र्म कं ल व
 ण सं य का रि ४ काल काल क व लं द या तू । का का द नी का क र्ज द्या कूटजां काल्प सू म न स सं द्र य स्व र्जि काल व ण सं स्का
 य नं रु सि मूर्धं वा गो वा स । यित्वा क व लान् द या तू । मं शू क य धु उ र्ज व न य धु प य क य धु व रु ती कं ट का त्रि का । गृ ह धू
 म यि य ली रु सि यि य ली । व र्च वा रु क र्ज न रु नि ऊ कां ॥ य मूर्धं रा व यित्वा क व लान् द या दू त म्म थ वा स म र्थ ग ल
 क क दू ना रि णी व वा यि य ली कूटज न षू क ल णु ना नि द्वा रु नि द त जा व र्तां स द्र य र्प व ल व ण ग म मूर्धं वि पा च य न न का
 धे न न ल य क नि दू र्द द या तू । यथा व सि सि द्धि या क न वि धि ना म्म थ वा कूट का वा कू ची वी जा नि रि क दू क वि ठंग ल
 धु न वि ष के ४ म्म थ पि च्छे स्त लं वि पा च वि धि व द नू वा स नं द या तू । रु य म्म मूर्धं च रि क दू क य ठा ल पा ट लं पि चूम द्य सो ना
 द्वि का रि मूर्धं य र्धं सा ध यित्वा सै न्ध व ल व ण नि र्ग स ते लं पा य यतू । व वा नि र्ग य ता ट नू ष क स्य न्द ना नां ल क य ग र्ग न

य

२३

नियमासुर्ये

७४

संयुक्तान् कवलान् दयात् । अथ वा द दूषक पयाणि ग्या मा वि द नू धू ती क र्ज ज माल क विल मूल द नि नि म्म मूला

15

10

5

निर्युहदधिममुनायसाधये लोदनंवाहिर्गमधूनासंथाअज्ञायत्। माषास्विनान्पिकदूकवृर्षुयूकान्पुहृत
 गेलान्राजयत्। यवसाधायविहिर्गमर्शरिचयसेनूयववदिनि॥ तदुत्सुक॥ कषाय॥ सकले॥ यानेराजनेव
 स्मिकर्मरि॥ कमिध्वे॥ कदूकस्मीक्ष्विकिस्रुक्तमिकाशिर्न॥ उयक्रितायागरुवागजानांरुवक्रिकाष्टकम
 य॥ यद्वद्वा॥ तानरुषज॥ गम्भविधियदिष्टे॥ यग्नगयदहिनिवाग्निप्रषांविक्कित्साकमिकाशिर्नस
 पाकामयापार्थिवसिंहसम्यक्। नर्वयंसाधयतीहसम्यक्पूष्यमथर्हुरुवतातथस॥ ॥ इति श्रीपालका
 खगजायुर्वेदमहायवचनद्रुवनागस्तनदितीयकमिकाष्टाध्याय॥ अत॥ विद्याविनयसंपन्नतयसानकक
 ल्मर्षीपालकाख्यमृषिः श्रुत्वा मयादानुपाकम॥ प्रवृयाद्विजदांश्रुष्ट॥ पून॥ यग्नमनूरुमी। रुगवतृयाशमाना
 हिपाकैर्कविमर्तगजा॥ नयुष्टिः मूयगक्तुनिवलताः सप्तसुधा। कर्धकनयकीयनकया॥ केतिविधाय
 ताकथनगोयगीकाज॥ कर्कशोरुगवन्मया॥ तत॥ यावावरुगवान्पुष्टमंगनिवदिहं। पालकाख्यमहावृद्धि
 ॥ दृक्कर्तव्यनृपाकमी। नमः। गानितमांसांभक्षामजास्तिनृसांगुलनसम्यक्पुष्टकानांदाषाणांवेवपार्थिव
 पुष्टिसम्यक्पुष्टरूपवत्तनामांसापिच। नृसांविधियथासातृक्षय॥ समूयलखत। तर्षांश्रुष्टधक्कनलक

सर्गकात्रयकृत्यानचरुन्यादकात्रणीनिवाचकदूकवूयागुसांत्वयचपुनःपुनःनिर्यानगयनचैव
राजनचननाषयत।राजयचसदानागंमधूने॥४॥राजयचसदानागंमधूने॥४॥राजयचसदानागंमधूने॥४॥
गृगवनययसांविर्विद्वकंठकात्रिक।पृष्टिपृष्टि॥५॥गुमथोचनधार्गंधर्वरुसुकाकाथयसलिलेःसर्व
निःकार्थकात्रयकृत्यानिःकार्थसमरागंचकीर्नगपदाययत।प्रकसंकात्रयित्वाचगीतलंयाययमृजंयात
सुधायवाक्कषुगलीनाभादनंमृदू।जसेमैथेवपृष्टिकेदाठिमामैथराजययत।॥६॥नूविममृगलानि
गृगठककभयकानाखदूनेमसुकेवदाययत।रुगिने॥७॥सहोदकानिविचिगानियवसानिमृदूनि
वाकूगिनेनेवसीयाश्चवानभयप्रदाययत।॥८॥

॥५॥संज्ञातपाणिमसमुयदारुवतिवात्रुगेशकीर्नमधूनेके॥५॥यकंससुथिक्केपेदाययत
वकवाकेवकेहंसेनाजनूठिदिसम॥६॥रि॥कार्यवेवहिलेआपितिरिनेमुकपिजले॥७॥विक्कल्यक
गमभारि॥८॥कनेमहिषेसुधा।अज्ञाविकूकुटेथेवतथेवभादिरिमृगे॥९॥राजनार्थनसंवास्यवसवान
वकात्रयत।तत॥गल्योदनंननराजयतसनेनंगजं।भदीचमाषयर्धुचययसासहपाययत॥१०॥नतंकनय

x x x

कु?

लि२

॥ यैकं दृतेन सह पाविनी। या नयूक्त यदा नयं पावसु नास्य वदन्। यत्तं ह्यगित सैयूकं द्वा प्रल सह पावि
 नी। दापयं ह्यजतं न वल्लुक्क विवर्द्धनी। कनीनं पिंयादं च गथे वचसं जि का। मा कन्दं कूटं विन्दं च रुक्मिण्या
 मा कभवत्। महा रुक्मिण्यं च वयभादां वधूयि का। गवधू कां सभा लानि लवली कं विष्म निवा। दापयं नू स
 र्त्तं ना। गय वसानि विवृणो मधू रुगित सैयूक। नी कूटं जनि दापय नू। धनू कानि ॥ सृर्त्तं नागं गभुवा। ग
 वचा रुनी वय ॥ द्वा गं गे के चै व स द व ग च नि ॥ सृर्त्तं। धनू द्वा ग यथा ना। गभु व द व द वा चि त श ना ग र्त्तं म
 य मूक्ता च रु व दं च गुरु रं सृर्त्तं। य रु ग नू व ग म र्त्तं यथ द्वा ग व ला ग ज ॥ य र्त्तं वा ग नू का वा ज नू वा ग ॥ स म
 रु व नि हि। नू वा मा हा न या। ग न स र्त्तं न गो न य सा ध य नू। गभु मा ग्नि त्वा म ति मा न य थ ग्नि ॥ स र्त्तं ना क्ति ग ॥
 मा षा र्त्तं क ल नि धा र्त्तं नू ल द व म व च। य ति पा र्त्तं च द र्त्तं स्या नू स र्त्तं च ल व र्त्तं सृर्त्तं। वि र्त्तं गे य स मा यू कां न
 थ पि क र्त्तं क न च। भा द का स्त्र पिं द यां ॥ गृ ह्ण त्वा वि धिं स र्त्तं। द श चै वा द्वा कं द्वा र्त्तं। आ र्त्तं वि त्त्व म व वा ड
 लू ख ल द्वा द यि त्वा र्त्तं सृर्त्तं। द य स र्त्तं ल नू यू कां ॥ ल षा क मि वि ना ग नः॥ आ र्त्तं क र्त्तं लू ला न
 च मा ष द्वा ग य र्त्तं क्ति र्त्तं। कि र्त्तं वा र्त्तं क र्त्तं स र्त्तं म र्त्तं स र्त्तं य र्त्तं। च रु र्त्तं ॥ रु नि दा न य। भा द क ॥ कि र्त्तं स र्त्तं

प

२०

चार थ ३ सर

15

10

5

15

10

5

तः। यद्गुणी दीपकाश्च सुलानां कर्षणं हि तं। दयसे लनसंयुक्ता मादका द्विकसंयतः। यदयः ४ भावदः
 नां वसुधा वातादिता मुयः। कनीषाणां प्रयागं गृह्णी कीर्यतामम। गवां कटुकमसौ सु सुकवीर्यं स्मृतं
 गृह्णीत। यद्गुणी दीपयत्याधुः। अकमिविनागनी। लवणं न समायुक्ती वातयुगमनी हि तं। यवकी गवला ना
 मय वै वदुर्वला गयः॥ त्वकंदाषे ररिहता श्रयां गृवा गदिता श्रयः। विषा मयूक दह्यु सु द्वा गगुस्मिन
 श्रयः। नर्वयका नायवा न्यनर्षी पथ न रं स्मृतं। अजा कनीषस्य वै रगु ४६ सम्यक्पुकी रितो ४ वाजिनामपिवश्च
 मिकनीषस्य गुणनिमान् कटुकं वाक्क वीर्यं वनूकमूक म्लया चिरी। वातानूला मर्तं वै वतथा पिरुयका यनं। का
 नुल्य न रं र्क्यं लवणं दक (गधनं) गुणं सु कीर्यि श्या मिमूया लमपिम गृह्णी। नतषा भवमूया नि सवा
 यक्वद्विमान्। उक्क वीर्या निजानीया कटु कानि वि (गधनं) नि नूहूष्यं सक्ति क मिका ४ षू द हि तं। नर्व
 कना तिधी मान् वै यः सदा कात्रय रुतः। ससदा सुखमा प्रातिपालका खववा यथा। त्वकंदाषे ररिहता श्रयः। नि
 यानश्च न वृह्यत। अस्मिन्ना वे जयनी यस्कुर्ज कानि वनववा। अकं लसहिता अत रं गवै सा र नूषकं॥ अ
 सवष्यसं सक्ति गृह्णी वा न्यापिय हि तं। कंजामधूनि युग्धूनि कादी चर्तं ४। सकयर्षु श्रनि वथ मउतय

15

10

5

प

२८

निकीरिता ॥ यथा लारुं यथा सास्यं यथा कालं च वृद्धिमान् । प्रथमं च तमं तथा गमासवश्च धदाय यत् ॥ त्वकं दाष
 गमनाश्च कृमिकाश्च नागनाशं मूनां रुष्यं गस्यं नयवस्य दर्वलाय यथा स न कानां रुदागवा ॥ त्विच्छर्न
 वेवदन्ति नां । वृक्षाणां नयदागवा यवपिरु विकानि ॥ १॥ गित्यलमुयधमामश्चम ॥ यं वर्विण क ॥ ऊद्य
 न्यार्विण कश्चैव कवलसु सदाहिग ॥ यरुणी दीपनाश्च न वलवर्षु पसादना ॥ सिद्धा नोषधया गंश्चयव
 द्याम्यनपूर्व ॥ स्वयं युक् गुर्वी च मूत्रयर्षु रुत्रुकी । विदानी माषयर्षु च का काली दयमववा ॥ गत्मा
 लायात्रिरुर्ध्वं वर्वेज्यनी कर्नंजकी । मूत्रगंक्ष समायूकान् कवलान् संयदाय यत् । यरुणी दीपनां प्रनंज
 वेज्यनी च मूत्रकी मूलमववा श्रीयर्षु दधियर्षु च त्वं ममा मूपा रुत्रु । मूत्रगंक्ष समायूकान् कवलान्
 संयदाय यत् । यरुणी दीपना वास्ययव संवारि नंदति । श्रीयर्षु दधियर्षु च त्वं मम मूलं नलस्य च । मूत्र
 स्त्वमूलानि दद्याच्चैव कर्नंजकी प्रनन वद्धन मां सं सो मनस्यं वजा यत । दर्वकट कात्रिक दद्या न्मूलं च म
 धुगियुर्जी । दीपना यरुणी तस्य यव संवारि नंदति । गंठी च कत्वर्वं वगियूकस्य वनालिका । पियलीर्ण
 वनास्यं नालिका निपथकू पथकू । यदी विण खलवर्षु नालिकां लिं रुवर्तु । प्रतान् संरुख्य संरा नान् क्वा

वज नाका
 न्प्रथमं वृक्षयर्षु पसादना । प्रतान् संरुख्य संरा नान् द्याययत्की गभा ॥ १॥

5 10 15 20 25 30

दयित्वाश्च लुखला मदितां न गमय नास्य कवला दायय दध ॥ क मिकाशी विष्णुश्च त मृत्ति कांचनखा दनि।
 दं कंठ कात्रिकं दं द्या किलि आ मूल मवय। आवर्त्त मधु निगुं थ कवला मांस वद्ध न ॥ जीवनी मधु मां रु
 की रुजिषी जीत का निवा विल्वं क नी रंगणी नी कवला मांस वद्ध न ॥ दा ठि मं च म नी रं गां ड रु र्म गि नि क लि
 कां वत सामु त वल्ली च दायय रु की लक्ष रुष। गि नीष स्य त्व वी ल लं मान ठी सि न्धु वा न की सदा रु दाम यामा र्ग
 कवलां य दायय रु। क कू नायु धिका मूल मूल्य लं न व मा ली की। क नं ज अग्नि मं थ थ कवला अग्नि वद्ध न ॥
 गन्तु की दा ठि मं गुं ज रं वला या षा ल रु द कां ग ग वि र्द्ध व लं च त थ म धू न साम पि। दायय कवला न क
 लाय थ थ गं रि ष ग्व न ॥ रु व दं न दी का नि र्य व र्मा रि न न्द नि। पू र्ण का मा र्क वा स्तु नो त र थे व दी र्घ र्द्ध र्
 की रु र्च वी व र्णं च व क व ला मांस वद्ध न ॥ अ न लु त्व च मा रु ल्य यू ती र्कं रु रु ती तथा। अ मृ ती च य य स्यां च म
 द की ल य दायय रु॥ यू ती क ल व ग न लू कं रु मि नि द्र कि र्दं नि न ॥ य य स्या च रु र्च वी च प्र द या की ल क्ष रु का क
 द र्म म व र्णं गी र्णं यू ना ग ल व म व च। रा ग न ता न स र्म रु त्वा नि गि मू र्ण वा स थ रु। यू नी र्णं गं ध ना ग य क
 वला न र्म य दायय रु॥

नकोनीदीपिणी तथा दद्यादा नरु नैश्वर्यं सी र्गजनकभववावाताम्भानकदिदी (एवा) न स्यमहीयत
 डनूवूकाथनकोनीकाकालीदी नभववा विल्लाट थयदा तथा वाताम्भानस्य दन्तिनः॥ मूधका नैयवक्षामि
 पानं कामाग्निदीपनी कूरी कस्या रुकं दद्यात् रु लानां रु स्रही तथा विल्लाकं नकमालानां त्वचः॥ यणा निषा
 ठनाग्नीनां लंक यनाय विनिर्गतां दालं दालेयदा नयं विपदं च नवाधिया रुतवका मकूरीनां त्वचः॥
 स्याजिताः समाः॥ रु लिङ्गक स्यमूलानि गथे वा कं कर्तुं जयाः॥ रु वयू नैः का नायका नः कूपा दका क
 तां पूर्वमूकन विधिना का नमनं यदा यथा नू कूरी कः॥ यानसीका नः॥ समनारु गं प्रवचः॥ रु तया न
 यागः॥ सूर्या स्वा ताद्विपदां वना चूर्णं निष्ठा निवक्षामि गजानामग्निदीपनात्॥ ददुरु लो क नैजं यथा
 विरुद्धकभववा रु निदं विठं गनि दद्यादिन्द्र यवानपि गता वनी च (गार्ग्य) त्वयानि चूर्ण विल्वयाः॥
 गममूय वा सयदा विदिवा सूर्यः (गार्ग्य) यथा विनागभवक त्वा रु सुसूक्ष्मं का दय रुतः॥ विरु ला हिं गु
 यूकं ययं वरि लवलीयूनी लवण स्य चया (गार्ग्य) चूर्णं निष्ठा स्य च यली॥ ददुरु लो क नैजी दा वध्वर्गं
 सुवर्चला॥ डरु रु निदं पा भवक नीष गज वाजिनाः॥ वनसर्वं समा द्रव्यं समं क त्वा मूलखलानि लव

दध्यागनषट्पलं वास्यदायथत्। दो कालोदनिनादयात्पूर्वथागमतद्धिर्ग। मनःयसादंजनयद्वर्णु
 वनृपदकितां। निम्नस्याथकनंजस्यत्वावबूझकस्यच। मषणं ग्याश्वपाटल्याविदलस्यवसीरुवताम
 धूगि। ग्याश्वताः सवर्षसमरागधिकल्यथत्। डरुमंवेवतीक्ष्णं। गमूयवासयकुर्ह। मद्यानिगमनार्थेय
 द्विपस्युपुदायथत्। ननंउपूतिकात्रिष्टेः समांशेः कवलंरिषक्निदुरुस्यैपूर्वाक्कादायथदाग
 नागतां। सुवर्चलां गुर्वीचमूयामार्गकनंजकीवेजयनीचरुनिर्मितथवेसादवृषकी। नतानुहक
 गजः कल्या नागनृद्विपमूचति। वलंमांसं च दृढिं वयाध्नातिसूमर्तः सदा। रूथवृद्धमहीपालवि
 धनंकीलधामुषा यववयाजयद्वेयः सल्लारीजनयिष्यति॥ रूथववीत्यालकाखावाक्कांगनयवा
 दितः॥ ॥ रूनियालकाखागजायुर्वदमहायववनद्वितीयकयनामाश्वायः॥ ३० ॥ श्रीगमहिनाजाच
 म्यायामृषिधर्मविदांवनं। विनयनायसंगम्यापालकाख्यं सम्यक्कृति। कथंमदः सीरुवतिहृतवास्यक
 निम्नुनाः। कथंचसुनरिंदानं कटाखांयत्रिवर्तुत। नवमूकांगवाजनपालकाख्यसुताववीत्। वातात
 परिश्रयतकश्चित्कश्चित्परिह्रियत। रूथववीत्यालकाखागजायुर्वदमहायववनद्वितीयकयनामाश्वायः॥ ३० ॥

वा न्यामदः क न नि वा न वां प्र व र्ण य य का न य स द व र्ण य की र्ति त ४ सो र्था त्पु रि य त क थि र्क य वा रि ज न न
 वा क र्वा द न्य ४ य व र्क न य त्रि ण मा रु थ प न ४ न स र्मि क सु थ वा न्य ४ स र्ता पा द पि वा प न ४ य द्वा य रि यं वा पि
 या धि द्वा ष क ता प न ४ ड य धा ना रु थ वा न्य ४ य रि य त म र्ग ग ४ व रु द्द गे न ना ग र्ना की र्ति ता म द रु त व ४ स
 मा स न न ग र्भ दू न गृ ण वि सु न ता हि मा ग र्ता वा तू य व द्वा मि ल क र्ण वा ति क म द । य त्रि धा व ति वा य र्थ ३
 य न वा न व स्ति त ४ न वा रि ल ष ति ग्रा स र्ण या द ष थ जा य त । द र्श न व दू ग थ पि व प त सु न य य पि ।
 य ति न म्या रि न म ति वि न म त्पू न म त्पि । य रि य त वि धा व र्ण सु र्वा ग थ पि र्ज य ता य वा द क नि का र्ण व
 क षा र्थ कू नू त म द । च न्द ना णी न य द्वा नां ड त्प ला नां सु ग न्ध क । क दू का नि क षा या नि ति का नि च नि ष व त्
 या वृ द्काल च ति त रां म द सु स्य य व र्क त । र्ति वा ता त्म क र्था कं ग जा नां म द ल क र्ण ॥ ३ ॥ ये र्क क स्या
 पि नृ प त वि क्क न मू य द द्वा न त ४ स्त्री का प न र्थे व र्ण ता पी च रु व द्दि य ४ या य ण गी त र्ता क्ता र्थां स लि ल
 वा रि कां क ति । वि द्द र्श न त म ति च त थ य ति न म त्पि । क षा ली वा णु का ग थ प य त व न रा धि पा पी ता म त
 थ न कं वा क णा द नं पु सि य त । स ग न्ध चू त य द्वा र्णं त्र ला मू स ज ग न्धि क । ग न दि ये रि क ४ का ल म द ४ द

15

10

5

15 प्रतिवात्र (ग) कर्कशास्त्रानुसृतवन् न स जानि निषवत। रूखतल्लक्षणं प्राकं पिता नृपकृपितमद। प्रकृत्या
 शिकं राजनृमदं वक्षामि न त्वन ॥ वलवान् गीतसंयन्नस्रजस्त्रीधनकामर्तः। स्ववर्णीतश्च रुवतिर्मदकमविच
 10 क्षितः। ग्रसनकूत्रनकामर्तसंती न वदयत्यपि। पिशादकयती कार्णपाधुनं वदन्नमद। सुगन्धं गतयुष्माणां सि
 धूवान्ननात्रपि। तथानिमूकयूना गवकूलानां च गन्धतः। गीतलं सुवर्णिदयं रुमनसं प्रवन्नमद। मधूनाम्ना
 निसर्वाणि निनिषवयत। त्वकैंदार्यश्च पिजायन्नमहर्त्यसंक्षिर्यतथा॥ रूखवत्सु शिकं राजनृलक्षणं सम
 प दाक्षतां। गीतानां संयवृद्धमदं वक्षामि लक्षणं। मधूनां सुंरुमागिष्यन्नकानि सुलाचनाने च वाचिजतक 107
 स्माहस्मिनापि यकृप्यत। विमूकं निवसर्वांगैर्गजः सन्धिषूक्तस्त्रगः। गीतलानि च सर्वाणि कृयां विवारित
 न्दति। गीयायां सुखमात्रा नित्यलूषयात्यमि कृति। पाधुना सर्वगंगाणां सिन्धुमाहा नमि कृति। यत्रीषवमधूद
 नं नर्कं समूय जायत। कटायां रुशतयूर्ध्वनिदायवापि मायति। ऐरि कस्य रुलिंगानि सर्वाणि कूत्रनगजः।
 5 रूखतल्लक्षणं प्राकं मदवे (ग) गितात्मकं॥ मूत्रद्वयवक्षामि सन्निधानात्मकं नृपायूर्ध्वकानां मदानां तुल
 क्षणं सान्निपातिकं। दूतं यिया साधुगीतानां सहिषू र्वतिद्विपः॥ दूःस्कानमथ दूःग्यां सहतसतर्गजः॥

यतिनम्याहिनमतिविनमत्यन्नमत्यपि॥नारुिनन्यतिवाहानं स्वादं स्वां ध्यामिग्रमतं जानीयास्मिग्रगर्भं मदं नृ
 पांरुत्यततसन्निपातवपरिन्नस्यउल्लङ्घनं।मरुनऊनितायांउयसुमरुनऊयत।योर्गुमास्यांयहियतमदं
 मरुगुलेयैतं।जानीयाहंउनाउल्लमदंलसिऊनात्मकं।वदूयूयसमृद्धानिकाकिलाविनूतानिचामरुवहिन
 पूरानिवनानिसमवेक्ष्वाहंसमात्रसगीतानिच।कवाकनूतानिच।सतामत्रसकलात्रसगन्धिपवनानिच।
 मनाहनालिजम्यालियल्लवानिसर्वांसिच।यद्भात्यलविविद्यालिरुमने४कूजितानिच।दोदयित्वाचपीत्वाचकन
 गूगलमध्वग॥४॥नवनागममहाजाजहृषादवयहियत।दोषभाहृगनीजश्ववयातीतामर्तगज॥हीनवीर्यावि
 र्मासापिसर्वांसिनिधिलीकन॥४॥नेमुल्लङ्घोर्विद्यान्मदंनयात्रिभमिकं।दू४स्कानमथदू४ग्यांल्लङ्घा॥ल्लङ्घाव
 मारुतं।निरुत्संनवर्धवर्धनितानंतऊनंनगज॥यदामदयधवतिनंरुर्विद्यान्निस्सर्गजं।उष्ट्रंल्लङ्घावगमनात्
 युनूराजलवापून॥४॥कर्मल्लानिययागद्वारुनतवाहृरुदुमान्।नेनिदोनेनोगस्यगनीनमूपतयता।तने
 ४यसिचनदानंदूर्गन्धिवमर्थनृपांरुसनायजंविद्यान्मदंवाजलविक्रम॥विविधेषुगिनात्रागेमूर्गनाल
 लवायदि।धुद्धवाल्लकेरुउत्वाद्याधिनावात्रलमद॥विविधारुर्विधारुर्य४पूक्षमायतिवात्रल॥समद४

विर्गमृगालान्गलुक मत्पलनलिनायपि। ॐ कृमिश्चनसर्वेव ॐ गठककमनूकी॥३

विष्णायविकिस्यां संप्रदाययत्। यं यत्किं नृवलीः सार्धं पाययत् सुखादकीर्ती क्रीं धकवलानुदयाद्याप्रलयम
हीयत। वातिकामदादा जन्मचतुर्वेन संप्रदायः। दक्षममधवातकी माषचूर्णं वयाययत्। नृननायिचथागव
मूचतः॥ वातिकामदानु। शुद्धकाशायदातवर्गं लयानं महीयत। यवसानिविविगालि मृदू निरुजितानि
वाखलितनायदि श्वानिकवलानुसंप्रदाययत्। ॐ तिवातयत्किं नृस्य विकिस्या संप्रदायकीर्तिता। मूथयि लययत्
नृस्य विकिस्या संप्रदाययत्। पृथुषकालमार्तं गं कृ दनिर्वोययत्किं षक्। गलायामार्दलिकायां गीतस्का न
स्तिनस्यु। स्रावयदात्रिचूर्णं धनस्यापनिनवानुद्यतां दापयत्कवलानुतस्मै गक नाचूर्णं संप्रदायानाख
र्हं नमस्कृती ववदापयत्खलितैर्युगैः। डोदकानि वि। वेगालि रुजितानि मृदूनि वाखलितनायसंप्रदायवा
प्रलययदापयत्। नृथलननथागनयुद्धयैल्लिकानुयापयत्पृथुकानि मृद्वीकागक नाखलितं मधू। सात्रिवा
मधूकं ववसुमासिचूर्णं वादकी। नृनयतिनयकीर्तं कल्यवाक्कायपाययत्। ॐ तिपिरुपुद्धयवाननाननग
मयनि। युद्धयैल्लिकतस्य यवसानियदापयत्। रुषार्थययर्गदद्यात्। गक नाद्यतसंप्रदायं विष्णिकानां पूनाग
नां गालीनामादनं मृदू। सयिषाहा जयन्नागमवर्गं रुदात्पुमूचत। मूत्तमूर्ध्ववती क्रीं वलवर्ननचदापयत्।

15

10

5

पानं च सूर्यिषा (धृष्टमर्थं गन्धसूर्यिषा) नृतिपिरुतुयुति न स्य विकित्सा संप्रकीर्तिता ॥ सुषमा रुद्रयुति
स्य विकित्सा वयवश्च कुरु कना स्यने लन सर्वसका विधीयता ॥ गी कानू कषाय कटुकानू कवलानू संप्र
दाययता मूजामू गल संधाश्च (लोषिक सन नगाम्यति) दादा रु निदामं जिष्ठा सूक्ष्म चूर्णं च का नयता ॥ मूजामू
गल संधाश्च पिठु मस्ये प्रदाययता ॥ मूतन कमथा (गनय रुदात्य निमूचता) ॥ ३ मूत्रवर्ध
 सामवर्कं पठालं का कतिन्दू की ॥ पथा पिमधू संप्रकीर्तिपिठुं (सुषमा रुद्रयुति) स्मृतं गं यवा दनं च तैल न मा यथा
 प राजय मर्जी नृति (सुषमा रुद्रयुति) न स्य विकित्सा संप्रकीर्तिता ॥ युरु देव कर्जे राजनू यती का न यवश्च न पाययतु
मूत्र ॥ यूर्य पठाले ४ सह संप्रकीर्तं का गं कू गं पठालं च यव सार्धं प्रदाययता ॥ यदू के पेरिक ग्रा वत सर्व संप्र
यथा जयता ॥ सन्निपात युति न स्य विकित्सा वक्त्र न धूना ॥ (लोषिक स्य रुथा गं हि कल्ये नाग स्य का नयता) पि
हिक स्य रुय कर्म मक्षा कृत त्समा रु नृता ॥ वातिक स्य रुयतु या कं सा या कृत त्समा रु यथा जयता ॥ सन्निपात समूः
कान मदे या गं प्रदाययता ॥ नत सीधू समा यूर्य कं यति पानं यथा ययता ॥ सद्यु गानि न तन वा न ग स्या यजा यता ॥
ग्राहना वा न या गं संध संध संध संध का नयता ॥ सन्निपात समूकान (धृष्टमर्थं च विकित्सीतं) ॥ रुद्रयुती त्या लका

103

लवणा निवसवति पिपली मनिवानिव ॥ गवर्धनं वसं हत्य सूक्ष्म चूर्णं निका नयता ॥ ३

28

15

10

प

5

किं कलवलोऽपानराजनेऽकर्णजान्वातजां नृष्वविविक्लिप्तकमीनृषिषक् ॥ पायणः प्लवङ्गवागजानां
 ऋयासुनासुं कमयः गनीनाः कार्यः ययत्तः पंगमायतषामयः किताः पाण्डुनारुवन्ति ॥ ॥ ॐ निपातकाख्या
 गजायुर्वदमहायववनद्वदस्तुनदितीयकर्णुवातकमिनामाध्यायः ॥ ५२ ॥ ॐ गेष्टारुगवान्कर्णुना
 गमवावह ॥ ॐ स्यानागस्य विज्ञानं विक्लिप्तां वयथाकमीनस्य ॥ ५३ ॥ सहसादकृतथागीर्षविनवनः कर्णुय
 र्वयतस्यार्थः ॥ ५४ ॥ प्रागसोऽकीटवग्नानां वातजं कुं पविगतिरुच्यतवानिमाद्यतः ॥ ५५ ॥ ॐ रिद्यातननिनसः कर्णुना
 गः पवर्हन् ॥ ५६ ॥ यकृपितावायुः ॥ ५७ ॥ प्रागसिपुतिपयतः ॥ ५८ ॥ प्लवङ्गानिगमादाय कर्णुना गस्यपीठयतः ॥ ५९ ॥ गनी
 नागं कुकेदोषैर्यदा कर्णुपद्वयतः तनास्युमूला व्याधिः कर्णुजं संपवर्हन् ॥ ६० ॥ तस्यमानिचवृषाणिवा न
 लस्यनिवाधमः ॥ ६१ ॥ सति धुनियधमतिकर्णुः ॥ ६२ ॥ प्रागस्वसोऽक्षः ॥ ६३ ॥ ॐ गुल्याचाल्यकाष्ठं नकवलं नयद्यषति ॥ ६४ ॥
 यं प्रवति कर्णुः स्यादूर्ध्वनिर्लुहः ॥ ६५ ॥ प्लवङ्गमात्रसं सन्नात् कमयः सैरुकिहि ॥ ६६ ॥ नृषिर्नकमिसं सृष्टं दग्धत
 यस्याहसिनः ॥ ६७ ॥ कर्णुना गः सविज्ञयः करुणः ॥ ६८ ॥ प्रागिति वातजः ॥ ६९ ॥ ॐ त्वं कर्णुयाद्यधीनदृष्टः ॥ ७० ॥ पञ्चमावन्तः ॥ ७१ ॥
 गवर्नचरागीध्विर्गमनिचयवयतः ॥ ७२ ॥ दवदा नृचकृष्टं वसूक्ष्मपिक्वाविचकृष्टः ॥ ७३ ॥ नसना ननना गस्य कर्णुया

१०४

15 गानिषचयत् । तगास्यवदनाभक्तिवत् स्यात् स्यान्महीयतां नृगतं संहृत्य संलग्नं सूक्ष्मकल्पं यथयत् । तगात्र
 संप्रतिष्ठाप्य द्वादशसहस्रं यत् । तगास्यकर्तुं यादृयात्कर्तुं भाग्यमूच्यतामधूनीयं ववित्वं वसनलंदव
 दान्वा । श्रीकालकुरुलं सार्जं मांसीकृष्णमवन्तुर्जं । मयूनपिरुमज्जानं विस्वानिकहृत्तानिवा । विष्णुगण्डुषिवी
 10 जं वतश्चानिम्बुरुत्तानिवा दवदान्वा । धनीर्नपिष्ठागानि समानिवा । सर्वभूतसमालोचनं तैलध्याविपाचय
 तां तस्य सवयत्कर्तुं वतनलरुतसुखं गंभीरमूलं मधुकं वसुक्तं कर्माद्वादशसहस्रं यादृयाऽप्यून
 5 र्गहिता । यथोष्णीकमं जिष्ठां कृष्णं मधुकं मवच । उगीर्नपद्मकं च वदवदान्वा यथयत् । तगास्यकर्तुं यादृ
 यानस्य कर्मवकानयत् । ललयकं सज्जनं संधवदान्वा धनं । धृतमंथनसंयुक्तं धूपं मृत्तयं यथायत् ।
 नीमूलं च मधुकं षष्ठिकानं कूटनटं । मूर्ध्नामामलकं सिद्धं मधुसर्पिः समन्विता । पियलीर्गवर्जं वरुणा
 संपद्यत सुखी । श्रीकालविजयवित्वाद्यां नशावेण विकारवत् ॥ मूवगमहारिषकं च वज्रं यद्विनिगमनं
 5 रूख्यं तत्कर्तुं भाग्यमनिदानं विकल्पितं । पृच्छतं नाम प्रादाय पातकाद्यनकीर्तनं ॥ ॥ निपातका
 र्थगजायुर्वदमहायववनदूयभागस्तद्वितीयकर्तुं भागनामाश्वासय ॥ ३३ ॥ मूरुकचं नानाज

नू सनिदानविकिसिनी। नागस्य संयवक्षमिति नमनि गदत ४ गृह्णावातन सहित ४ ॥ अथादय संयव
 नि। आमागयं स म नमं पूनयित्वा वनिष्ठग। करुनवद्वदय ४ कटवंपल्लवर्हणी ॥ अनावमानं ककुंकि
 विदभति वा जग ४ तस्य न नाहि हतस्य विकिसा संयवक्षत। तस्या सर्वप्रसन्ना वामं प्रयं वा पिपाययत्
 हिंयु नार्थवलवर्णो ववाह विदलधु नं पिथल्यो मत्रिचानि वस्यं चलवर्णं नू ससैकवलान् संयवकापय
 नूतजावर्णं विकदूकं तथेव कदूनाहिणी। मधूना सरुसंथा अकवलान् संयथा जयत्। वित्तकं सर्वयं हि
 प युतिरुलावदना निवाह विदगिग्वीर्जं चक जंजी जमवचार्यं वरिले वर्णे ४ सार्द्धं दायित्वा झूलूखला १०५
 सकुलि ४ सरुसंथा अकवलान् युतिरा जयत्। कदूकां नाहिणीं पाशं यवका जं ससै च वं पिथल्य ४ कदूक
 मत्स्यां श्रमनी च वाटूख कं सवर्णि समरा गनिक्षा दयित्वा झूलूखला ॥ गमय न समायूकान् कवलान्
 नू सस्यदाययत्। मूढं धा दनं तस्य दया कि कदूकानिनी दद ४ सवाहय दीक ४ काष्ठरा जगता नयि। न
 वंगजानां विधिवक्त्रे न निवृदा दत ४ रुकं सर्वम (गुषण दहय निनिव न्नन १ रुक कुन्दा रुवलयम
 निदीक श्रजायत ॥ ॥ ॥ नियाल काश्च गजायुर्वं दमहायवचन द्वितीय रुक कुन्दा () नामा

15

10

5

निनखादनि। विकित्स्वयस्ममर्मदंविषमंवापिदन्तिना। आयुर्वेदादि यागसर्वेनाह विकित्स्वकशरक
 यासायनूदस्यलक्षणं संप्रवक्ष्याम। वाजपयानीयना राजनयथावदनुपूर्वगशमधूनाह। जनानित्यमव्या
 यामारुथेवचामृहिकारुक्षणदापिजलदाषणवायूनशविदग्धराजनादापिनापीजागजलनवा।
 जीर्णजीर्णगनादवसततं पृथिवीयत। हृदय। श्लेष्मणादि। न्धनाहिनन्दनिराजनं। पितृवतनूनां या
 निग्रहणीवास्यहीयत। हृत्कलुषानमीलश्वदुर्मनागुनूमस्तकशरकद्वर्षवर्ननागंविद्यात्। श्लेष्मापस
 प र्जनविज्ञानमतद्विखारं विकित्स्विगमतं गृण्णद्वर्षवमूलसंक्षयपिपलीमूलमवच। हृत्पिपलिस
 नीचं चवित्तेषं पानमन्दा नयदद्यात् सिद्धान्तं प्रविज्जयत्। पतिपानतदीकाग्निजननरुवनिद्विपश
 दीप्यतग्रहणीतनयवसंवाहिनन्दति। विषकमनूपूर्वगसुखाक्रमनूपाययत्। प्रगतीत्वाउभ
 जन्दनतः संपद्यतसुखी। पिपलीर्णं गवर्नं च सूक्ष्मवृक्षुनिकात्रयत्। हृत्पिपलीसंथाघ्नतलनचनना
 धिया। संप्रवक्ष्याम। ग्रहणी दीपनी दयभेतत्या नमनं कषा नागपिपलिसाहृत्पिपली
 यषयत्। प्रवृत्तिनयदद्यात्कवर्लयुक्तिना नृपाह

१०६

तृ४ सहविपाचयत्। १। १। पिपलीमूलसंयुता॥२

१. गायत्र्या च यथा च विधीयते । तद्धृतान्तसी किं दध्मन् विपाचयत् । नात्रियर्धं विर्तं जातं पदं हंत स्य कानयत् । मकपञ्च सवदनां

वसिष्ठेन च न दधि

प

चाठपूषकी । कर्कश्वर्कं च न कीर्ति लपि क्व च पाचयत् । नाजी स्वदाद्यौ जलजानां वसत्वानां मयामां स च पाचयत् ।
स्वर्कं सर्पिषा ण्यार्थं सुखाकर्म यत्नयत् । ण्यानां कपातं तीव्रं कामार्थं वगूयति का । आनन्दवर्कं नाकी मष
गृणी ससंभवी सर्वपां सलपञ्च वल्लुपि ष्ठानिका च यत् । सुखाकर्म सद्युर्गं च वयदहं स्य ययत् । स्वरुपा
नैव नागस्य गगना खं गं च दापयत् । डी २००० दकानां वसत्वानां नसे संपति राजयत् । मृगान्क सर्वथा ण्यरु
क्षिप्यं न कं प्रमादयत् । निर्दोषं ण्यगिर्गद द्वा ण्यरुं तं यति चूर्णयत् । गृहधूमह विदायां सकृदसंभव नचा
खषवातिका वाधिवर्द्धन पिरु सैरु वः । मृत्ता मृत्ता राज नानि र्थं कट्ट का ल्यग नादपि । लवणस्याति याग च पिरु १००
भाउः यक्यति । डना दाणीं समागि र्थयथुर्धस्य यजायत् । ध्वयथु स्य पीता रान का रुध्र पित्त द्धन । पिरु
दाहं धनागस्य क्षिप्यं पाकं च गच्छति । रुक्मि कर्णु पला ण्यनि सूक्ष्म चूर्णनिका च यत् । सर्पिषा यय सापक्वा
ण्यरुं तस्य यत्नयत् । दवदानं च यद्वा क्वां पूषु नी कं नलं तथा । पद्म कं च वलार्धं च मात्या निंल जानि वास
मरागानि यय सा ण्यद्रुपि ष्ठानिका च यत् । सर्पिषा सरु सै यो यय दहं तस्य कानयत् । ण्यामां ससु मतीं च वज्र
नलुल सुनानि वा दद्यात् पूषु नी कं च विषामति विषा न्कथा । मक नस्य च मां सानि र्गं सै च वपा च यत् । दर्वी यत्

मा १ ज ३

पंविज्ञायतनसुमवताजयत्। नतयदहं नागस्यवदः लंपदापयत्। कृणुमूलानि संहृत्य धूम्रं साजिवांग
 धापयसासहपिष्टानि पदहः सद्युता रुवत्। मृनिवृद्धवध्वपथीयकृन्नेनस्य काजयत्। निदीर्घं गलिर्नदद्व
 कषायैः यनिचूर्णयत्। मृधक्तस्य कषायलसक्तस्य ककूरस्य चारुत्रिदा गृहधूमा र्यां लघुनेः सन्ध
 वनवाग्ं खषपिक्तः ४ पाकावद्यनं करु संरुवः। राजनस्यातिमाधुर्यात्सं गलाम्बुनसं नयि। नागस्यास्य
 यवाजाववसक्तं कृषितः ४ करु ४ डदनेधयधूस्य जायत। श्लेष्म संरुवः। दानुलं करि नखे वर्गो विम
 न्दवदनः। नतद्वेनस्य विज्ञानं व्याख्यास्यामग्नि किस्तिनं। गमयवगुपयानि स्वदां धेयाचयहिषक। दृगं
 नपूर्वमस्य कदयात् संहृत्य नंगज। काकादनीमनि विषां सुवर्णां गालयशिकां। काग्नतकीं लांगली चयि
 वकं रुक्मि कर्णुकीं। गृहं वनं रुनिदां च कल्कपिष्टानि काजयत्। रुक्मि मृगल संहृत्य सुखां र्णस्य। नृपलप
 नी कर्णुवाति विषां चैव नगं नंदव दानुव। स्वर्गैर्जिकां धुमनि चैव रुनिदां चिगर्कं तथा। मृदन्नुजानि वीजा
 नि संधवैरु समाह नत्। श्लेष्म पिष्टैः सुखां र्णस्य दृगं स्य लपनीं पूनर्धुवां चि कर्कं किं गमनाथ संधवैरा
 द्भग्न रुनिदद कनवी नं सगियूकं। पषयद्वसि मृगल संधिषाव नृलं तथा। नाखूर्ण दृगं संधु कं पदहं नस्य

15

10

5

अधिष्ठानं रवदकं यथुर्नानाधियात्रकस्थायदवाङ्मयावातपिरुकरुन्मयः। तस्मात्सर्वेष्वङ्गेष्व
 गस्मिन्गालितमाकर्षणं। एषेवैवकजः ४ याकावात्रग्नानानाधिया॥ रूख्यषनाङ्गुल्यवतुर्विधस्तुङ्गालीकसंज्ञ
 ४ यथुर्मथाकः ॥ अतः ४ यत्रसंज्ञुषुसन्नियानयकापजं क षुनत्रयथावत्। वातः ४ करुः ४ पिरुमथावि न
 कंदाषाः ४ कुमलपवितागजस्य। वातनकाषादूनस्त्रियपनाङ्गालीकसंज्ञं जनयन्निर्गच्छत्वं समाधि
 ह्यविवर्द्धमानः ४ कनातिपीठं महतीगजस्य। साष्मासकमुपि टकाविश्वपाकं कदाचित्समूयेतिमाहारा
 उच्यन्मार्गकिलतं विकित्सुर्नदूयक्तिरः ४ यागहनः ४ सुकोलात्। ग्गुरुष्वसर्वेष्वयामयोकाक्रियाराया
 साधयिर्दुयतता। उच्यते लवायदिजायते वैद्योलीकसंज्ञः ४ यथुर्नजस्य। तस्यास्तिरिः ४ स्वदमिर्मविदध्या
 मूत्रं यवश्चामिनिवाधतम्। र्वनाहमषाविषं ४ नाश्वे। गजस्यस्त्रीनियुक्तानि रुमाहिषेण। वृर्णुतिलानः
 मपिवागदशात्स्वदयथावत्किंययक्कदादिगसुसाध्वं। संप्रयेके द्वाः ४ पतिवृर्णुयच्चागृहस्यधूमा
 लवणनिर्पंचतथाहनिदकदूनाहिणीवावर्णं गजस्यपतिवृर्णुयित्वाह्यः ४ यकापगृहं रूषजानिप
 गालिवाकस्यसूचविकावतिलाववास्यं कदूनाहिणीवावर्णं गजस्यपतिवृर्णुयित्वाह्यः ४ यकाप

य३

द्विदधीतवेद्यः। एषां चमूनेनपि स विदध्या दध्नीनाया विधिवयथाकी। ३

15

10

5

वर्षावर्ष

म५ य१ व१

१०२

सधयवदानुसंधं सतजावतिचिउकीवागधधूकावापितथाविदध्यातूकृष्टहनिडीमनलधुकाख्या॥

15 रुनं यदि ह्यं। धाणी क। ग। रं रुमिका रुका सम सं गयं रुक्ति च वा न गनी। पठा लये ४ सरु निम्व पतु मूद्र
 ५ वृसिद्धं यपि वं च यूर्य। ग। ल्या दनं वा पि मृदं। सुसिद्धं दया शं। थ। कं य व सं विचि र्त्तं॥ ननु। ग। क॥ धाणी क॥
 यदि रु व नि द्वि प स्या रि नः॥ स कि पुं य गू द नि जी वि तं वि दृ द॥। न वं य॥ से म य नि वा न स्य वं य॥ स प्र धा र
 व ति य नं नृ प ल यू जां॥ ॥ नू ति या ल का ख ग जा यूर्व द म हा य व च न द्वि ती य धा णी क। ग। रं ना मा ३
 10 ध्या य ॥ ३६॥ नू ति या ना ग जा ना ज नू य थ रु व नि त नृ गू। नू था। ग। ना न रि कू न था ग जा वा रि ना रु णी
 स ह वि वि र्त्तं। धा रि य व स स थै व स न सा र्त्तं॥ धा णी य मु मा र्त्तं। ग। था य न न य क र्म ग। ल। रु त वा नि
 दो र्वे ल्य मा ना रुं वे व वा न ग॥ रु कू म थ य वे व र्त्तं। ग। न द त्वं न थै व च। स दौ ये ल्य पुं न नो। ग। य कू क र्म
 वि ग न द॥ नू क र्म वि य य कू त ग ज॥ सं ज्ञा न क र्म नि। री म क र्म नि वा ना ग कू थ। यि च व धा व धा रु सि
 5 य द्ध पि वा ल्य थ म थ सी ग्र मि क। पि वा। ल्व न या क र्म ला रा दा य था ग स्या नि मा य था। व ला व ल म वि क्का य
 या क्ता ना र्ग य पी उ य त। नू र्थ क र्म था। ग। न त द। ग। य। नि मा नू त॥ पि कू न स रि त कू स्य वा या द य नि रु क्ति
 न॥ य र्थ ग सी य ती का। ग। य। ला प स्का न म व च। क। ला री य स कू टि क र्म रू व कू स क्ति नी ज द न र्ग न

लिमांसान्यभेननः यनं वसवारं न संवायिका नयित्वा यथापयता मांसे दोने सधसुहे विविधे यवसे
 नयिवावसि लिठ्ठं लीयेथगीतन विविधे नयि नूतिपातस्य नागस्य वलं गीयं यव रुतं । व्याधिः पुनमनेय
 नियागे नरुत्तं नश्चन ॥ ॐ स्वमतिपातमुथा कुक्षीये जायत । तस्मान्मुखो यमा गं नन दयः पृथिवीपत
 ॥ ॥ ॐ नियाल काखी गजायुर्वेदमहायवचनं दूदनागस्कानदि **तथ** नूतिपातानामाश्रयः ॥ ३ ॥
 ग्रामयादामहा गजाः पुनमनि नसाधु विः पालकाखी मूनिवर्न विनयात्य विवृक्त निगुत्माः यंचमूनि
 प्रवृद्धा धादनि नामिह । पूर्वेषां कारुगवतानामतात्रा गसंग्रहा समूक्तानं च नृपंचतर्षा विस्तृजता
 वदा वि किंसावान् पूर्वेषां गवन्वकुमरुसि । **एवं पृष्टः सरुगवान्** पालकाखी सुतावतीता । गृह्येवं
 महा राजय सन्नतान् नरात्मना । गुत्मां यंचमहा नरा जयथा काः । संग्रहं मया तर्षा निदानमत्यलिः ॥ ४ ॥ वि कि
 साचयव द्युत । वातात्ति काल्करो चैव लानि नाचय कोपनात् । जायतं दंतिनां गुत्माः सन्निपाताच्च यंच
 मया दूरौ वश्व सर्वेषां लिंगविहानमववा । कमणानन विधि वचि किंसांचयव द्युत । **रुसुखं गच्छ** प
 नानिकालं नल रुगयदा ॥ **स्निग्ध रुक्** श्मसां सेवा यदानां निना कृतः तदा गुत्मा समुत्प्लिजयितवा

15

10

5

तकायन० कदुनिककषायानां नसानां वातिस्वनात्। शुक्कानिचयदानात्। गतयवसानिचयजयत्। कयानी
 यययानवायदायिवतिवात्र०॥ लवणदकते लंवायदानलरुतगज० मूल्यतजो नदानादा सरुसाकः
 यत० निल०॥ सतस्यजनयहु लं समनातेंदुदयस्यच। पनीषंरिद्यतवास्य म्हायध्यायिलक्षतौ। तस्याना
 हं सृजनकावाक्काषवायूरुमहयि। कल० गजनिमार्ग० गवृक्षिकालेयधयन० प्रमहतिप्रसक्तं ववि
 मना० संकृवत्यपि। संकृमाधित्यविसंस्कूलं निधिसितिद्विप० यमहृत्यपिविचिनीवालमूर्द्धमदस्य
 नि० ह्यते लं कलेयूका वातगुल्मा उवादिप० धृतिर्कं चिक्कंदनी गणीं नंस्वहां वचां। पियलीं शैथ
 वं पाणं देहे कुर्वमहोषधं कूलकौं श्ययवां श्येव समरागमनययषयत्। तेलं वसूत्रयावायिसकाहं पा
 ययद्विप० गंती नं किं हुकं म्हा मां इव नीं सूत्रयां वचां। पियलीं मत्रिचं च वसलिलनविपावयत्। वसूत्र
 तं उं कार्यं वै सकृलवणनिर्तातत्यान० पाययनागमेत्रयनारिसूक्तिर्गं। गद्विषं यं वमूलद्ववषोरु वृ
 धिकालिका। वसूत्रं वं समं स्वर्जिकां काथयकुला। सकृलवर्णं कार्यं तथा वसूत्रयत्रिधुर्गं। सूत्रय
 मूर्क्तिर्गं नागं गवृक्षं वयपाययत्। मधूनिगुवगणीं चिक्कंदवदत्रातित्रायवान्नवा कूलकौं श्ययं वमूला

१११

तं ३

निर्वैर
 वसिर्वैव २ पा

निपाचयन्। काथेनाननसहितं वा नादं काथयदसं। नत्रसंलवर्णस्त्रिंशं वा नर्णप्रतिपाययन्। मुद्गमल्ल्याद
नर्वेवनसंनसरुजयन्। किर्यां सर्वान्धनागस्य निष्कस्यकात्रयन्। विधिनानं नागस्य वातगुल्मः प्रगम्य
ति॥ ॥ अतिपालकाश्च गजायुर्वधमहाप्रवचनवातगुल्माश्चायथा॥ ३८ ॥ सक्रियः सनिदानश्च पितृगुल्मः
प्रवक्ष्यते। अस्त्राश्रकटूतीक्ष्णाणि दानाणि वयदादियः। राजनानि निषवतद्रुक्षाणि जलजानि च। सततं सव
मानस्यद्विपस्यानियतात्मनः॥ अतिमार्यं यदावापि सवने वातपितृगुल्मचिन्माधनः प्रयागमचगुल्मारुवति पि
रुजः। सर्पांशुर्विमनाद्येव नादरुजजनद्विपः। रुर्गंसंनद्धरुश्च गीतमवारिनन्दति। रुक्मतिमार्गमुक्क
वविदारुश्चास्यजायते। रुकस्य पत्रिणभवनवदनावाधनगजं। उदारं वक्ष्यते कर्मपितृगुल्मानिवर्हणं
उनीनं मयकं तार्धं मजिष्ठां नाहिणी कथा। रुनीनकीरुनिष्ठद्वसरुदर्वी ससात्रिवा। समाभ्यतानि सर्वाणि ज
र्जरी रुक्मसंवयन्। मत्स्यं ठिका समायुक्तं वा नर्णप्रतिपाययन्। पियाला निमधूकानि सानिर्वाकदली
रुली पाठलाय विष्णुपुर्णं वरुनिर्व्वचरुनीनकीं। विरुमूलं मधूकं च निन्दूकानि गतावनी। खट्वनी जीवकं
लोर्धं गथे वा मलकानि च। सर्वाण्यनानि सलिलसमरागतिकात्रयन्। सर्वमधूत्रकं सपिठं यथागरुवि

यावयत्। द्विप्रदस्यपाननयिरुगुत्साह्यमयत्। कथिंजलेमयुत्रेयलोवेय्यपिसतिहिनैः। मूर्संस्तुतंन
 संकत्वाशुजयदात्रर्षंगतः। ग्यामाकंमिलियादवमृणलकूविसानिवा। मूर्कवानिदुसर्वाणियवसानिप्र
 दायथत्। जंषांमलेकेस्यापि। यूकाग्रामः४ प्रणस्यत्। द्विधानीविधिप्रषस्यालिरुगुत्सायवर्णनः४ सज्जिय
 ४ सतिदानंश्रुषुगुत्सायवक्ष्यत्। हवनंलंघनंवापिनत्रर्षंगमनंघर्म। कूलाधामंप्रमार्थवयवात्रीव
 नयंनथा। यदानलरुतना। गदिवस्वार्यवकात्रितः४ द्विधानीविधिप्रषः४ स्यात्। श्रुषुगुत्सायवर्णनः४ सि
 प
 ग्मवमधूनावापितान्। श्रुषुगुत्सायवर्णनः४ द्विधानीविधिप्रषः४ स्यात्। श्रुषुगुत्सायवर्णनः४ सि
 मांसानामपिश्वनात्। श्रुषुगुत्सायवर्णनः४ द्विधानीविधिप्रषः४ स्यात्। श्रुषुगुत्सायवर्णनः४ सि
 चकृति। दूर्मनागुवृद्धिश्चत्रामधौरुषंयजायत्। ग्याहिनन्दीप्रधामाहकंवास्यानययत्। निवृ
 रुह्यल्यमल्यंययूनीषं। श्रुषुगुत्सायवर्णनः४ द्विधानीविधिप्रषः४ स्यात्। श्रुषुगुत्सायवर्णनः४ सि
 वगतावर्णी। नकात्रीयत्। रंमंथसमरागनिकात्रयत्। कदूषूनेलसंयुक्तंनंकारं। प्रतियाययत्। वा
 र्ध्यावनकमालंमूसुक्तंवदनागिवागियूवीर्जकूलकंयविरुक्तंरुक्मिपियली। यवानीयंमूलक्षकाल्या

११२

कृतिः४५

मादाय पावयत् । निर्वृत्ता न स मायुर्कं न कार्थं पाययद्विपं ॥ पयं वाचि न विलस्ये न लं धी न वि पावयत् । न ह
लं गुल्मं न ह्यर्थं वा न र्णं प्रति पाययत् ॥ १ ॥ न र्णं न सौ स भवनं विद्यती म वि चा नि च । राज ना
र्थं व पा न च वा न न नी प दा य यत् । व वृ प र्णं कृ णं का णं हृ णं पा द ग लं नृ पा कृ ती न पा दं य व र्णं क री र्णं व व
दा य यत् । ड म्ना म् ल व णा नि र्णं क रू ती क्का णि राज यत् । पि रु गु ल्म स्य य त्या कं वा ध नृ त्य कि ल क र्णं । त स
मा न स मू क्क नं गु ल्मा रु व ति । णा णि र्णं न कं मूर्णं प री र्णं व व र्णं च नि ग कृ ति । न मा न स्य य र्णी र्णं न पि रु ह र्ण
ग्र जा य त । प्र ते म्बु ल व णे वि श्या द क गु ल्मं वि कि ल्प क ॥ पि रु गु ल्मं दि न स क वि धि ॥ का र्थं वि कि ल्प क ॥ स र्ज
पि या ल म ध र्क म धू कं च न्द नं न था । नि वृ त्तं व स क र्णं व स ह मी र्णं न र्णं न था । नि न्द्र का म र्णं र्णं च ग ता व र्णी
रु नी त की । स म रा ग नि य य सा पा व य द ति य कि न ॥ प रि ग्रा व य न का र्थं र्ण क र्णं वा वृ ण्ण सं य र्णं । पा य य द
व र्णं न र्ण न र्णं स य कं म धू क न वा र्णी प र्णं मू ल म धू कं न था ग र्ध व र्णं रु क र्णं । आ न र्ण व र्णं म धू का नि का ण म र्णं च
ग ता व र्णी । प य स्या द वि प र्णं व मू ल मि दू न क स्य वा ग र्ण ति कं स र्णं जि र्णं रु व र्णं वा व र्णो नि च । कां ठ र्ण क
ल्य पि त्वा रु स मा न्य ता नि पा व य त् । स र्णी र्णं न र्णं च का र्थं र्ण क र्णं वा वृ ण्ण सं य र्णं । च उ र्ण म ध गु ल्मा र्णं प र्णी का

x x x

15

10

5

निवन्नादयित्वा प्रसन्नया सह पानं दद्यात् विमूकं नार्गवेन कर्कटं न यनराजयदिति ॥ ॥ **ॐ** निवातिक
 द्वाग ॥ ॥ अर्थः कटुकं नीक्ष्णं मूलवर्णका ननस्य वनात्तिरुपकृतिर्न द्वागं जनयति । स रुच
 निरुद्धा शब्देषु विमना विकीर्णं रुक् ४ पविमूणी विनमति क्वायति निमीलति ॥ सतकं नीर्जनी नास्ति न
 न्दी सलिलावगहा कां की नस्य रुक् ४ पविमूणी विनमति क्वायति निमीलति ॥ सतकं नीर्जनी नास्ति न
 य ४ निर्गपायं यत् ॥ जंगले श्वनसर्विमुक्तं धैर्यं कटुकं द्वागं राजयदथ संपद्यते सुखी ॥ ॥ **ॐ** निपैरि कट
 द्वाग ॥ ॥ अर्थः मधुन गुनस्त्रिगुणितं राजनात् करु ४ यदृच्छा ददयमवपीठयति । स रुचति गजा
 जिह्वा लाला विध्रवी ॥ सुलंघ्यसिति लक्ष्मणाय स नमो ह्य नमदमनि । गिनि न वमुदधी रुचति । तस्य रु
 षर्षं नि कटुकं कषाय नूक्ष राजनी । सानि वाग्मर्षि श्यावा भ रुद्धमस्मा वद न संयुक्तान् कवलान् दद्यात् न
 गन्तु की की न दृक् कल नदी ज्वृन्तं वक वलान् मधुमिग्रान् राजयत् । कपिलं क्वं कर्षु पियं गुमस्मा
 तालपशाभं कषायं यादा वनिष्ठमवताय विनो गस्तिर्न मधुना सह याययत् । विमूक द्वागं वेन मे (न
 यन न भन राजयत् ॥ **ॐ** नि कट द्वागं नमूयत दिवद **ॐ** नि ॥ ॥ **न** वर **ॐ** क ४ ॥ द्वागं मुगय ४ य
 निरुद्धं नयन ॥

निरुद्धं नयन ॥

15

10

5

प

का वातपिरुकरु लोकाः॥ न तान् यथा कुरुष्वेति मातृसाधयद्विषक॥ ॥ नृनियालकाखागजा
युर्वद्वितीयत्रकानसकनितभाधायः॥ ॥ नृरुखलुशागजानांगुत्रागधत्वा नः संरुवन्ति स्वदह
संरुवाः॥ वातपिरुकरु सन्निपातेः नृषां वातसंरुवमवादी वद्वामः॥ ॥ संरुवत्यतिप्रसक्ताद्यायामा
दह्यध्वगमनाद्रुताहवाद्ः क्लान्तयनादह्ययवावा दतिर्वधनात् क्लान्त्यवातक्लान्त्योगाङ्गां गलयवस
 न्नायथा गमत्वातिमार्तदंष्ट्राजनां रिद्याताच्च वातः प्रकृपिता गमना गंजनयति। तत्र मानि लिङ्गानि दर्शय
 ति। गणात्मस्य रुरुः प्रयथूष्य जायतती वाचवदना सन्निधौ मयध्वरुवंति। अतिर्गं सर्वगणां लक्ष्म
 न्यासः नृनेर्वात्राके नृवनिधिलानि च नखानि ककुब्जवह्निर्गणानि च विरुनति स्वातिकं गमना
गणां रिह्यत नृनि विरुथा वा नृस्य चिकित्सि रुमूय दद्वामः॥ तस्या दोषतर्तलवसारिः सम
 सारिः प्रविषकः सतर्तकरु वीयथा ययथा संहर्तान् वयान्॥ तथा नृनियान विनचनानू वासनस्का
 यनस्य विद्वान्। राजनं च वातद्वयवसान् कविर्धरिर्विद्वान्॥ किर्यां वा स्य निवर्तयन्॥ नृलैर्विषका व
 गरु निनि वसवमानि च निवर्तयन्। स्वदह्यगणिनभा कालेर्वाध्वयति किर्यां कुर्यान्। सर्ववीजानां वातद्वय

११४

म२.

५२

प२

5

10

15

20

25

30

नमः गार्गाय लयं कानयत् । द्विपंचमूलानि माषान् संशुभ्रयत् न साधयित्वा सीधुदधिवत्तया वायान्नसुखा ३३

नीचूर्णानि कावर्तलं न पाचयित्वा यथाथागम्य नारुं कानयत् । कपिलं मधूनि पूर्वभाटयुषकांश्च नार्क
नार्कानि मधुकांश्च सक्तीनि वसं कुश समरागम ॥ भनमोषधगर्ल समरागदूग्वनपाचयत् महाका
ल्या । न नास्य नाली स्वर्दक्यात् । कनार्यं गस्य कनस्वदस्य वपत्रिषवर्नं गवयाः ॥ सीधुनां कर्तव्यं च तम
॥ नवर्क्यात् ॥ अहिं ग्रामधूकानि युक् कवरी वतकोत्री रुददा नूतधुलीयक ॥ अलवत्तसीकि
वसर्षपतिलान्धिसमरागमनू सुक्ष्मचूर्णं कनानूक्षी वलपाचयत् सुदुर्गेलं च तव सारि ॥ गतः ॥ सिद्धमवतार्य
गनसुखांश्च नापि गार्गाणि लययत् । आरुकी मधूकानि युगनमूल केन उवीजानि विन्धरुषडी । पृथिका
वलागसीतिलसर्षपस्यवर्तुल कलक किं ववदत्र विल्वचूर्णं नि समरागमनि पाचयित्वा च ततः लव
सारिर्दध्ना सीवी न कदा सुनामं ॥ नवसंयोजनगावयत् नोहित पाणी नमस्यानू संशुभ्रयत् न ॥ यं च नाय
मकता महाकाल्या मासं तमासुर्वयूनः काथयित्वा अतः नार्कानि न सुखांश्च नयत् लयनं गार्गाणि कानयत् ॥
तथा द्विपंचमूलानि लान् माषान् सवर्षांश्च नेलचुनयामां लिगया ॥ समरागया ॥ साधयित्वा अमृतं नदध्ना
संयोजन नापि सुखांश्च नयत् दहं गार्गाणि कानयत् तेलचुनदध्ना नि सुखांश्च नि याग नयत् थक् समस्त

निपाययत्। गधवत्। नास्त्राग। कूत्रकवासावाक्लीक कंकटकात्रिका कर्कशानूक कर्कशीमधूक कट्टिप
 लुं मूत्रपर्वुं मनीपाषाण रुदिका विल्वपाटली यवागसीमधूक कान्तकूलस्तूपावयित्वा गतस्तं निःक
 र्थं द्विगुहं गेलं नपावयित्वा मधूक गुरुं पाययद्वात्रगं सयिस्त्रिलदधीनि सुखाक्का निवृथक् समस्तानि
 वापाययत्। द्विपंचमूलं गृहीत्वेनं स्त्रिग्वन समाकुलं गत्रस्यूक नराजयत्। सह दाना कनान्यतमन
 वागयगमन नस्तद्वयक मणयवत्रत्। निर्वर्तिक न वास्य विधिना वस्त्रिकर्म कुर्यात्। यथा कवस्त्रि
 प सिद्धविधान न तवावलिं दद्यात्। अथ दकयत्रिषकार्यं गयदहलयनं सकत्र सहाजन र्थिं शक्तात्रिका
 पनाहहलवाषाणकारीषाग्निमां सस्त्र दारि विविधिवन्मर्दनो धनस्य स्त्ररुपानराजन र्थिं शर्त्तव
 स्त्रिनस्य कर्मप्रयागत्र सहाजनलघुनगुलुलुविधाना यथागादिरिग्वन गमस्यति ॥ ग्वयधूर्वदनाति
 गविणषात्सर्ज्याहसं दानसं नखपालिहस्ये स्कत्रां सदग्नादीनां वसतगमूयलस्य गतग ॥ ॥ ॥
 कर्मविधेर्ये रुवति। नस्य सूर्यप्रिगस्यत्र द्वात्रिंशत्स्य सन्निहितस्य स्कनगयनयानागनायपन्नस्य य
 थविगतस्यां गसूत्रक कपतादायेनस्य सर्वसंरुगसंस्कारस्य कूलपत्रिंशत्त्रिंशत्स्य सदगयर्त्तं निषजा

११३

कनयनि।

विधाननविधिज्ञातगिनावधनदृष्टानियतिधाननासंमूढहस्यायर्ध्वदविदाज्ञातनवियधिना।

यत्॥ गत॥ कोरुवत॥ य॥ स्वये॥ कमविहिते सुभाय दहे नर्ये गेन नितरुने श्रयान शोशक कथास्य पत्
 दतिगवना गमू यनागनामनिल समुक्ति रं कमलानुगां श्रु कमविहिता क्रियायथा गमनं शुक्रा कं
 विधि मनस्य यः प्रकृत्यात्। सुकार्य॥ सरुवति पार्थिवे मर्हता वदन्ने त्रिवरुवन प्रवजहसु॥ वातिक
 गवना ग॥ उक्कर्ममस्यथया गंयध गमन कट्टका मूल वल श्वना दत्यथया गलितं प्रकृति रं रुवति
 गत्य सि मि॥ गगनाणि दधु नतना॥ तीव वदना र्क श्रुति वयधू श्रुत्या श्रुत्व मति मार्गं गगनां गत्य
 सुना संयुक्त नद्य तना र्गं कृत्यात् निलन वासुर्ज न सैन कवलन सयिषामृ गाल मूसु मधू कर्म जिष्ठा यद
 करुद दानू कृणय वानू कलु पिष्टान दधि मधू द्युते॥ स्या अलपयत् गगालि॥ अथ वा यद्वा तल कूम
 दगुं गट काले वल विष्मनि वत संकृ गालि मूलानि कक्षा नसु निषण्ण कानि यषयत् नैव पि कल्के दधि स
 र्पि संयुक्ते॥ यलपयत् यद्वा सा निवा॥ मधू क चंदन मूसा दा दाला धाणी न कूम दा तल पृथीका॥ ११॥
 अगालि पिष्टा जी वन रुण गूल्य॥ कालाणी तनि वानि तल विष मृ गाल यव कृष्णं श्रु सर्वा लि समरा गानि
 दूग्ध नय ययित्वा न न सद्यु न न कल्के न सुदिग्ध गगस्य गगना ग॥ ये हि क॥ यग्न नि मूय ग कृति॥ जीवक

अथ वा यद्वा काली नय वचन न मं जिष्ठा जीवना लि समरा गानि कल्के पिष्टा नि दधि द्युते॥ स्या अलपयत् गगालि॥

११३

धयित्वा नैस्य स्वर्दं संकं गणगणं कुर्यात् ॥ पाठनिविधा हि मावचामधूकलां गली मूलानिलाधलुनैतासामं
जिह्वाहनीतकीदहनिधयिर्युतं ललवलाकि धानि समरागानि चूर्णयित्वा दधिने लघुने ४ संयाञ्ज
विचारं कुर्यात् पयित्वा तनसूखाधूनयत्नं गणगणं कात्रयत्नं ॥ गणगणं कोरुवत ४ ॥ वृत्तिदायसमूहानां
काहिता रुषज क्रिया ॥ चतुर्थं गणनागणनस्यार्थं लिख्य सलक्षणीयं नानुसाधयद्येष्टो गणनागणनयथा
विधि ॥ संपूज्यं सतर्जनां क्लावतमानयत्रिग्रह ४ ॥ ॥ वृत्ति सान्निपातिक ४ ॥ वृत्तिदायज गणनागणन ४ ॥ अर्थं गण
निजवहितमना ४ समासी नमनिकल्पमवाचयात् कार्थी ४ गवतवनवधिकवलसखगुणयुकादतिन
४ ॥ वृत्त्यवमवगतस्मितगुतर्षां सरुसारुत्रल गमन ४ तत्रल विहने ४ ॥ संगडयैत्यत ॥ गणगणं सकथमत्य
यनव्याधि ४ कतिविधावाची कं सग ४ कतिरुं ग ४ कतिविधं विकित्तितां कथं वरुग्नवाधेर्विच्युतिविह्व
पनिम्नानि नो जानीयादिति ॥ कश्चित् सज्जत गणगणकश्चिल्लेन कश्चित् सज्जत कश्चिदयस्कात्रल कश्चिद्वन
साकश्चिदं सन कश्चित्सर्वदू ४ खित गणगु वृत्तिगर्षां गत्व गारुन साध्या साध्यायपत्याख्याध्वनीता पकमाणां
यच्चवाधौ नपदिग्धं निनाहिक नववग नयनाधिष्ठाना वृत्त्युक् रवता ॥ अथविनयादवनगितेन समग

ति ४

त २

वह्यपक्वानसंगः उत्राकर्मवि विकारवि लषासंग उहाता गयत्यर्न सांसदगता मूदहनगमनमूपवर्गन २

पर्यक्तगतिश्चरुव तीतिगतसंगः॥ प्रसुद्धाह ॥ हनर्ग ककु दूदहनमवनमनवाधारुस्यतिषाहसंगः
वाधायक्तात्रकदाविकारुसंरु॥ ककु दूदावगनमनूवगनवानित्रीरुर्गगमनवादू॥ खादिनात्युत्रः
संगः॥ प्रत्यंगसांरुलककर्णुमुखगि॥ निनाधनार्गककु दूदहनगमनमित्यंसंगः॥ सर्वलिंगद
र्गनसर्वसंगरूति॥ सर्वगुथयधर्वदनासंरुगतिवैकल्यानिनियतानिरुवन्ति॥ सतिविधः साध्यासाधः
यथाख्ययथातगनिर्गुनसंधिजः पर्वजः सवयवर्गं ग ॥ साध्या॥ व्यावधयवनयत्रिमात्रान्यपि सर्व
प त्पत्रायकितानियानिरुव ॥ साध्यानिवागवागिरिषकुसा ॥ साध्याकालसंयदासिध्दन्ति ॥ तर्वांगी
ताम्रायद्विविधक्रिया॥ रुवनिवाग ॥ लक॥ रूत्युदि॥ समूद॥ षण्णवर्धयथाकर्म॥ विकित्तिगमथाय ११२
स्यविस्रब्रणयवद्वत ॥ अथसनस्कं ॥ महर्षिमरिवाद्यां गधियतिनूवावत्रामयाद॥ रगावनयदकंरुग
वताआगनागग्रागस्यषण्णवाधस्यलद्वर्गं गद्वत्वा ॥ महर्षवेकल्यमनसः स्यवर्कं नस्यविकित्तिगम
यददमर्हसिरुगवन्निनि ॥ अथवावपालकाख्य॥ उका मयास्वदहसमूक्तस्य गगनागस्य समूत्पलित
कलं विकित्साय ॥ आगनाविदानी विकित्तिगमूयदद्वामः॥ तस्यां गनिवदू॥ गीगलनयानीयनसवय

ग॥ ग॥ ला क॥ शं व मृ॥ लि क॥ या॥ य॥ लि॥ य॥ स॥ र्ज॥ र्ज॥ न॥ क॥ द॥ व॥ क॥ ला॥ न॥ य॥ द्वा॥ त्वा॥ ल॥ क॥ म॥ द॥ जा॥ त्वा॥ ति॥ म॥ क॥ क॥ न॥ व॥ मा॥ लि॥ का॥
 सह॥ का॥ न॥ न्दी॥ व॥ न॥ स॥ क॥ क॥ दा॥ स॥ न॥ नी॥ य॥ क॥ ठ॥ ज॥ पु॥ न॥ ग॥ व॥ म॥ य॥ का॥ ला॥ क॥ ति॥ ल॥ का॥ मा॥ न॥ क॥ या॥ ठ॥ लि॥ क॥ न॥ व॥ का॥ का॥
 ल॥ ध॥ व॥ ध॥ न॥ व॥ न॥ का॥ त्वा॥ ला॥ दि॥ रि॥ र्ज॥ र्ज॥ सी॥ य॥ न्ने॥ क॥ म॥ मे॥ य॥ की॥ र्ज॥ रु॥ मि॥ रा॥ गं॥ स्त॥ नं॥ ग॥ र्था॥ व॥ क॥ वा॥ य॥ वि॥ ष॥ कै॥ य॥
 गी॥ न॥ न॥ वा॥ वि॥ ष॥ य॥ य॥ सा॥ वा॥ का॥ न॥ य॥ न॥ ग॥ ता॥ यु॥ द॥ म॥ूल॥ म॥ न॥ व॥ का॥ गी॥ वा॥ लि॥ की॥ न॥ व॥ य॥ य॥ यि॥ त्वा॥ द्य॥ न॥ न॥ व॥ य॥ थू॥
 म॥ न॥ म॥ थ॥ य॥ ल॥ यं॥ का॥ न॥ य॥ न॥ ल॥ क॥ न॥ य॥ (य॥ ध॥ ध॥ क॥ रु॥ म॥ न॥ म॥ धू॥ का॥ र्ज॥ न॥ क॥ द॥ म॥ व॥ क॥ र्ज॥ की॥ न॥ यि॥ द्वा॥ रि॥ य॥ ल॥ य॥ य॥ ज॥
 ग॥ लि॥ न॥ ल॥ वं॥ श॥ ल॥ द्वा॥ वे॥ न॥ म॥ लि॥ का॥ नां॥ म॥ूल॥ नि॥ य॥ व॥ ति॥ ल॥ क॥ क॥ स॥ न॥ क॥ क॥ मि॥ ग्रा॥ लि॥ स॥ पि॥ की॥ ना॥ र्था॥ सी॥ या॥ य॥
 ग॥ ग॥ ल॥ य॥ नं॥ क॥ र्था॥ न॥ क॥ म॥ द॥ त्वा॥ ल॥ य॥ द्वा॥ क॥ वि॥ ष॥ म॥ूल॥ ल॥ गृ॥ म॥ ठ॥ क॥ क॥ स॥ न॥ का॥ र्गं॥ क॥ क॥ यि॥ द्वा॥ नां॥ द्य॥ न॥ न॥
 सह॥ ल॥ य॥ य॥ य॥ व॥ ति॥ ल॥ ग॥ धू॥ म॥ चू॥ र्ज॥ य॥ द्वा॥ क॥ क॥ स॥ न॥ क॥ क॥ द्य॥ न॥ न॥ य॥ य॥ सां॥ ला॥ य॥ ग॥ ग॥ ल॥ यं॥ क॥ र्था॥ न॥ या॥ ठं॥ ल॥
 यु॥ द॥ द्वा॥ लि॥ का॥ नां॥ म॥ूल॥ नि॥ व॥ स्त॥ म॥ूल॥ ग॥ पि॥ की॥ न॥ व॥ द्य॥ न॥ न॥ व॥ सह॥ ग॥ ग॥ ल॥ यं॥ क॥ र्था॥ न॥ ता॥ य॥ य॥ द॥ ह॥ न॥ य॥
 था॥ या॥ र्गं॥ यं॥ जी॥ त॥ य॥ या॥ ग॥ ग॥ न॥ नां॥ गु॥ र्गं॥ गु॥ ग॥ ग॥ य॥ ग॥ नि॥ ग॥ क॥ ति॥ म॥ू॥ थ॥ वा॥ व॥ ला॥ ति॥ व॥ ल॥ था॥ य॥ ल॥ ग॥ र्गं॥ य॥ द्वा॥
 लि॥ र्गं॥ ज॥ र्ज॥ नी॥ क॥ त्वा॥ वि॥ ष॥ ति॥ य॥ क॥ ना॥ य॥ क॥ थि॥ र्गं॥ या॥ दा॥ व॥ ति॥ स॥ व॥ ता॥ र्था॥ न॥ य॥ य॥ स॥ य॥ त्वा॥ न॥ य॥ क॥ द॥ व॥ दा॥ न॥

७२ का दि

वा ३ न २

त्वहिः कल्कपिष्टादिद्युतयकारिः प्रलययन्मया विप्रथविगतामनसजवनह ४

यस्मीमध्वं चूर्णं दिव्यं लीसमां वायुनत्रधिग्रथरुपयं वने लयस्तु समा लोय साधयत्। सिद्धमवतार्य
र्यगपांतस्य कर्मसूयथा जयत्॥ अथैयवसकुवदत्र चूर्णं द्युतयकं गीतवानीयं वाययत्। ततश्चैतं ग
तोभीतद्युतनायं सुवन्दना गीतसात्रिंजीवनकूटनटयदाकमधूकपयोधुनी कदवयुष्यमांसी कृष्टयाद्यन
खरु नृपलारिं न्यायप्रधाश्वत्राध्वक्तुमधूकदर्वे महिषागमसर्पसिक कूटगिधुमात्रभदारिः सरुसर्प
पाययत्। तनगगगानि वास्यार्यं जयत्॥ जननरुगनविद्युतमधि त्रविग्लिष्टानं संधानं रुवति। का काली
कीवका काली जीवकर्षरुक्कश्चिद्विद्विभदमहामदद्विमूद्रययुष्य श्रीमधूकसा विवाननास्यन्दन
त्वहिः ४ कीत्रं विपाद्यगीतली कत्वायखतर्कैर्गोत्रं द्युतं पाययत्सर्पिषा वास्यं जयद्वागालि। अहिं सांजं वृ
त्वचं चूर्णं कृत्य यवकुल्लाषमिध्वाननमदसावावयित्वा नीतं विषमृगान् गृह्णाटककसं नूकास्वयं गु
फा कल्कं न सद्युतनले पथद्वागालि। नलवैरुलवतसं दूगालीनां मूलानि कीवगभक्तपिष्टानियवति
लकसं नूकल्कं न स्याद्युतनगगलपः कार्याः॥ गभकारुं वत्रागं त्वचं वतसं मूलानि चूर्णं कृत्य ययस
साधयित्वा सिद्धमवतार्य र्यगवानवस्ति नस्य कर्मसूया जयत्॥ गथागममहिषा जानां मूगपूनीषालि

नाननगवालिपयत् ४

१२०

दधिवृत्तदूरेऽसंयच्छ काथयत् ॥ तगा वायवाक्ली कचमनी यगा गियवनि लयिष्ठौ लवणनियवयित्वा
 पचमाननननास्य सुखाङ्गनसं कचनगमगा निप्रश्चदयत् ॥ तगास्य गमगागं मादवमयजायन व्याधिधन
 ग्यति। प्रवकादव ठिं समद्रुवला काचकवाक ॥ ॥ तिलिनितावकया तवहिं कूकूठ्या विकलकलमध
 रुनिगमयत् नाहितमहिषाजव नारुमांसेऽवसं वसवा नयूकं कात्रयत् ॥ चकणीत्याद नचमसि नमन
 नवसवा नगसद्युतनरा जयित्वा नसमनूपा नदद्यात् ॥ नतदवधेनू विग्रुतवलकी नमं निर्यातवला गमविर्ग
 गगुना गगुलि रूगानां विधेयमनने वसर्वं सजातवलवीर्या रुवक्रियमूर्धन व्याधिरि ॥ तगा (धौ क ॥ ॥ वृत्त्या
 गगाऽक्रियाया कामयापार्थिवसकृमा गगुना गगुना गगनां यथावदनुपूर्वग ॥ ॥ वृत्तिगार्ग्य कषण
 वाध ॥ ॥ मू (गहि नजा चम्यायां पालकाख्यं स्पष्टकुति। गगुना गगऽकति विधा वक्रिनां संयुक्ती लिता ॥
 विक्रान्तचक्रं गसां किंच नसां विकिसिर्ग ॥ तमत्वं पृच्छुगा बुद्धि गगुना गगुनपृथग्विधान्। स्पष्टस्त्वंगवाजन
 पालकाख्यं सुगाववीत् ॥ नूयत ॥ धा ॥ विधेय गगुना (गहि र्दतिनां ॥ सुद्ध ॥ निपारं ॥ २ ॥ निषिद्धं ॥ ३ ॥ विरुर्ग ॥
 ४ ॥ त्वाहर्ग ॥ ५ ॥ गथा ॥ ६ ॥ संकचिर्ग ॥ ७ ॥ रुर्ग ॥ ८ ॥ म्लानं ॥ ९ ॥ मावधि ॥ १० ॥ तंचयत् ॥ ११ ॥ निविद्धिर्ग ॥ १२ ॥ वि

ॐ यं माटिर्नमथिर्न॥१३॥ गथं प्रकाशं नेह॥१४॥ सद्यश्च किर्न॥१५॥ विद्युत्तमव॥१६॥ नूतिषाठगसंस्कृतं द
 तिर्नो गगस्यय॥ वाधयस्समृद्धिर्नूतिस्त्रलक्ष्मी॥ गगदोस्त्रुगगस्यलक्ष्मीप्रवक्ष्यतायतानिः
 मिरुंमार्तगग्यत्रलक्ष्मीरुमिक्कति॥ विषमस्त्रुगगयनादजीर्णध्वनानाकथागुर्व्वधयथागमदा लंघनस्त्रु
 नादयि। स्त्रुवा रुवति गगयूततः॥ मिष्टतिवात्रलक्ष्मीगगयत्रयावापितनातीवचदूर्मना॥ तिष्ठत्यालान
 माप्रियनवपादनतिष्ठति॥ नूतिस्त्रुवसमृद्धिर्नूतिर्विकित्सातस्यवक्ष्यता। सचनं सर्वगगलक्ष्मीतस्यते ल
 नकावयत्। ततः कुर्यादिमं सम्यक् विधिं गम्य विनिर्गता॥ तस्यायागुत्तुतयनजलनयत्रिषचनी। कंवला
 वृत्तगगस्यकावयत्ततर्नरिषक्॥ अथंतिगुर्व्वधुर्नूतिर्व्वक्ष्यता। काकथावयि। वासंख्यासितयधुर्नूतिर्व्वक्ष्यता। काकथा
 सुत्रस्यवा। रं गगनादायविधिवत्स्त्रुवार्थमाधयवाचयत्॥ अथस्यकावयनाथीयथसंप्रति सिद्धयाम
 ध्ववितस्त्रुविस्तीर्णमूलवान्निनिर्मिता॥ लाकार्यानाथीमहीयतनाह॥ संस्कानतग्यवृत्तागग्यकुसं
 स्मिता॥ तयास्त्रुवकगगस्यनिवातस्त्रुस्यदंतिन॥ स्वद॥ कार्यामूक्यस्यकृत्वास्त्रुवावसचनी। विज्ञाय
 चवर्त्तवास्यागस्यचवलावर्त्त। रिषक् संचावयनाथीत्वदाहं चविवर्जयत्। तस्यदंताहनेत्येवकृत

प

१२१

वा१ मुखधर्तु३ तस्या३

स्वदस्यदतिनः। जनेष्वपि रुवत्कार्यं सर्वतः पविमर्दने। कूटजस्य निर्मथस्य मषण्ठी गीकपित्तुथाः॥ वरुण
 स्यान्नूतु कस्य पण्ड्या नवधस्य वा। मूढकी सकपर्वु वतथ सैन्यकावूरो। कृत्यामाधय कर्तव्यानां शि
 दः पूनः पूनः सिन्नस्य वरुवत्कार्यं मर्दने लघुगदने॥ अयमन्याविधिः कार्यं नाजनादवकावर्ण। म
 हिषस्य वराहस्य मार्जनाणां गवामपि। स्वनास्त्राणां तर्मां सानिग्रहान्यस्त्रीनिवायथा। कदयित्वा गतस्मा
 निनाडी स्वर्दय कल्पयत्॥ यथैकनेव विधिना मर्दने गस्य कावयत्॥ कूलकानां रुकीवीर्जवदनालिय
 वांसितानां ययसायें वमूलं वस्तु ल्यामाधयया वयत्। तथा स्य कावयत् स्वर्दनाथे वसतर्ग रिषकास्त्रि
 नस्य वयनेः कार्यं मर्दने पूर्वकीर्तिर्ग। नच दने विधिना गतं गकुतिमादर्वी। तथा स्य विधिवत् कार्यः
 खलस्वदास्यनंतवः। समीयते स्य नागस्य कर्मलैव न रुवत्॥ तथा स्य लाययत् खलान् अग्निवर्धु नू
 रिषकृतथा। पाटला वद्धगणस्य तथा स्त्रिष्वस्य दन्तिनः। तिलसर्वयचूर्णे ध्वयवे अलपन रुवत्। गगः
 सैवावयत् खलं यथायागी विचक्षणः। सिन्नव विधिवत् कार्यं मर्दने तस्य रुस्मिन्। रुवन्नचतुयकृतिम
 न् पूनस्य समावयत्। विधयस्तस्य गणाणां सिन्नानां च निवर्तणीं वीजानि वा रुक्मायवाः कृष्णचमू

नग

अथ वीजाकार्या मूलमतसि सर्वपानपि। तिलान्।

15

10

5

5

10

15

20

25

30

15

10

5

१२२

३३

हिका॥ सम्यक् सिद्ध नदी नग सुखाश्रु नाथ सर्व ॥ कल्लु नानन नागस्य पिण्डं स्वर्ग्य कल्ययत् ॥ स्त्रिन
 स्यवपूनः कार्यं मूर्च्छुर्मवगमरुनी सलिलवर्णीत नागनी पूनः कार्यं कावयत् ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥
 विधिः कार्यः पिण्डं स्वर्ग्यथा कर्म । मर्दनं वास्य पूर्वार्कं नागी शुद्धं च कावयत् ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥
 वगमर्च्छुस्तिनः ॥ यक्ययनगमगार्भं सर्वतादः ॥ यमम्यति दवदा नूह विदां च सह दवीं गतावनीं ॥
 कर्षं नास्ति च कालां च स नर्त्तवपूनर्त्तवो ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ यवर्कं न विधा
 प ननमर्दनं च विवद्वगः ॥ निवातस्तस्य वास्यं गं मर्दनं तत्तु कावयत् ॥ सर्वस्वदन नागस्य स्त्रिन स्येव वि
 गमरुनी ॥ निवातं यं च नार्त्तं सक्रवागममथापि वा ॥ स्त्रिणास्यं गः यथा कवाः ॥ यथ कस्त्रिन षट्तिनी ॥ अथ वेत
 नकल्येन विगषा नायलस्यत ॥ अथेनं स्त्रुयत्तु सम्यगगतन विधिना रिषक ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ यव काल कल्लु
 नीं नि कार्थं साधू कावयत् ॥ यद्विधरुगु चैव नीं नि कार्थेयं च मूलया ॥ तर्त्तं ले समाग्नियतता मृद्वनिना
 पचत् ॥ यश्च मानं सुस्मिनिर्मं गरुं पुदाययत् ॥ अनं ता च दनागी नमः ॥ कसा विवाद्यती ॥ तथा च की न
 का काली जीव कर्षुका वरी ॥ का काली मधूर्कं वास्त्रा स नर्त्तवदा नूह ॥ रुनर्त्तु कं क्तिन नूहो वलीं चापय

त२ वाज

त३

5

10

15

20

25

30

नस्यसंविषल्लयत। नचतिष्ठतिगार्हान्वययतिद्विपः३

कापयतु। नसं हं पापयन्नागं रुकार्दस्रुससिगी। नतनसिग्वकाळस्यरुवमादवलाद्यवी। गगणांमून
संशस्यस्यसादप्यल्लयत॥ ॥००॥ निसुसुविकिसा॥ ॥विशान्नगमनं गमनं हस्तिनः सन्निपात्य
नवदनागूनरावर्धं॥ नवतस्यउलिं गमनि। नूतुद्धं विकिसिगी। सवनं द्युतमिधेयगतस्यनेलनकाव
यतु। यलप्यस्यकर्तव्यः कक्कनसतर्तनृप। ययोधुनी कंसधूकंसनलंदवदानूवा। यववूर्धुनिलाजय
रुवतुदीनद्युतेर्युतं॥ गताम्रगन्धकर्तव्यानागीधदाविर्भायत। ययसाद्युतमिधेयपानमस्यमहीप
त॥ ॥नियानविकिसा॥ अथानिधिष्ठमात्रस्यलक्षणीसंयवक्ष्यतेयतानिमिर्हं गतुषूगजं संरुम
वाच्यते॥ सहसातिप्रसक्तं वायाध्वननीयतगजः। नूयाव्यरिद्ववतिवायातिकृद्धामर्तगजः। सन्नि
धिष्ठं संहसाहमीगगानिवात्रगः॥ तस्यनिधायवत्तुगगनूधिरं संपद्व्यत। श्वयथसुस्यगगनूष
वदनावापजायत। धारुयाः पादपाः श्वरुयथात्यादतलषूवा। याकूस्सं चविनिधिर्हं गगनार्गविकि
त्सर्कः। सवनं सर्वगगानं सूर्यिषातस्यकावयतु॥ गंहीनसलिलं वेनं गजीनः। सवगमरुयतु। डलाय
वततसुसाद्युतमिधेयसुक्ररिः॥ लपनं सर्वगगानं तलानां वैवकावयतु॥ प्रवमृहिकयाचास्यकार्य

15

10

5

गीतलया नृप॥ कूकूणिगुमा नागां मूठान्या दल्यभमुविता। विवस्त्रितां सुर्वावासे दद्यात्कृदि गसंयु
तां। मूपनयः पयूषितां नूणां वमंहीयत। ततश्च लयः गीतार्यभगणं पूजिता रुवतू। कूकूणिगुमा
नागां मूठान्या दल्यभमुविता। मजिष्ठां चैव मृदीकां सपिषा सहयषयत। ततश्च लयः गीतार्यभगणं वरुलन
समाचनतू॥ यानि चैव यथायां गंयाययत विदा वल॥ विनिविष्टस्य विहर्गं विकिसाचवकीर्तिता॥ ॥
ॐ तिनिविष्टविकिसा॥ ॥ अथ स्येय रुवमेवैव पुंयल्यमुमहसुं सरुसानिधनायिवा। कोचर्यवापि
सुरुसायपि विनीतस्य दन्तिनः न्यसुं वा सरुसावर्धं गगुर्गनिधनसुथा। तत्र वलदायि सलिलनिनासु
युहिद्यातनः यस्मिं लितां गगुं सवृजं दन्तिना रुवतू। यस्मिं सवृजं गगुं वहिर्हवति वा वल॥ न च
सुनयथा गवा समं सुकुमरधकुति। निनायकायात्युस्मिं यथैव स्याजयत। विहर्गं नाम तं विद्या ल
स्ययं वद्वनक्रिया। मूयायामं सुखसुनं सुखं दस्य कर्तव्यं यलयाद्युतं युत॥ याययतूद्युतं सुखं च
कमेलं मर्गं गजं॥ रुसुनतस्य गगुं मर्दनं वायिका वयतू। कमवायाम वृद्धिं वविहितस्य विकिसि
नी॥ ॐ ति विहर्गं॥ ॥ आह तस्यायिव द्यामि विकिसां लवेण निवायथानिमिहं मर्गं गगुं वलसुं रु
सं३

गयामवधनं। कायश्च स्यते न सनतीति धनं। कूसायतिलकिं निदीयत सहयषयत। कतस्व३

१२३

बाह्यस्तिकर्षुपलाग्निकिलिच्छावेवयावयत्। नाडीस्वर्दयथायाकंसिन्नस्यचविमर्दनं। त्वग्निश्चापि
 कार्यः॥ यत्तथाद्युतसंयुतः॥ यद्वीजवलमीशावामद्वीजमर्गगजः॥ जायतस्यदाहयः॥ सथा। गतेव
 कार्यतः॥ ॥ रूतिगूनविकिसा॥ गुरुमध्ययार्गवालेद्यनस्रवनानिच॥ मूरुवीथीमर्ककाणं। गममूर्गम
 दुलानिच। वं। गमत्तापनकल्यचनोयोद्यनप्रभानिच। तस्यकूपयतिरुयिर्षयवभागासंधिषू। संकृचत
 गभगर्गवातनारुश्चनपिवा। याहापस्कात्रदहूपूनप्रक्षीवृथात्रपि। क्वचित्तु गमादूर्गमगुवागं
 रुंतिनां। सवथरुस्यगमगानिर्गेलनचसमातथा। कात्रयतसुखाश्चनसफ्रगंरंदिताः॥ आत्रगवर्धंसफ्रप
 रुमादकीदीर्घवृत्तकी। कर्षुकात्रात्रुवृकीचस्कल्यामाधाययावयत्। नाडीस्वर्दततः॥ कुर्यात्तूयथा
 वचविमर्दनं। निलसर्षपवृक्षुनलयनं गमकात्रयत्। विनाहवसयासरुतेलद्युतनवा। वं। सवात्रकुर्ग
 मांसदद्यात्सयः॥ समादृतं। नसीरुवतिगमगानिर्गेलनच॥ यतिद्विपः॥ यत्तयं तस्यगमगानं। वरुलनसमाच
 तत्। अथेनयाययत्यानंयथायार्गुरिषकेवत्रः॥ ततावित्रिकंविस्त्रायवृंहणीयेनूपाचवत्॥ सीजातमांस
 मार्तर्गं कमात्कमांठिकात्रयत्॥ ॥ रूतिर्संकृचितविकिसिर्ग॥ ॥ गतेगर्गयत्रार्थावाकुर्यादुग्न

प

१२४

दं

व३

मूला४

जम४

विकिसिर्त॥ ॥ नृतिरुगविकिसिर्त॥ ॥ मृथयस्यरुवन्मानगर्गवायदिवायन॥ तस्यात्यलिप्रवक्ष्या
 मिस निदानविकिसिर्त॥ संग्रमवायुहनेमुगस्तु कर्मणिवातथा॥ गिनायकवहारिनावदूमीचतिगमगिर्तात
 त॥ कृयतिगमवपवन॥ गमगितकयात॥ सगमप्रयतिगपागिसर्गवायनियकति॥ तस्यकृयादिदं कल्पनिखि
 लंगमगमविग॥ सवयलस्यगमगिसर्पिषां नृदकिन॥ निवृत्तरुलकल्लवजलजं वृत्तयेववासद्युगंय
 यसामिर्ग्यलपं तस्यकात्रयता॥ ॥ विधिनाययथकं नृदनेन तस्यरुस्मिन्॥ मृस्मि स्वदं वनिखिलं रुल
 स्वदं वकात्रयता॥ मांसनिर्गुहयकं वानेन॥ वासोयुदायंत॥ सर्पिः॥ कीर्तवसां चैव विधिना संयदाययता॥ मानं सं
 वत्सनात्तु र्जयावंग्यनसिद्धति॥ ॥ नृत्यववीत्यातकाख्या मानगमविकिसिर्त॥ ॥ नृतिमानगमविकिसिर्त॥ ॥
 मसुनिर्वर्द्धिर्न कृयादावक्षितमथापिवा॥ मर्गं तस्य समूह्यलिर्निदानं ययवक्ष्यता॥ कर्दमं बालकांवापि सव
 तयदिवा नृग॥ गमगानृग्यसरुसायदाहुयविगीयता॥ होमकर्मणिवाजाजनयुर्वक्षारि संयुग॥ यदा
 यनीयसरुसावा नृग॥ यतिनीयता॥ नृतिमाननिर्वर्धं वायना वायदिकर्मणि॥ निशाजयति सरुसामिथाय
 गमदयष्टिर्न॥ तस्य कृयतिगमवपमानृत॥ सन्निवाधनात्॥ नृविद्वान्तमागमर्गं तथा निवक्ष्यतापिवा॥ सवनेयु

धज

धज

ततोलास्यासततंगस्यकानयत्। नाशीस्वदध्यकर्तुवास्तनकल्यनदकिनां॥ निरुगवचकर्तुवां॥ निरुधि
 तस्यकर्तुवांसमगावचनंरुवत्। निरुधयलुधयानमननविधिनारिषक। अथकंस्वदयस्त्रिनसमगा
 लपयहिषक। पुलिफवचयदकावस्त्रिनववतानयत्। नचत्यकतिमाध्यातितधरुममथाचयत्॥ रूम
 कस्त्रिविधिकृयाथेनलायवमाध्यात्॥ यथायस्त्रिनमगस्यस्त्ररुपीतस्यदकिनश। यन्नुवस्तुवाकृयाच
 तस्यमगायवचनं। ततस्त्रयलिहस्तस्यमध्ययत्ननवचयत्। यथायानंरुधकृयाकनयत्तुवावर्णीसधि
 प स्त्रेलवसांवेवतद्विपयनियाययत्। स्त्रिग्विचिकीविस्तुयदंरुणीयेनूपाचयत्। रूपावस्त्रिननिवस्त्रिनतैस्त्रे १२५
 स्त्रिचिकिस्त्रिन। सहसावापियतनाद्यथनात्यतिरुसिन। यदासीरुचतमगर्गुरिद्यतमथतपिवा। तमाकृमा
 ठनं। नाममगयाधिनाधिय॥ वदनाधयधुस्त्रंरुगमगतीवाचवदना। तस्यवस्तुमागधनिखिलेस्त्रे
 विधि। रुग्मगस्ययत्थाकंसाधनंरुग्मसंविस्त्रे॥ तत्कार्यमाठनस्यापिबुधवचनं॥ रूतिमथितविकिस्त्र
 ॥ ॥ अथवानमधिर्गमगमयवावापिलुचन। तस्यात्यकिनिर्दानंवचिकिस्त्राचयवस्तुना। सहसावायस
 कंवायदावास्तुवावर्णीमगायप्रकामयति। सहसाविषमस्त्रिनश। कर्दमवातुकायांचसंजज्ञावावसी

माच ३

15

10

5

दति। तत्र तवायसं (गनसलिलस्यार्थयागतः। मूथवायुसं नञ्चः सरुसापविधावति। वृद्धाकात्रयविधा
 नसरुसावायुमर्दतः। तगास्य कृपितावायुनकमादायतिष्ठति। कत्रातिगतिर्वैकल्यं च नञ्च सं रुमेव च।
 ध्वयर्थं तस्य गमनमनसापवदन्ति नः॥ ॐ ह्यतद्विधिं धाकीर्लिंगमन्मथिनस्य वासयिषा सचनं तस्य सत
 रं कात्रयं हि षक्। यलं यणीतली तस्य दीनदृक् ॥ समाचनत्। वतस्यैवेव मूलानि वटस्यास्य नलस्य वा क
 स्रुक् समीजिर्षं नलदंत्यं नकथा॥ ॐ कृपिर्षः ॥ समं नमः ॥ यलं यं तस्य कात्रयत्। विनार्णं च नार्णं वा तन
 ॥ सीपयत सुखी। मूजादीनं वसां मजां दूतनसरुसं सृजत्। तगास्यसिं वयद्वागमननविधिना रिषक्।
 मूलान्यत्यलं जं वृत्तां कत्रवी नाल्यलानि वा सद्यतं मृत्तिका मिर्धं यलं यं तस्य कात्रयत्। गीतनतं कल्ल
 नविहि तं वा नूलयनं। यावदूष्णयनमनं ध्वयथा ध्वनिवर्त्तनं। स्वदनं मर्दनं च वयधर्मयत् कीर्तितीत
 स्य गमनं हि तदयिनि नूष्मधूपयादयत्। विविक् सततं स्तनं व्यायामं च विवर्जयत्। सयिः ॥ दीनं वया
 नार्थेयार्थकं वयलं यनं॥ ॥ ॐ ह्यतद्विधिं धाकीर्लिंगमन्मथिनस्य वासयिषा सचनं तस्य सत
 तदापि लादयादावाद्वयानि यवनाहताः। स्वस्त्यास्यदुग्धमधुध्वयर्थं जनयन्ति। समं गच्छन्ति च नवि

नग

१५ धर्मवाचिबद्धत। न सुखं ललुतस्तु न न गयामरि नन्दति। तमाकू र्वात्रर्ण वेद्याः ॥ नूनमका न (ग) हि गी।
 १० ग्रामद्वयोर्मनस्यं प्रसं ॥ वलवा लयाः ॥ दन्तिनां मदिकाले व पूर्वलिं लीनिमृत्तव। विपर्यय कुलिं
 गनो रुवत्साश्च स्या लद्वर्ण। मी यदान्यपि जायन्तथा न नृपाणि दन्तिनः ॥ तस्य दार्षवि (ग) र्णं वपत्री च स
 तिमान् रिसकायथ स्वमवै पूर्वधा क मूपकर्म ॥ ॐ ह्येकां त (ग) रुचिकित्सा ॥ ॥ किन्नगरस्य विज्ञानं
 चिकित्सा चयवद्वन्तायदा कता वा विज्ञावापणि विज्ञापिवा गजः ॥ सुषित्रं चू पयन्नवा सह सा विप्रधव
 प ति। रुसिना वायुरि रुतस्तु विज्ञासि नापिवा। म्भकारा ज्ञायत तस्य यथ वर्तन क जः ॥ वदना याति
 वै कल्योर्ध्वं ली पत्रि मूगता ॥ गमन विज्ञा रुणदापि र्मं रुसु स्या यजायत। तस्य सर्वाणि गमनाणि सूर्यिषा य
 १२५ विषययत्। स्निग्ध गमनस्य वरु वक्ती त नान तलयनी। चन्दना गी नमधूर्कं दी न वृक्षत्वं सिलान्। गी वालन
 लमूलानि कतर्का दी व नालि वा मं जिह्वा सात्रिवा लाधुं गन पृथ्वी चदापयत्। दी नयूक ४ य लयायं सद्य
 ५ गाल्ये व दन्तिनः ॥ तिष्ठतश्च लता वापि स्तु न पूर्वै य कल्ययत्। सुनिखानं दृष्टं ह्यं यथा रुसि य मा गतः ॥ ज
 लकं सद्य ता र्थं गं गी ता न्या लयनानि वा। कृया दी दी नतः ॥ स्वर्दका नयत् विगता म्भः ॥ स्वदादनं तनं च वपान

मस्य विधीयता सरिषाण कर्त्रा निर्गुणं गीतं यथानृपा विधीय विधिवत्सु र्वां रुक्म गता यदा यथाय
 दावधमवा प्रातिनीक्षः सुगिय न स्वधेः ॥ गमुर्विक्कि यत वास्य गगन मय गमयदा स गजः कि न व व ॥ रुक्म
 रुक्म निनि र्वाते ॥ तस्य विक्कि न गगन स्य निरुह मिह रुषजं ॥ निक्कि न विक्कि स्या ॥ ॥ विद्युत्त लक्ष्मी त्व
 न्यस्य व द्या मय न पूर्व ॥ रुम गम स्य वना च वनि नूद य निवर्त नात् ॥ यजवा चैव सह सा गग विद्यु च न र
 वत् ॥ गता ग कति मार्ग ॥ ग विक्क ल निव द्मर्मा ॥ ग यथ पूर्व दना वास्य गग र्क र ग जायता सरिषा स च न
 तस्य का न यत्स ग र्ग रुष क ॥ य ल य स्य क र्क वा ॥ सरिष्य क त्व यं रुवत् ॥ की न व क त्व व ग्ये व क द ॥
 त्य ल स र्क व ॥ सम र्गो गे मु य य सा ॥ कृपि ॥ य ल य यत् ॥ गता गग मु क र्क वा ना गी स्व दाय थ विधि ॥
 सि न स्य य न ॥ कार्य ॥ य ल य स्य य म र्क म ॥ अथ ॥ गधूम चूर्ण नि माष चूर्ण रु व ग व ॥ य व चूर्ण नि वा क
 य व रु ल न य ल य यत् ॥ ल ल स्व दाय थ दि ॥ क र्क वा ॥ सु ख रु रु ना ॥ तिल स र्व य चूर्ण नि कि ष्य चूर्ण
 गथे व वा द धि न ल दृ र्ग व व गि णु मा न व सा ग था ॥ अ न न सि न गग स्य क क ना थ य ल य नी ॥ सरिष ॥ की न य
 पान स्या न स्य वा व सि क र्म गी ॥ सा ध य दि चूर्ण गग म द्या याम स्य द कि न ॥ विद्युत्त लक्ष्मी या कं य थ व द

नृपूवर्गशकमगहिनधसम्यकसनिदानं चिकित्सी ॥ ॥ निविद्युतचिकित्सा ॥ ॥ दूधवागलू
 निमयायुलस्कानंयकीलितं ॥ तदेकं सकृत्ति न ध्याये ॥ समार्यं स्कननिध्यातू ॥ ॥ रुवतिवायुल्लोक ॥ ॥
 रिषकैर्लूनयधकमगदर्वविधिमनसृत्यकनातियन्धिकित्सां ॥ रुवति सतर्तनृयलपूशानियतम
 ति नृपनाशरुस्तिवेय ॥ ॥ निधीयालकाखामहामनियुलीतगजायुर्वदमहायवचनदूधवा
 गस्कानद्वितीयगववागनामसकृत्तितमाध्याय ॥ ॥ ॥ समार्यं दूधवागस्कानं ॥ ॥ धीगऊन्द
 प वदनायाम्बिकासूतायनम ॥ ॥ ॥ धीगुनूवनम ॥ ॥ गुरुमसु ॥ ॥
 सम्वत् ८२८ वैश्व कृषतिवदाववतीनक्षत्रेन्द्रयागधकूकूधगऊचिकित्सासारुलिषीणी जयहृपतीन्द्रमल्लद
 वसनमहायन्त्रवृकनलायादववावसकातकायाववास्तुसविश्वद्वसंयुक्त्यादादिना ॥ गुरुमूयातू ॥ ॥

१२१